नौ रस में रस हास्य

(राजस्थानी हास्य व्यग्य कवितावा को मोटो सग्रै)

रस-महिमा

खटरस भोजन में जियाँ है अमरस रस खास
वैंयाँ हीं नौ-रसाँ में सिरै मोर है हास
सिरै मोर है हास हँसी सव रस में आवै
शात बीर अर करुण रौद्र सैं हसणू चावै
दूजो कोई भी रस नीं ब्यापै नौ रस में
सदा सुहाणू भोजन अमरस ज्यू खटरस में

मेरी दो बात--

दोस्तो ग्रोर दोस्तियो !

ग्राज ग्रापकी सेवा मे मेरी इवताणी की चुणीदा हास्य-व्यग्य' की कवितावा को मोटो सग्रं ग्रापक स्यामन रख'र मन घणूं घणूं ग्रांणद ग्रारयो है। कई दिना स इच्छ या थी क इबताणी की 'मन पसद' ग्रर जग-पसद' सभी कवितावा को सम्मेलन होज्या तो पाठका न कुछ सुभिस्तो हो। 'नो रस मे रस हास्य' ईं इच्छ या को ही लाडलो बेटो है !

हास्य व्यग्य क बारे मे मेरी जो कुछ ध्यारणावा सुरू स ही रही है, व सब ग्रापन बिना फीस बतारयो हू साधारण सी बात सैं जीण को मरम समभारयो हू। ग्राप समभो मैं ग्रापन कठे स हँसारयो हूँ ग्रौर क्यू हँसारयो हू ?

साहित्य-शास्त्रकार हासी का छ भेद बताया। पण मनै मोटा मोटा दो ही भेद दीखं-- एक मन सै हांसणू ग्रौर एक मू स हासणू ! ग्रांमे भी मन ग्रौर मू दोन्या स साग हासी ग्राव वा घणी चोखी, खाली मन स ग्रावै बा चोखी ग्रौर खाली मू सैं ग्रावै वा भूडी। इया ही हासी का ग्रग भी दो होव। एक हासणियू ग्रौर एक *जीपर हासी ग्रावै हास्य कवि ग्रा दो या क बीच की कडी है वो* हासी की सांमगरी ढूढ ढूढ कै हासणिया न गुदगुदाणै को काम

करै। बो जी सामगरी सें आपक मन मे हासी को सचै करै–वा सब सुणणिया अर पढणिया मे बखेर देवै बस बी को इतणू ही रोल है।

जीपर हासी आवै वा कोई भी सामगरी (कारण, काज और स्थिति) हो सकै। पण काज और स्थिति स्यामनै रह्वै और कारण राख स मू ल्हकोयोडो, ल्हक्यो छिप्यो बठ्यो रह्वै क कोई बीन देग नी ले। पण व्यग्य कवि की तीखी– नुकीली आँख ज्यूँ ही बीपै पडै बो खुद सरमाज्या डरज्या या घबराज्या– क्यू क कवि सारै रोला करकै बीको भुक्योडो-ल्हक्योडो मूडो उलट कै सबकै स्यॉमन करदे ऐयां कारण को उलटणू ही विसगति बाजै और ई विसगति मे ही हास्य है। जी हास्य व्यग्य–कवि की आख इयाँ एक्स रे को सो काम नी करक बुरारिया क गूमडा को हँसा-हँसा क ऑपरेशन नी कर सकै, बीन आपकै चसमे का नवर बदलवा लेणा चाये।

हाँसी एक सरीर को व्यायाम ही नही 'योग है' जीसें भगवान का दरसण हुव जो हाँसै सो अमर पद पावै जो रोवै सो जमारो विरया खोवै ! क्यू क हाँसी बस मिनखा जूणी मे ही है और कोई भी जूण मे नही है। रो-रो कर जमारो काटणिया नें भी एक वात समझ लेणी चाये क दुख और सुख सभी परमात्मा का दियोडा है और ब सवनें कर्मां कै अनुसार भोगणा ही पडैगा चाहे रो-रोकर भोगो चाहे हास-हास कर– भोगणा जरूर पडै– तो पीछै हास-हाँस कर ही क्यू नी भोग्या जा' रोकर क्यू ?

एक बात ग्रोर— वैंया तो ग्राज की कवितावा मे 'हास्य-व्यग्य' की जितणी चर्चा हुई, उतणी स्यायद ही कोई दूसर विसै की हुई हो क्यूक ग्रोर ग्रोर रसा कँ कुछ उखड्योडा कवियाँ की— कुछ ग्रालोचका की ग्राख मे हास्य एक खटक्तो काटो है— यो सस्तो जस दिराणवाल्यो है ग्रोर मन्चन्उसाड है या बात दूसरी है क हाँसी कमानै भी ग्रावं। हाँमणू ब्वै भी चाव पण बँ मत मारकँ हाँसै। पण सारो दोस बा कविया ग्रोर ग्रालोचका को भी नी है ईंको एक दूसरो पक्ष भी है। कुछ लोग हाँसी को ग्ररथ खाली मू फाडणू ग्रोर बिना बात ही 'हा हा ही-ही करणू बतायो। मच पै भद्दा भूडा चुटकला सुणांकर ही साहित्य कै इतिहास मे ग्रापको नाम जबरजस्ती धरपण की इच्छा या लेकर—साहित्य की परिभासा तक भी नी जाणणिया घुस पठिया भी हास्य ग्रोर व्यग्य न बदनाम करण की कम कासीस नी करी बल्कि सही बात या है क ये घुस पैठिया भांड मदारी ग्रोर हास्य-व्यग्य कवि को फरक ही मिटा दियो। मेरो निस्च मतो है क मन मे ईरस्या की ग्राग, छल-कपट, फरेब, धाखाधडी ग्रर तिकडमबाजी जिया की भावना राखणिया न मन स हास सक है ग्रोर न हँसा सकै है। बै तो ग्रापकै ही भीतर की ग्राग म धधक बो कर चाहे लोग-दिखाऊ कितणू ही चौडो मूडो फाडता हा।

एक बात ई सग्रै कै बारे मे भी—

साहित्य-शास्त्री काव्य मे नौ रस बतावै पण मन तो सभी रसाँ मे हास्य-रस ही दीखँ मैं सबी नौवू रसा मे कवितावा लिखी पण रस निसपत्ती हास्य मे ही हुई जीस। मेरी या घ्यारणा ग्रोर भी

पक्की हुई क रस चाहे जितणा होवो सबमे सिरै मौर हास्य रस ही है मेरी मौतमी कवितावा दूसरा रसा मे है मगर बामे भी अगी रस हास्य ही है- जियां—

सयोग सिणगार—	बीनणी बोट देण चाली, परदेसा स बालम आया, और प्रमालाप इत्यादि
विछोह सिणगार—	विरहा की आग, थारी याद सतावै, इब तो आज्या परदेसी पावणा इत्यादि
करुण रस—	इबकालै तो वो मरगो रे
वीर रस—	गोवापाछो भारत आयो, भारत-पाक जुद्ध इत्यादि
रौद्र रस—	खाद्य इसपकटर चुनावभासण इत्यादि
भयानक रस—	बीनणी नै माकड खागो अस्टग्रह स्मगलिंग की दो घडियां, मैं भी जार चाद पै आयो इत्यादि
अदभुत रस—	बीनणी ऊघाडै मूडै आई रे, बीनणी मे आज भूतणी आई रे राणी आई, राणी आई, चाद सै चिट्ठी इत्यादि

बीभत्स रस—	जर्दे को पान, (उत्तराध)
	तकदीरा का भटका (पूर्वार्द्ध)
	इत्यादि
शात रस—	चाय समोसा, हितोपदेस इत्यादि

मा सबी कविताबा के आधार पर आप ई बात नै स्वीकार करोगा क वास्तव मे रस तो हास्य ही है।

ई सग्र की घणी घणी पोथियाँ छपण सैं पल्या ही भौत पैल्या ही जो साथी सगलिया अर महानुभाव म्हेरबान अगाऊ ही खरीद कर ई कै छपण मे सहयोग कर्यो बनाका एहसान कदे भी नी भूल सकू। जद्दपि ई क छपणे मे भौत भौत देरी होगी पण ब सभी धीरज राग्यो, मैं देरी के खातर छमा मागतो हुयो बाको भौत भौत आभार मानू अर धन्यवाद द्यू।

जीवो और हाँसो
हाँसो और जीवो
जीवो और जीवो
हासो और हासो

—विमलेश
शाति कुटीर,
झुझुनू

वसत पचमी
२०२६



के—कठे ?

*

उद्घाटन मिनिस्टर

भाई लोगो !
मैं जद सैं हू बण्यो मिनिस्टर
श्राफत होगी !
सोचै तो थो, ई चुनाव में जीत मजे सै दिन काढू गा।
पड्यो पड्यो चटणी चाटूंगा
पण सगळिया कोन्या मान्या
बोल्या "म्हें तो थानै ही मतरी बणास्य।
मैं नटणें में कस्सर राखी कोनी थोड़ी
पण वै भी जिद नैं नहिं छोडी
मनैं मिनिस्टर करकै ही वै म्हाँटा मान्यौ !
श्राफत होगी !
क्यूंक दूसरै ही दिन सैं के झंझट होगो (क)
सौ सौ के दो दो सौ चिट्ठ्याँ—
नित-हमेस श्रावण नै लागी
जाँका ब्योरा सिक्रेटरी में सुणतो सुणतो—
मैं उखताग्यो !
'फलाँ जगाँ कालेज बणी है'
'चोखो भाया बडी बात है, टाबर टोकर घणां पढैंगा

नही नहीं थे मेरो मतबल गमज्या कोनी
गैको उद्घाटन पैल्या थारे ही कर-कमलां से होसी
'हूं' होगो जरतो ।
तो आगे की चिठ्यां भी मैं ऐं या गी ही है
भोजासर में म्होवमरी में, इड्याळी, कूमाग, भड्द
किसनें की ढाणी'र हमीरी, वास, पचेरी
गुढै गौडजी में माने ही लुत्या दवाई खाना सारे
न भी थान उद्घाटन करवानै ही तो बुलवाया है
मावस नै, सुद चौथ और नौमी, चोदस नें ।
आनें तो ऐंया ही बया ही बहैया ही नट ज्यावांगा
पण थे भू गरवास बसावणिया नेताजी
गळ पड रह्या है पिछलै नो दस म्हीना सें
नाका कोई सवा दोयसौ पोसकाट'र लिफाफा आगा
अर पिछलै ग्यारा दिन में ही
चौदा पन्द्रा तार खुडकगा है अरजंटी ।
बै कोई यू सत विनोबा भावेजी की जलम तिथी पै
छोरा सें स्रमदान करावू होर्या है
आप कै गांव में ।
बैं भी चावै है
धरती पै पैली कस्सी थे ही मारो
बाकी ठीचो बिगड न ज्यावै
इस्यो सुधारो ।
मैं नटतो नटतो बी खातर हामळ भरली

बस, हामळ भरणे की देरी थी
झटपट टैलीफून कर्या दस बीस जगाँ तो
श्रौर तार खुडकाया कोई—
चौसठ-पेंसठ-छयासठ गावाँ मे स्हैरा में
जो जो रस्तै मे आवै था !
श्रौर सैंकडी टाइम टेबिल—
दूर-कायक्रम का वरण वरण कर टाइप होग्या !
श्रौर तीसरै ही दिन—
इसपेसल सलून सजधज कर चाली
फूला की माळा'र तिरगो लगा स्यामनै
छक् छक् छक् छक् फक् फक् फक् फक् करती हाली !
मेरै सागै एक सिकटरी, च्यार रसोया–चौदा चाकर
एक वैद श्रर तीन डाकदर, बारा ठाकर
छै स्टेनोग्राफर श्रर दस फोटोग्राफर !
तार फून सै पेल्या सै ही खुडक्योडा था
बाँच बाँच वै तार वठीनै
ए सी सी का श्रौर पुलिस का
दो सौ सैं ज्यादा जुवान आगै पुगा'र
जकी जैया भी विद बैठी—
ले जीप—टरक लोरी'र कार
मगळा हाकिम श्रर ऐलकार
पूंच्या मौके पै ठेठ जार !

ग्रीर जा'र व ग्रास पास म— गावाँ म फैलादी चरचा
बाज्या भोपू वटग्या परचा
हज्जाराँ ही नर नारी देसण उलट्याया
लगा लगा कर घर का खरचा ।

छापा छपग्या—
ठेसन पै ही मन्त्री जी को नताजी सम्मान करैगा ।
दो छोरा वानै फूलाँ का हार प्हराकै
खड्या खड्या गुणगान करैगा ।
पाछै डेरै मे ग्राकरकै मन्त्री जी जलपान करैगा ।
थोडोसो, बस तीन-च्यार घंटा को ही ग्राराम करैगा ।
दोन्यू वखत मिलैगा जद बै—
सज्या मी स्रमदान करैगा ।

म्हारै भी तावळ हे री थी
पूची ठेसन पर जद वोगी
भीड हजाराँ की ही होगी
धीरै धीरै बी सलून सै—
तासाँ कै बावन पत्ताँ सी—
बावन-मुरती नीचै उतरी ।
ग्रीर तुरप को इक्को सो मैं ग्रागै ग्राग
पान चवातो, थोडो थोडो सो सरमातो
थोडो थोडो सो मुसकातो

कानी कानी आख फिरातो
जणाँ जणाँ सै हाथ मिलातो
हाँस-हाँस कै भात भात का पोज बणातो
बीसाँ ही फोटू उतरातो मैं पूंच्यो डेरै में जाकै !

मज्या होगी जणा फिल्ड में माची कच्ची
कोई को टीगर गुमगो तो—
कोई की यू फिसगी वच्ची
हाथ पगाँ सै लात फडाका धामा मुक्की, चिंडी पापडो
अर मू डै सै ले भडभच्ची—
उचक उचक कर उछळ उछळ व र—
मनै देखर्‌या था नर नारी !

इतणाँ में ही नेताजी मेरै हाथाँ में—
चाँदी को कसियो देकर कै ऐ याँ बोल्या—
भैणो और भाइयो इब ये मन्त्रीजी श्रमदान करै है !
सुणताही मैं सावदान हो
कसियं सै धरती की थोडी माटी कुचरी
मैं कोई सुन्दर सो तिरछो पोज बणाऊ
अर बनावटी हासी नै होठाँ पै ल्यावू—
जी पैल्याँ ही फोटूग्राफर
ले ले कर वो पोज, रील नै फिरा चुक्या था !

मैं ग्रोज्यू सै फोटूग्राफर वानी एक दूसारो रख्यै
ग्रोर दूसरो पोज बणायो,
ग्रोर तिसरो पोज ग्रायो—
रसियै मैं धरती पै पटक'र जोर लगायो
तो माटी को डगळो सीदो सिर में ग्रायो !
पोज विगडग्यो, पोज विगडग्यो
ऐसा मैं मीनत करकै भी
दो इन्चो माटी भी तो मैं खोद न पायो
पण श्रम पर ढाई घटा को भासण देकै—
मैं डेरै में पाछो ग्रायो !

ग्रोर दूसरै ही दिन सगळै ग्रखवारां में
भाषण छपग्यो, फोटू छपगी !
पण वो पोज विगडग्यो थो सगळै छापा में
सिर में पड्यो धूळ को धोबो ऐसा को ऐसा चिलकै थो
पोज विगडग्यो—पोज विगडग्यो !

भाई लोगो मैं जद सैं हूं वण्यो मिनिस्टर
ग्राफत होगी, (क्यू क)
उद्‌घाटन करण नैं नहीं जावू तो गाव धूळिया देवै
ग्रर जावू तो धूळ पडै मेरै सिर में मेरै ही हाथां
ग्राफत होगी !

बीनणी बोट देण चाली

भाग कमनिस्टां का जाग्या
बीनणी वोट देण चाली

जमानू आयो वोटा को
फिर्यो सिर नानै मोटा को
बुलावा घर घर मे आया
बोट देवा चालो भाया
खाट में बूडा नै घालो
लुगाया नै हद्दर ठारयो
वाय बीमारा की भरल्यो
पवेडी मुरदां नै करल्यो
सासुवा पायेपा जासी
मोटरा में भूवा आसी

नवेली बीनणिया खातर—
लोरियाँ आज्यासी खाली

कठै तो कागरेस स्यारै
कठै जनसघी पूच्यारै

कठै मोट्यार पटार्‌या है
मोट चुपचाप चुकार्‌या है
कठै ल्हुक-छिप कर मार्‌या है
बोनण्या नैं बहकार्‌या है
म्हेरबानी म्हापर कीज्यो
वोट थारो म्हांनैं दीज्यो
कठै कमनिस्ट पुकारैं है
मार भीतरली मारैं है

इया वैं कानी कानी सैं
घरा में श्रा अगरी वाली

बीनणी नटगी थी पैल्यां
न जाऊंगी मैं बा गैल्या
बटण चेपूंगी कोटा कै
बास्ते लागी बोटा कै
छुटैं जद पिण्ड न रोटा सैं
मनैं के मतबल बोटा सैं
बात यूं कहकर श्रटगी थी
धणी नैं क्लीयर नटगी थी
दवाई सुसरो जद श्राकै
वोट देणूं पडसी जाकै

जणा चू भी कोनो बोली
बठे सें दबी-दबी हाली

स्यार न्हा-धोकर कै होई
टाग कर अ तर की फोई
बाधकर टीसू की धोती
माग में पूर लिया मोती
पैर पीळा-पीळा गैणा
लगायो काजळ रतनैणा
क पोडर मूडै पै लेप्यो
लाल टीको माथै चेप्यो
इया बा सतरगी होई
क जाणै इ दर-अनस कोई

भूलगी थी पाछी आई
लगाणी होंठा पै लाली

देखकर दरपण में काया
चाद की सी लागी छाया
बिम्बर कर जो मू पर आया
बाळ बा ओज्यू सें बाया
खोलकर टीसू की धोती
बाधली मुखमल की धोती

पडोसण सैं लेकर माग्यो
भूम्यो ताळ्या को टाग्यो
घडी में चाबी देकर कै
कळाई ऊपर बगकर कै

भूमती कमरै सैं निवळी
हाथ में लेकर रूमाली

रामजी के सुभाव होगो
?लणु ही बाळजोगो
भिरोखै में चप्पल रंगी
साथणा मन्नै के कंगी
जगा जैपुर सैं आया था
चाव करकै वे ल्याया था
न पैरु गी तो सिडज्यासी
इया को मोको कद आसी

बात यू सोच मुडी पाछी
मोतिया की चप्पल ठाली

रडी कर्मनिस्टा की लारी
'होन' देती देती हारी
खड्यो एजेन्ट वार घालै
बीनणी जे कट्टैया चालै

मसुरजी कर धाप्या रोळा
ग्रोळमा दिया जेठ बोळा
खचाखच भरगी लोरी है
देर ग्रा क्यांमे होरी है
कई एजेन्ट फिरै-डोलै
बीनणी ग्राख नही खोलै

बोट को टेम निकळ ज्यासी
जणा होसी सै सै काली

जणा सै लाम मचाई यू
उठळ सासू वहूवाई यू
टाटिया कं कै लडरया है
क कुणसा ग्रोळा पडरया है
बीनणी पैर ग्रोड जासी
इया वा ग्राती सी ग्रामी
लाम जीकै है वै जावो
न म्हानै ग्राकर उखतावो
बीनणी उपर सै बोली
न मैं वाकी बादी-गोली

कुहादयो मैं कोनी ग्राऊ
पसीनै में होगी ग्राली ●

मारवाड सोवयां मे आगे ।

मारवाड सगळी बातां में रूस अमेरीका सूं आगै

मारवाड थोळा देख्या है रूस और अमरिका सरीखा
लाखों बीरवानियां में ही देखो भिड़तो ल्यो अमरीका
वै सगळी चोभोके रावै, ये सगळी रातां फै बोवै
ध रातू जागै तो ये दिन में भी सूटी ताण'र सोवै
धांरी जाडी के आगै बांका अंगरेजी गाणा हारै
नणद-भुजायां राड करै तो बांका से झगड़ा भरा मारै
रूस और अमरिका विच्यारा के के होड करै मां सागै
मारवाड सगळी बातां में ०–

माथै पै टिकडो'र चूप दांतां में अर कानां में वाळी
कांटै कै ऊपर भी प्हैरै, ये नाकां में नथ नखराळी
आंको निरख वोरलो, वांको सरमाज्या फूलां को जूडो
डडा-मडा हाथ बनाका आका पै लाखा को चूडो
घूमरण नै तो वै भी जावै, घूमरण नै तो ये भी जावै
परण वै हाथ मिलायां चालै, आंनै सागो नही सुहावै
कोई दिखज्या, काड घूघटो, मार फलडको आगै भागै
मारवाड सगळी बाता मे–०

वै जद पेंट पैरकै निकळै, आंकी निकळै छापल धोती
बांकी सादी, तो आकी पै भिरमिरिया तारा अर मोती
ऊपर सैं कागगी, वांकडो, जरी-कसीदो पीळो गोटो
वै नळ कै नीचै न्हावै ये लोटै सें ले ले खळवोटो
वै खोलै कम्मर पट्टा तो ये खोलै बिसपत का तागा
वै वैर्‌या पै तोप चलादे, ये चुस्या पै फीकै पागा
वै उजड्ड रगरूट लखावै आकी कोमलता कै आगै
मारवाड सगळी बाता में०–

वै के जाणें कैयां सग्गै सोयां नें सीठणा दिया जा
अोर मिलाई का रिपिया छोटी सग्गी सें किया लियाजा
व के जाणें के होवै है उजरण-उदापरण तीसू तेरी
के जाणें आसा भागोती, के जाणें तुळसां की फेरी

बैके जाएं रिपिया देकै, स्सी सासू कियां मनावै
देवर नैं घेवर क्यू देवैं सूत्यो-सुमरो कियां जगावै
ये आंकै ही बसका, बांपा चिरत करणिया कोन्या जागैं
मारवाड सगळी बाता मे–०

बैं के जाएं भात–चूनडी, जळवा छूछक गोर-बिंधोरो
के जाएं खासी को टूडर, के जाएं पितरा को डोरो
के जाएं खाणी पलोथणी, बैं होटल मे जाएं चरणू
के जाएं व वरत चोथ रा, के जाएं वास्योडो करणू
बै राली व्हाईंज्याजा मे वठ बैठ उड ऊँची-ऊँची
घणी फिर्याई, तोभी इवतक चादसुरज तक कोन्या पूची
आंकै धरती पै बैठ्या ही तारा ओर रेवती लागैं
मारवाड सगळी बाता मे–०



बिरमाजी को बाद

ई दुनिया की
बढती आबादी कै बारै मे विचार करबा के ताई
बिरमा, विसणु, महेस एक दिन सभा बुलाई
मकरजी बी दिन के बेरो के पी आया क
आता ही बार्तां में सिवजी, बिरमा नै गाळी ले ऊठ्या
और गाळ भी एक नही सौ गडा काढी
भिडता ही बोल्या—'तन्नै' जुलमी नै जाणू घणै दिना से
ये तेरा ही बोयोडा फाळा है म्हानै के कहट्यो है।
इब ये तेरा पूत न तेरै बस में आवै
गीगा जण-जण गोठ करावै
जद त् म्हारी मदद लेण नै सभा बुलावै
लाग्यो तेरो डोळ देख ल्यूंगा तन्नै भी
मैं जाणू कयू घर मे गोदिम करा मानज्यासी विरमाजी
पण विरमाजी क्याका मानै।
आज्या इब तू मार पावचा रच दुनिया नै कर मनमानी
मेरो भी खारो सुभाव है, एक नही छोडूंगा जीतो
आज देख लेमी आ दुनियाँ क
बिरमाजी अर सकरजी दोन्या में कैको जोर घणू है

इतणी गद्दार गढ्या होयगा
भाग्या भाग्या गया हिंवाळै री चोटी पै
भेंटो सभा, निसणू भी भाग्या
निरमाजी हासता हागता मूंडो फेर्‌यो
पण सिवजी पलास प्राट सूं ई दुनियां पै वज्जर गेर्‌यो
थावै थानी मुरघा जणा धरती धर्राई
ईंगं गागी मुर्‌या, वाढ नदिया मे मार्ई
मुडकर देन्यो जणा प्लेग भर हैजो फैल्या
माम देन्यो, काळ पड्‌यो भर लोग मचादी नाई नाई
ऊपर देल्यो विरसा भाई
झुककर देन्यो भाग लगाई
एवर तो भचरज मे पडगा विरमाजी पा लोग लुगाई

पण सवरजी के देख्यो क
ऐ या कै विकराळ काळ मे भी दुनियाँ योन्या डररो है
उतणी ही वढती जारी है
जितणी दिन पर दिन मररी है
ग्यारै बारै कै सागै ही-
गाजै वाजै सं होर्‌या है
न्हाण पावची, जळवा-छूछक घर घर माई
दूर खड्या कूणं मे विरमाजी हासै है
सिवजी ज्यूंही देख्या वानें, मुरछित होग्या

सिवजी मुरछित होग्या (तो इब ल्यो)
सिर पे धर्‌यां छावडी, मंदी मँडा, घूघटो काढ्‌या
गमगमाट करती कुरडी पै जच्चा आई
पड्‌यो सुणाई-
जच्चा नै पीळो रँगवाद्यो, नागपरी सतरा मँगाद्यो
ग्रौर जचा नै लाडू भावै
बेर सकरगदी भी भावै, दाडू भावै
ब्रेरो कोनी के के भावै !
जद ग्रा गीता का रोळा ग्र वर में गूज्या (तो)
राम नाम सत्त है सत्त बोल्या ही गत है
हरक्कहो जी हरक्कहो जी का रोळा भी फीका पडग्या
गूंद सूठ ग्रजवांण क जाका--
देख ढे र का ढे र लाडुवा का ग्रणगिणती
मुरदा का रास का पिड बट्टै मे बैगा
इण्यो गिण्यो एकाव नेवगी लिया उस्तरो
कोई नै भद्दर करणै कै खातर चाल्यो (तो)
ग्रोढ ग्रोढ ग्रोडणा सिरा पै, दाया का ग्रणगिणत ढूलरा
चाल पड्‌या गीगा जणांण नै
बूडै नै बाळकै घरा भी पूग्या कोनी
जी पैली ल्होडियै डावडै की स्याणी भू
माचै पै दो जुडुवा टावर लिया पडी थी
पाणीवाडै गया जिकानै ही दिखाणनै-

एक नेवगरण दूव लिया घर की देळी पँ त्यार खडी थी
एक कुहावत सुरणनें मे आई थी पेंल्या
बाबो मरयो टीमली जाई
रह्या तीन का तीन बिसाई
परण इब आ भी झूठी होगी
क्यूक बूडळो मरयो एकलो और टीमला दो जाया है
बिरमाजी की ऐंया की करतूत देखकें
मूत्योडॅ सिवजी नें ओज्यू सुरता आई
आस मसळकें खडया होयगा
झाळ मारकें एक हाथ मे डमरू ठायो
और दूसरें मे लो की तिरसूळ सम्हाळी
तुरत घूघरा बाध पघाकें नाचरण लाग्या
और तीसरी आख खोल कें आग बखेरी

डमरू की डमडम मे, घुंघरू की धमधम सें
बिजळी को चमचम सें, मिलगट की छमछम सें
गूज उठ्यो आकास क हरहर बम बम बम सें
टूट टूट कर प्हाड पड्या धड धड धड धम सें
सिवजी के नाच्या सिवजी की माया नाची
नाच नाच आदी दुनिया मे परळै करदी
और तीसरी आख सितम ढाया ऐंया का क
उगळ उगळ कें आग घरणखरी दुनिया भरदी

आदी सै ज्यादा दुनिया में छाई गरदी
जग्ग घणू घोरारम मच्यो
लोग कही सिवजी नाच्यो जद परळै माच्यो
ऐ या क विकराळ काळ मे जीव बचाणा मुसकिल होग्या
जाणै बचावणिया सारा ही देवता गूजकै सोग्या
दीखे थो जाणे इब सोक्यू भसम हुवैगो

पण दखो के पासो पलट्यो
चाणचकै ही ओज्यू वेलग सें बाजी कासी की थाळी
ऐ यां को मारयो टण्णाट उठ्यो अबर मे क
सिवजी कै हाथ सें छूटकै डमरू पडग्यो
डमरू लेवण झुक्या जरासा तो के देख्यो क
घर घर मे हीजडा ओर भँगणा नाचै है
सिवजी वाको नाच देखकै नाच भूलग्या
कुबडै की ढोलक सुणकरकै ताल भूलग्या
जळवा कै पाणी का ज्यू ही छीटा उछळ्या (तो)
रही सही तीसरी आंख भी ठंडी पडगी
इब तो सिवजी सुन्ना होग्या, नरबस होग्या
भाग्या भाग्या बिरमाजी कै कनै आया
पगां पड्या अर बोल्या–
मेरा बाप मनै माफी दे इब तो
मैं तो तेरै से लडकर हूँ हार मानग्यो

में मारण में कस्सर राखी कोनी थोडी
पण इब नें तो हारण रिया वें
न इब मेरी तेरे आगे दाळ गळै है।

इतणे मे बिसणू आ बिरमाजी नें बोल्या–
बिरमाजी म्हाराज, समेटो थारी माया
थारै दोन्या क झगडै में, मैं गरीब झूठ्याणी फँसगा
मैं इतणै लोगा के खातर कपडो नाज कठे से ल्याऊ
राई राई जघा भौम पै रुकी पडी है
मैं इब बानें कठे बठाऊ ?
मेरो कोप हुयो जावे है दिन दिन खाली
और बठीनें, दुनिया में दिन दिन बढती जारी कगाली
लाख मिनख अदभूखा सोवै, कोडा ही कपडै नें रोवै
रो-रोकर आसू पीरया है, नक्टा हो होकर जीरया है
ऐया को ही साग रियो जे थोडै बरसा (तो)
मेरै सं तो ओ रासो दोरो ही निभ्भै

ऐंया की कितणी ही वातां
सिवजी, विसणू जी विरमाजी नें कह घाप्या
पण चीकणें घडै विरमा के एक न लागी
विरमाजी सो वादी ठठ न देख्यो कोई
वीकी सी करडूठ नही देखी जा जग में।

अम्बर मे देखो सिवजी विसणू जी दोन्यू—
हाथ जोडकर विनती म्हारं सें कररया है
बिरमाजी मैं ज्यादा म्हारं सें डररया है
बै कहरया है—
म्हारं मैं तो बिरमाजी कोनी समझै, थेही समझावो
म्हा दोन्या की लाज बचावो, बिरमाजी को बाद छुटावो
बार बार मे कासी की थाळी सें बेलण मना भिडावो ।
बिरमाजी को बाद छुटावो
बिरमाजी को बाद छुटावो



गरमी की दोपारी

कोई कहरयो रामारी है, कोई कहरयो प्रेमारी है
कोई कहरयो म्हामारी है, या गरमी की दोपारी है

दो म्हीना बिरखा, और च्यार म्हीना जाडॅ की पोटी है
पण एक बरस कै छै म्हीना म गरमी आज्या ओटी है
फागण की होळी पै आकै, सावण की तीज्यां जावै है
बीच मे जेठ की लुवा, आपका न्यारा ल्हैन दिखावै है
वांका फटकारा डटै नही, दोपारी काटी कटै नही
तावडी तावडी तो दुकान पै धेलो पीसो बँटै नही
जद च्यार-पाच छै सात मिल'र दुग्गी पै इक्को मेलै है
कोई 'ट्वटीनाइन' कोई बेगम वा बारा खेलै है
ऐ या दोपारी दोपारी, बेकारी ही रुजगारी है
या गरमी की दोपारी है

घी हाळो घी के पीपलिया नै लगा म्हिाराणे ऊंगै है
आगळिया को चिकणाम, घुघरिया दो चाट, दो मूंगै है

भट्ठी के स्हारै चिकणू सो काळो मो पूर बिछाकर कै
गीडुयो लगाकर यूं सूत्यो है हलवाई तरणावर कै
मूडै पै बैठी माख्या नै, माख्यां का चोर पकड मारै
माथाऊं बो तो पड्यो पड्यो दिन धाडै खर्राटा स्हारै
ठोडी सैं लेकर मूंडी तक चालै काळा काळा पसेव
जागै विरत्ता मे फाट्यो है लीर्यो पोत्यो मैल को लेव
धोती की ढीली लांग, लाग की कूट कडाई में मोदी
हो पडी चासनी चाटै है, पण बीनै तो कोन्या मोदी
बिरली दुकान मे बडकै म्हांटी दिल कुसाल गटकारी है
या गरमी की दोपारी है
पाटै पै मोदो मेल भोड, म्हाटो पनवाडी सूत्यो है
देखो सोणै सोणं मे ही कैया को जापो ऊत्यो है
हाथां मे चूनै की डाडी पग टोकरिया पै पडगा है
छाती पै एक सरोतो है, मगर दरपण कै अडगा है
पसवाडो लेता ही कत्थै चूनै का लोटा गुडगा है
वै पनवाडी कै मूडै पै ही आडा-टेडा पडगा है
बावळियो कनपट कत्थै मे, देणू चूनै में लिपगो है
यो नाक सुपारी खार्यो है माथै कै जर्दो चिपगो है
गगा-जमना सी चालै कत्थै चूनै की दो धारी है
या गरमी की दोपारी है

वीनणी ऊघाड़ै मूंडै ग्राई रे

«याग चढ्या था वी दिन मैं ही जाना मुगनै मैं श्रागी थी
वीन पटयोडो थो' र वीनणी फैसन मैं दिल्ली जागी थी
'खुल्लै मू डै फेरा होसी', यू दो छोर्या ग्रनळारी थी
मुण मुगकै राजी होरी थी, पडौसिग्णा या ही चारी थी
मोचै री वहैया-जर्यां जे वग्ले गम मुणाई रे
तो होज्यावै ई घर की भी हळकाई रे
वीनणी ऊघाड़ै मू डै ग्राई रे

धक् धक् काळजो वीनकी मा को नाच चुक्यो दो राता
ग्रौर तीसरै दिन सज्या ही सुण बरात ग्राणै की वाता
टती तुगाया भेळी होगी, टूटण लागी घर की छाता
मोटर को घर्राट सुणाई पड्यो, भदावा गाता गाता
देग्यो मोटर थमता ही बस भाज्यो ग्रायो नाई रे
मैं मैं पैली या ही दयी बधाई रे
वीनणी ऊघाड़ै मू डै ग्राई रे

वीनणती न देख उघाड़ै मू डै, सैंकी ग्रक्कल खोगी
खिजकै होगी टूँट, वीन की मा चौवारै मे जा सोगी
घर की जीमण पटक ग्रारतै की थाळी नै, सुन्नी होगी

न्यूतै कै मिस भाज नेवगरा, घर घर मे आ पतिया पोगी
'साची कू हू, भूठ कहू तो मन्नै राम-दुहाई रे
जाकर देखो, मै ना वात वरगाई रे
बीनरणी ऊघाडै मूडै आई रे

चळनी रोटी छोट तुवै पै, देखरणनै लुगाया भाजी
भटपट गुदडो छोड, कामडी ठाकै चाली बूडी माजी
घडा-मू रिया छोड कुवै पै, पटक बगी परिणहार्‌या भाजी
मदर में से म्हत भाज्यो, मंजत मे से भाज्यो काजी
छोड वडाई - कू चा भाज्यो आयो हलवाई रे
आकर घर मे रामारोळ मचाई रे
बीनरणी ऊघाडै मूडै आई रे

खबर सुरणावा थूक मुठ्या मे, कालिज को हलकारो आयो
सुरणता ही प्रिंसीपल उछळ्यो कालिज मे लोटिस निकळायो
'सुरणा गाव को एक आदमी खुल्लै मूडै ब्याकर ल्यायो
आदै दिन की छुट्टी है, सै 'कपश्रीली' देखरण जायो
घटी की टन् कै सागै छोरा घुडदोड मचाई रे
सा भीड भाजकै धरा बीनकै आई रे
बीनरणी ऊघाडै मूडै आई रे

बूडी दादी ई घर मे ऐया का खटका देख बिचरगी
नई बीनरणी बीका ताना सुरण सुरण डरगी मरमां मरगी
बोली, म्हे तो घरणी बीनण्या देखी परण तू तो हद करगी

आता आता ही तेरी तो सरम ल्हाज सागी निस्सरगी
तेरी ही मावड तन कुगमी फंगन म जाई रे
ऐया वीनें मो गो वात सुणाई रे
बीनणी ऊघाड मू डै आई रे

बनड की मा मूदै माथै बाळ बसेर्या खिजी पडी है
कोप-भुवन की वणी बेनई नणा म लागरी झडी है
ठाकुरजी का दरसण करवा, बारूँयँ पै भीड खडी है
पण मदर-म्हताणी रूमी आगळ-बाकळ हुयी पडी है
रो-रोकर कहरी, 'जी घर की कदे गाजती गाई रे
करदी रामारी बी घर की हळराई रे
बीनणी ऊघाडै मू डै आई रे

नया बाट

ल्होडियो नयोडो पीसो तो गेकडिया को माथो खागो
इव करो नयोडै बाटां सैं बैठ्या बैठ्या सैं सिर फोडो

यो इस्यो तोल अब चाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

कोई का बाट घस्योडा हो, कोई का बाट पुराणा हो
कोई की डाडी बाकी हो, कोई का चडरया काणा हो
कोई तोळा में तुलर्या हो, कोई अँगरेजी सेरां मे
कोई रतला मे, पौंडां में तो कोई पाँ-पा सेरा मे

कोई का कच्चा पक्का हो
कोई का ढीगा टक्का हो

सरकार कर्या इकसार सबीनें देकर यो अनमोल चास
मत छोड पुराणा आप आपका बाट नयोडा ढाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

टणनें भूलो मण नै भूलो, बस, टण मण भाडा बाजैगा
के छाट पडैगी टैणा पै टणमण, जद बादळ गाजैगा
रत्ती मासा तोळा छटाँक नैं छोड रतल की कतल करो
अर मिलीग्राम सैं ले क्विटल तक नयो तोल वापरो खगे

यू छोड पुराणें बाटाँ नें
अर पटक घस्योडी साटाँ नें
दस बरस दो बरस कै भीतर ही नया बाट बदळाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

यो ग्राम बण्यो सग्राम जीव को तोल याद कैयाँ रहसी
कीलो, हैक्टो, डैका, डैसी, डैका देसी बैका देसी
जो डेड सेर पक्को खावै वो कितणा ग्राम चणा ल्यावै
जद एक छटकी कै सागै ही साठ ग्राम भाज्या आवै
कैया के लोग तुलावैगा
कैया के भाव जचावैगा
कितणा ही झोको मारैगी, डाडी न झुरी दिखा देगी
जद भौत गौर में देखागा, कूजडी बाट नें घाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

पण साची कैंय्या ग्राम तोल को एक फायदो यो होसी
भूदान भला ही मना करो, पण ग्राम-दान घर घर होसी
मूठी में लेकर बीस ग्राम रोजीना मंगता नें देस्या
भूदान करें टुच्चा-मुच्चा म्हे ग्रामदान को फळ लेस्या
कोडीधज नाम कहावांगा
अखबारां मे छपवावांगा
कळजुग का करण कहावांगा

यानै भी मत विनोवा भावे नै चकमू देणू है तो
ये भी यू ग्राम दान करकै थारै मन नै समझाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

या नाप जोख की रीत नयोटी मीटर की अचरज जोगी
जी मैं दर्जी की गजा चाणचक पडी पडी लम्बी होगी
इब भूलो इ च गिरै गज नै अर याद करो मीटर लीटर
कमती बेसी नप ज्यावै तो सागै राखो थर्मामीटर
के तो लेवाळो खोवैगो
के देवाहाळो रोवैगो
पण ताण ताण कै नापैगा कंहैया भी जा'र नपाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

तोलण हाळो सब सावदान ! इब इसी ताखडी चालैगी
जाका पलडा ऊपर होगा नीचै नै डाडी हालैगी
नापण हाळो थे भी सुणल्यो इब जो भी गायक आवैगो
जो के तो खुद गज ल्यावैगो, के हाथा नाप फटावैगो
यो नाप जोख को फदो है
मैं खातर गोरख धदो हे
या म्हाळी आपानै सबनै जद तक मुळजाणी नहीं पडै-
परल्यो वजाग्यिा जद ताणी कोई तोलो, तुलवाल्यो रे
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

इन्टरव्यू

एक दफा मैं ठालो भूलो—
ई दुनिया सैं पिट्यो लुट्योडो
ठालफ में नोकरी छुट्योडो
मन ही मन मे घणू घुट्योडो
गोरमिण्ट नै अरजी भेजी मैं ठालो हू
जीनैं कोई नई नेवगण गाडी मे भूलकै छोडगी—
सज्यो सजायो बो डालो हू
थारै कोई डिपाटमैंट मे—
मन्नै खाली जघा देख जे कठै फसाद्यो
तो मै मोगँद खाकर कू हूँ—
ऐ या का करतब कर ज्याऊँ, माफ करोगा
जो थारै सैं भी मी जुग मे कोनी होया कोनी हावैं

कर मेरो बिसवास एकबर बिना जघा ही जे मळजाद्यो
चोखी न्याऊ मिलै जिसी नोकरी दिवाद्यो
तो थारो ऐसाण जलम भर भूलू कोनी
क्यू ? मैं ठालो हू
ऊनी झाडी स भडकायोडो पालो हू

एक बार चिपणू चावू हू
पीछे तो मे अपणें आप जघा कर ल्यूगा
पीछे तो थे भी म्हनें कोनी काडोगा
क्यू ? और जणा जे छै छै घंटा काम करै हैं
तो मैं मेरी गरज पड्यो दिन भर रगड़ूगा
अर थानें राजी राखूगा
थानें रोज आदमी चाये,
एक बार म्हनें भी राखो, मे ठालो हू
मेरै में जो जो गुण है बैं सै लिख मार्‍या
बस ई सें ज्यादा थानें लिखणू नहिं चावू
थारी मरजी होवै तो हीरै नें राखो
नही कोयला गळी गळी मे घणा पड्या है'
इतणी बाता अरजी में लिख अरजी भेजी
सोचू हू, सै बात वाचकै गोरमिण्ट कै—
कान का कीडा तो सगळा भडगा होसी
और बिना ही जघा चिप्योडा हाकिमडा कै
वाच म्हारली फडद साप सा लडगा होसी
और नोकरी देबा हाळा अफसरिया मै
मुर्दै माथै पग्गा होसी
वेरो कोनी आपसमे व किया किया बनराया होसी
पण चर्चै की बात, पूंचता ही अरजी
फोरण्ट बुलावो इन्टरव्यू को मन आयो।

म रम्पा, राजी होया पण मन में मोरी
तीर म्हारना मनोरो री डोर विचारै पै जा लाग्या
छै म्हीना म तु भरम्म ना मूनानै था
आज रम्पटा म्हागे जाग्यो
करम म्हारनो ये जाग्यो भो गारमिण्ट रा ऊंची जाग्यो
जो हणाम्मियं में भी ट इरन्यू री गर तुनारो माग्यो
झट दरपण रागमियो ल्यायो
मोनगिरी को तेल मगायो
हाथाजोडी कर, मातै मे नाव मॅडाऊँ
छै गज कपडो फडा भू दियो भामस्वामी हाळं पा मैं–
मोदूडँ दरजी पा सूट सिमावण भाग्यो
सज्या मेरी सूट ल्याणनै–
जणा गयो बीकी दुकान पै, तो मैं देख्यो क
सिमी सिमाई त्यार पडी ह
मी सण्णागो, झट बोल्यो रे मर मोदूडा
तू ट्रायल तो लेली होती
म नैं इ टरव्यू मे जाणू जठै बाव जा सकै न थोनी
तू ट्रायल तो लेली होती
तो म्हाटो बोल्यो, ट्रायल तो आड् नेव
म्ह तो भिडता ही दीखै सो–
फाड फूटकै सीम सामकै परै हटा हा
मोदूडो तो मेरै घरका को ही नाम वढायोटो है

मैं बैयाँ मोदूडो कोनी
ओर बापजी, पैर देखल्यो, फिट आवैगी

मोदूड़ै को लक्चर सुणकै थ्यावस आयो
सैं सैं पैली में पैरण न कोट उठायो
पण मैं तो रोजगारया आयो
जद, च्यार जणा नैं बुला व्हवा मे कोट ठैंसायो।
रोतो रोतो बै देखू हू क, खाली दैणं कानी की बा–
आगळिया सै च्यार इ च नीची लटकै है
दरजीडो देरयो तो बो भी सु न्न होगो
बोल्यो ओह्हो जुलम होयगा
बो सागरियँ सिवलीगर हाळो लबळियो छोरो हे ना ?
बो भी एक कोट देगो हो
लाम-धडाकै मे ही देखो, दैणी बा को नाप याद वैको ही रैगो
बो सुसरो लबळियो ही आ कुबद करादी
म्हारी तो ध्यानगी मरादी
तो भी कोई ग्याम बात तो होई कोनी
एक बाह नें आठ इ च भीतरनै मोड्या फिट आज्यासी
आगँ थारी मरजी होवै मो विचारल्यो
सुणकै बींकी वाता, मेरै ऐ या मनमे आई–
जाणं मोद्डै की मू छ पाडल्यू
मू में देद्यू हाड, खींचकै जाड काडल्यू

पग म रिग नं पीर्ते रैंगो
पण मैं इनणू तो बोल्यो 'रे मत्यानासी '
मोम्यो गो तो मोम्यो, ग्रोर म्हगकै दम्यो ग्रा भी नोग्वा
पण टट, इय ग्रो पड्डै पैया
मेरा पहना धुळ्या जाग्या ह
तेरो काळी गाय, काइ नो दे तू पाछो'
सुणता ही मोदूडो थोडो ऊचो होवे
पहवो पकडकै जरडी भीची
वाव थानी को वा न झटकै मैं खीची
ग्रौर म्हारनी तो दोयू ग्राग्यां, रैंगी, मीची की मीची
मूडे पै स फाट वाह दरजीडे कं हाथा मे ग्रागी
जद म्हाडो वोरयो, टावो कुछ कच्चो रैंगो
मैं सोची, ई भोदू सै पीछै सल्टागा, पैल्या इ टरव्यू दे ग्रावा
इया सोचकै चाल पड्यो मैं
वीस पावडा चल्यो गयो जद लैरया सैं भोदूडो बोल्यो-
ग्रजी पैंट तो लेगा होता, ग्रा तो बिलकुल फिट ग्रावैगी
झाळ मारकै जद मैं वावडक मोदूडे कानी देख्यो
तो बो ग्रोज्यू बोरयो कोनी
दस वजता कै सागै गाडी जैपर पूगी
न्हा-धोकर मैं, माँग्योडी सूट मे ग्रकडकै
दो बजता ही–
इ टरव्यू लेणै हाळांकै दफ्तर कै ग्रागै ठै पूग्यो

इ टरव्यू वस इबीइबी दस पाच मिट मे सुरु हुयो थो
दफनर के बारू ये पै कुरसीपै बैठ्यो
जमादार मनमे मुळकै थो
मत्तर-हस्सी कडातूड छोरा की भुगदड भेळी होगी
बानै देख देख हासै थो
नै या सगळा बिरै बिरै का, कोई गोल्डफ्लेक पीर्यो थो
कोई सास उपरला ले लेकर जीर्यो थो
कोई बिना चमी बीडी मूठी मे दाव्या,
माचिस की बिद मे दीखै थो
कोई बीनै देख 'इकानामी' मीखै थो
कोई मेरो माथी कूणे मे चुपकै से चरवर ही खेलै लागा था
ग्रर चरबर की हार-जीत मे —
इ टरव्यू की हार-जीत समझै लागा था
पाच पाच मिटकै ग्रातरै, भीतरनै घटी बाजै ही
एक जणू निकळ्यातो, दूजो भीतर जातो
भीतर जाती वखत जाणियूं
हरख हरख हासतो मुळकतो भीतर जातो
(पण) पाछो ग्राती वखत, सरणसट सोळू खोया
एक मिट भी डटतो कोनी कैवानै बीमें के होई
ऐ या वैं छब्बीस जणानै पार कर्या जद
चाणचकं ही नाम म्हारलो भी-
वाँकै मायं म ग्रायो, मनै बुलायो

मैं भी देख्यादेखी हासतो हो कमरै म कदम बढायो
मुसाफर मैं मैं तीन पावडा चाल्यो होसी
इतणे मे कुरसी पर बैठ्यो बूडळियो भ्याई सी मारी
'क्या हसते हो ?,
मैं सण्णाग्यो, मनमे सोची, मर बैरी, हासणू पाप ह ?
जातो तो मैं थारै जीव-जिग्यासा नै रोतो जाऊ गा
अरै डेड, सूज्यै मू ड का, पाच मिट तो हास लेणदे
पण मैं मू डो, फोड कह्यो ना क्यू भी कीनै
च्यार जणा इ टरव्यू ले था
दो जुवान था, एक बूडियो, एक लुगाई
म भिडता ही जाण गयो थो बूडळियो कुचमाद करैगा
पण मैं सोची, देखी जासी राम भरोसै
ओज्यू देख्यो, देणे कानी को जुवानडो,
खादी की जाकट पैर्या थो
और नाड नै मिट मिट मे ताण्या ने थो
ताण ताण कर नसा गळदरो इसो सुजा राख्यो थो म्हाटो
क छाती सै लेकर सिर ताणी एकमेक थो
बाव कानी को जुवानडो
अचकन और पजामू , पेर्या चुप बैठयो थो
और स्यामन बैंड बूडियै कै स्हारै ही
एक लुगाई जो बैठी थी, बिना बात ही बा हासै थी
पण जो बूडळियो मेरै ऊपर गरजै थो

वी मा नैं कोनी बरजै थो
मे सै पैली मेरै ऊपर निजर पडी एं चाताएँ की
मन्नै पूछ्यो आपको नाम ? वाप को नाम ? गाव को नाम ?
में मुन्नू सो होगो, मन मे वात विचारी
देखो आपा खाता पीता कैया कै मोथा सै भिडगा
जाणै क्ठै धरमसाळा मे कमरो माँगणनै आयो हू
ओ भी कोई है सुवाल–
आपको नाम, वाप को नाम, गाव को नाम ?
पण मैं हिम्मत करकै सीदो ही वोल्यो, सर
अरजी मे सै लिख्या पड्या है, एक वार वाच्या तो होता
मुणै विना ही ओ जुवाव, वावै कानी अचकनियू उछळ्यो
जो इब ताणी सही सलामत चुप वैठ्यो थो
"क् क् क् भा भा भाई "
वो कै पूछ्यो मनै सुण्यो ही कोनी पण मैं–
वडी मुसक्ला सै हासी नै डाटी राखी
मोची ओ तो सारै को मारो ही स्हाबो डूब्योडो ह
में वोलू जीकै पैल्या ही विचलोडी वेमाता वोली–
"थे व्यायोडा हो क कु वारा ?
न्यायोडा हो तो थारै कितणा टावर है
में सोचो, रै मर मरज्याणी !
तू तो आ दोन्या सै भी क्यू चटनी निकळी
मैं वोल्यो, मैं इन्टरव्यू देवा आयो हू,

देवता एक मै एक था ठाया हीं
कोई यो र डो तो कोई यो मूडी
कोई की तूद पँ हाथी की मूड थी
कोई की चप्पणियू सी यी सू टी
औरां की बात बनावू के आपनैं
एक गणेस ही खोलकै घू डी
पांच परात समोसा की खाय कै
पी गयो चाय की कू डा की कू डी

× × ×

पीपी कै दूध बिना दियो बचपण
मार्या जवानी मे भू ठा लफोसा
यू॑ बिडदापण आय गयो जद
बेटा'र पोता दिखा दिया ठोसा
यो जग तो सुपनू सो बण्यो तेरा
आज - सवेर का भी न भरोसा
चेत रे चेत, तू आज भी चेत रे!
पीले तू चाय'र खाले समोसा



देखो जी क्यामे वड ज्याऊ

'ग्रो छोटो सो है एक जीव, जीमे भैंतर लबचेड भरी
चाये विरमाजी खिजज्यावो, मैं वात कहूगा खरी खरी
खिजकै कीका वो वळद वाद लेसी ? जद म्हारै बकरी है
तो स्याणी, वी विरमाजी की भी बुद्दी होरी चकरी ह
छोटो सो जी, वो जीमें भी लावद्या लगादी हज्जारा
मन मे आवै है, आपा दो'यू मिल विरमाजी नै मारा
म्हाटो वणार इब परै हट्यो, के विगड्यो वी विरमाजीको
इब भुगतू तो वस में भुगतू, बोलो के करल्या पाजी को ?
मोचू तो हू, वीनै पछाड, दो घू मा घू'र अकड ज्याऊ
पण पाछै क्यामें बड ज्याऊ ?

मेरो मतबल समजी क नही, कू हू आ कचन सी काया
यू ही पिस पिस मरज्यासी के, दुनिया मे आ के सुख पाया
उठता ही ठोडी नै रगडू, तो भी रोजीना चिलक्यावै
मैं घणा रगड कै देख लिया, पण नकटा है आही ज्यावै
सो डडा मावण का लगा'र, आ गावलिया सै उखताग्यो
क्यामे के चिट्टो भग्ग्यो है, मो डडा खा'र नही भाग्यो
वम खाणू पीणू सोज्याणू, ये तीन काम चोखा लागै

चोथो रोग़ भी माग्योडो, उम बाकी सैं खोसा लागै
इब दुनिया का लफडा देख र मैं किमैं नीम पर चड ज्याऊ
बोलो जी क्यामे बड ज्याऊ

भइ तल ूण लकडी हळदी की लागत तो मा साची ह
पण श्रो घी टेवलियो बाजै, ई की वाता त् बाची ह
ई मैं गोडा गळज्यावै है, ई मै गन्दिो होज्यावै
त ने कितणू ही समझाल्यो, पण तेरै तो को या भावै
माद्याऊ तू तो रोजीना ई मे ही चूर्‌यो चूर-चूर-
खालेवै, टिक्कण देमी के, ई घर मेरा कठै पूर ?

× × ×

तू कै तो कूवो फेर करू कै तो खाडै मे पड ज्याऊ
इब बोल क क्यामे बड ज्याऊ

मैं करघा समाई बैठ्यो हू, पीछै भी क्यू म नै स्यारै
रैबादे पोडर श्रीम लिपस्टिक, मती मरचोडा नै मारै
रवादे साडी जार्जेट की, घर को श्रागो देरयाकर
जद याद जरी को लेंगो गावै, व्याळ्‌हो बागो देरयाकर
'जुलफै वगान' खराब करैगो, तू मिरस्यू को घाल्या कर
नरती पैं पज्या टर गावळी, क्यू तो रस्तै चाल्या कर
ये भायनिया छ छै चुट्टा हाळी मभदार डरो देगी

आँको कस्या में पन आ, ये तन्नै गत्ता स खो देगी
मनै तो आकी सू न मुहावै, कै तो घर सै कढ ज्याऊ
बोलो में क्यामे वड ज्याऊ

"थारी जुबान न गेक नियो म भौत देर सै सुणरी हू
पण मै गम खाया बेठी हू, जाणो हो बेटी कुणरी हू ?
के ब्रिरमाजी थारो खागो ? के पटक्याई लेज्या'र पीर ?
म्हारली भायल्या कदसी थारी चढै पोळ, खाणनै खीर ?
वास्ते लगाओ ई घो कै मैं सूक सूक पीजर होगी
थे चूट्य को चो-चो चेपो, माडी हीजर हीजर होगी
डब खबरदार, मेरै आगै कोई नै कठै वखाण्या तो
मेरी सूदी सी भायलिया नै बुरै भेम सै जाण्या तो
थे क्यू कूवै मे जा'र पडो, मैं ही खाडै मे पड ज्याऊ
बोलो जी क्यामे वड ज्याऊ

ये काम घिरस्ती हाळा भी जे थे लबचेड बनावै था–
तो कियाँ बुढापो भडकायो, क्यान मन्नै परणावै था ?
थारी ठोडी, थारा गावा, पीछै भी म्हापर क्यू भखर्या ?
म्हारला तेल साबण क्रीम पोडर थानै कैया अखर्या ?
में डको वजा वजा कू हू, "मैं मू पै पोडर लेपू गी
होठाँ कै लाली ग्गडू गी, माथै पै बींदी चेपू गी

करल्यो थानें कयू करणू सो , जुलफां बगाल लगाऊ गी
जे इबके कयू भी बोल्या तो, अम्मल खाकर सोज्याऊ गी
बोलो इब मैं के करलेवू ? बावळी कूच सैं भिडज्याऊ
बोलो जो क्यांमे बड ज्याऊ



सवाद

लै भइ सुएले फेमीली-प्लानिंग कै खातर
गोरमिण्ट के-के छपवावै अर समभावै
ठै'रो ठै'रो इबी मेरो चित स्यान नहीं है
मेरो जी सो घबरावै, उबाक सी आवै

के बोली, तन्नै ओज्यू उबाक आरी है
अरै बावळी तो नी होगी मग्वादेगो !
फेमीली प्लानिंग तो बळी-बुझी चूल्है मे
तू मेरा मन पूर-परगा बिक्वा देगी



नई साल को नयो कलैण्डर

मेरो कोई कलकत्तै में रैवाळो भायलो पुराणू
कलकत्तै सैं–
नई साल को नयो कलैन्डर मन्नै भेज्यो
जद मैं बीनैं खोल'र देख्यो
घणू अचबो मन्नैं होयो-
बी फोटू में मैं के देख्यो (क)
सकरजी अर पारबतीजी
आप आप को काम छोडकै
आपस में चोपड खेलै है
चौपड पर कोडी पडरी है
अठस्यारी बाजी लडरी है
काळी पीळी सकरजी कै पांती आई
हरी लाल पारबती जी कै
सैं सैं ज्यादा मजेदार तो यो नक्सो हे (क)
पारबतीजी सकरजी की च्यार म्यार मारकै–
आपकै गोडां कै नीचै घर राखी
और बापडै सकर जी की
तीन इवी तक कच्ची गुडरी

पण मेरा रामडा तोड तो मना उठाये
पछू आगै नै होणं का गायना नही है

कितणू बडिया भाव चित्र है
पारवती नै आवै हांसी
मकरजी का घेट्ट घुटरघा लागी फांसी ।
देखो देखो सारी दुनिया नै मारणियू
एक लुगाई कै हाथा सै मरण हाळो
अण तोडी बाजी खाकर कै-
मूडो छा सो करणै हाळो ।

तो भाई लोगो
म्है तो ई सै एक सार काढ्यो बो सुणल्यो (क)
जद ताणी सकरजी चौपड मे रमरया है
खेलो कूदो नाचो गावो
खावो पीवो मोज उडावो
घर घर मे थाळी खुडकावो गोठ करावो
गीत गुवावो ।
कोई नै भी खिरया कोनी
सक्रजी चौपड खेलै है ।

बीनणी नै माकड खागो

रसोई मे सीदो आगो
बीनणी नै माकड खागो

बीनणी भी मुकलाई थी
मासरै आई आई थी
बाप घर बार सही देख्यो
मगर भरतार नही देख्यो
बोलकै बम बम बम भोळो
भाग को आदपाव गोळो
नेम सै तीन टेम खातो
सदा सोदै मे भरमातो
आज क्यू करडो खेल्यायो
ल्हवोक्र सोक्यू मेल्यायो
मोर सामटकर सोदै मे
एक को एक तीळ–तागो

बीनणी रोटी कररी थी
नणदली लोटा भरगी थी

जेठजी दफनर री वै था
छाग वी वाट उडीकै था
जिठाणी नीचै न्हारी थी
माम मणिया मटारारी थी
ममुरजी न्हा-धोकर माचै-
मना में रामायण बाँचै
जणीजी इव तक पोढयाथा
चादगे मू तक श्रोढया था
वीनणी सोवर कदी थी
नावडो निरळयायो, जागो

माग चूल्है पर सीजै थो
थाळ मे श्राटो भीजै थो
मावडी मरज्याणी जायो-
प्हाड को सलाजीत खायो-
जुवानी कै जोग छायो-
चाणचक माकडियो श्रायो
छात पर पैल्या तो गाज्यो
वाद मे धम-धम कर भाज्यो
छात की डोळी भ झाक्यो
माल की कीमत न श्राक्यो
मारकै झँरळाई पड्यो
न जाणै गयो नाड नागो

कूदकै पड्यो कडकडाकै
उत्राळ्योडा आलू ठाकै
भटाभट गवळा मे खाकै
बैठगो आटै पै जाकै
बीनणी मूती मी जागी
वार-तोबा करती भागी
जणाँ म्हाँटो लैर्या भाज्यो
कडककर दाँत दिखा गाज्यो
हाथमे कवजो जद आगो
भूरखा बटका में खागो
इया बो धोळै-दोपारा
देखता देख' गजब ढागो

बीनणी भिडताही हारी
जोर सै भट तोवा मारी
हाथ को खाकरकै झटको
आँगळ्या कै भरकै बटको
क ओज्यू दात दिखा खाकै
टूकळी पर बैठ्यो जाकै
वार मुण सासू भाज्याई
जिठाणी नणदल भाज्याई
पियाजी इव भी पोढ्या था
चादरो मू तक ओढ्याँ था

ह्याव हाळा सुसरोजी परै-
सड्या करर्‌या, 'भागो भागो'

वीनणी जद तोवा मारी
ससुरजी भी सागै मारी
दोनुवाँ का रोळा सुणकै
'छुटावो रै कोई आकै'
पडोसण पाडोसी आया
दूद दूता घोसी आया
इया म्होलो भेळो होगो
बिना तोज्या मेळो होगो
साजना इब भी पोड्याँ था
चादरो मू तक ओड्याँ था
दूर सै ही दुतकारै था
जेठजी लिया एक पागो

सुण्यो घर मे रोळो–वैदो
चागचक आणआयो फैंदो
खोल आँखलिया-माखलिया
कसमजी पाछा मूद लिया
जिठाणी कह्यो अजी जागो
वीनणी नै माकट खागो
मुगो जद मूत्यो ही बोल्यो

अरै खायो ही है मोल्यो
जगा कुणसोक नार खागो
मचा राखी जागो-जागो
मनां काची नींदा ठेडो
खाणद्यो, खागो सो खागो



फलडाफाड

पैल्या तो थे काढता, साजन सीधी टाळ
कैंया वावण लागग्या इब थे उल्टा वाळ
इब थे उल्टा वाळ, ल्हकोली थारी चोटी
ज्याणू धोखो खार जुवानी आज्या ओटी
सिंगर फिंगर कर फिरो, घणा गैल्या गैल्या तो
इम्या जुवानी में भी कोन्या था पैल्या तो

पैल्यां सिर में घालता ये सिरस्यू को तेल
इब कयां घालो सदा लोसन, अतर, फुलेल
लोसन अतर फुलेल सेंट गावा मे छिडको
चाळीसी पाछै थे आछयो ल्याया फिडको !
थारो मन भी बढ्यो उमर कै गैल्या गैल्या
इस्या जुवानी मे भी कोन्या था थे पैल्यां !

न्हावा सदा इकांतरै जद गरमी आज्याय
रोजीना कैया करा काया सै अन्याय
काया सै अन्याय लगाणूं ठडो पाणी
हप्तै सै न्हावा सावण सै कातिग ताणी
बी सै आगै फुलिस्टोप न्हाणैं को चावा !
दीवाळी का न्हाया छारडी नै न्हावां !

जाडो आयो साजना थारै जी को फद
न्हाणूं गोणू कर दियो थे कदको ही बद !
ये बद बो ही भूल गया पाणी को मीनिग
कोर्ट थारै जिम्यो चलाई ड्राईक्लीनिंग
मारी रात रिजाई म मूंडो नहि काडो
वाळ जोगो थान या के करमी जाडो !

काठी गजी पैरकै पैरो एक कमेच
दो दो सूटर ठासकै जड बटणा वा पेच
जड बटणाँ वा पेन कोट ऊपर स ठूसो
बीकै ऊपर गोर्डां ताणी ओडो ढूसो
ईनै जाडो कहु'क कहूँ साठी बुदनाठी
लियाँ व्हवै पैं फिरो गत दिन कामळ काठी !

गरमी आई साजना हुया उघाड—पघाड
पड्या रहवो पखै तळै दिन भर भीच्याँ जाड
दिनभर भीच्याँ जाड सतावै गरमी थानै
ई गरमी को पड्यो न वेरो डाकदराँ नैं
जद सैं चाँदी कै भावा मैं नरमी आई !
थारै दोन्यू कान्याँ सैं ही गरमी आई !

उल्टा सोदा थे करो तेजी मदी खा'र
आँगळिया सैं ल्यो'र ये वेचो बीच बजार
वेचो बीच बजार, फरक सैं जोटा खावो
सुपनै में भी थे रात्यू खावो'र लगावो
ये ताम्णी करणैं मे ही होरया मोदा
पण मन्नै लागै ये सगळा उल्टा सोदा

छुट्टी आई माजना मोत्यो थोडा ओर
मडे नैं होवैं सदा साढे दस पैं भोर
साढे दस पैं भोर निमट कर मूंडो धोवो
पीकर चा' सिगरेट ताण कै ओज्यू सोवो
पुरब जलम में ये माग्योडी करी कमाई
मौज करण नैं थारै ही गुण छुट्टी आई

ब्याकर चाल्या दो जणा सग बराती तीन
गुटगुटियो सी बीनणी, लटखटियो सो बीन
लटखटियो सो बीन हाथ पग छोटा छोटा
चालै जद बीनणी धरै पग मोटा मोटा
मन बामण नाई नै ! आछ्या गलै घाल्या
जाणै कोई बुड्ढा बुड्ढी ब्याकर चाल्या

बेमाता भागी घणा घड घड थारी खोड
कुण रूपन्तो कर सकै जो थारै में होड
जो थारै म होड करै वै हरसी मरग्या
भगी भीन जिलाव मवी गारै मे भरग्या
चलतो फिरतो एक अजब घर अठ बणागी
घटकर नागी मोड, घणा बेमाता भागी

ल्यान्रो ल्यायो रूो वण्यो यो ग्रहम्थ जजाळ
ल्यायो साजन बाजरो गुड'र चणां की दाळ
गुड'र चणे की दाळ मिरच घणियू ग्रर जीरो
दो फनजां वो टूर एक धोती वो लीरो
बबई सं कठो, जंपर सं चूडी ल्यायो
दिनगे मे सज्या तरू खाली ल्यायो ल्यायो

म्हारै म्हारै यी पडी कोठै मे दो मूण
पीसी चीणी एक मे थो दूजी मे लूंण ।
थो दूजी मे लूण समझ कै बीनै चीणी
लियो चूरमू चूर गेरकै दूणी तीणी
खातां ही चण्णाट उठ्यो चोटी मे म्हारै
दो मूणां नै नही मेलणी म्हारै म्हारै

●

नयो पीसो

गिनिया रा मा पीसा होगा [illegible] रुपा र हाँ
(अ तुकान्त गान)

मोटो मोटा उजळिया पीसा जो गोरमिण्ट र माथ गया
पीछे छाती म [illegible] [illegible] टाला टाल्यो नया नयो
जद [illegible] न राज मिल्या [illegible] पुराणू भू दयायो
[illegible] रा मूडा रीन निया, छोटो पीसो सामँ आयो
पण चौगठ रा रयू मो होणा, जाने आसर पूछो कोई
रामार्‌यो देखो रे होई !

रिपियँ का सो, पीसँ रा दो, स्रो इसो अजब नाल्यो हिसाब
जीनँ समभणनँ आकडिया भी कर वळ्या माथो खराब
इब नई गणित, इब नई म्हाजनी, क्यू आयो फँनाळ नयो
म्हाटो नानू सो ह, पण लोगा कँ जी को जजाळ हुयो
वँ बैठ्या चीम चाळ देवँ, चाहे हरान होवो कोई
रामारयो देखो वे होई !

मालग -
म तो वूर्णी के बखत मूळिया को खरलो वेचण ल्याई
तो एक मोडियो आ पूछ्यो पीमै को कै दी है माई
मैं एक बताई, वो ठाई अर झट वेलो मो पकडायो
मूळी कै वटको भर'र कह्यो, ले नई चाल को हू ल्यायो
मैं रोकर रहगी करम ठोक जद लड्यो म्हारलो नैंणदोई
रामार्‌यो देखो के होई !

पँडताणी -
म्हारे बै आज चूनिय को जद सावो पुजा घरा आया
तो बै गणेम पूजा मे आया, पीसा रा बचिया ल्याया
गिणती का बै ही सगा पाच, जांका माचळ्ळा होय तीन
ठग कर गणेसजी नै, वामण नै, भलो बण्यो चूनिया बीन
तू करदी आधूआद, डया पडत की पडताणी रोई
रामारयो देखो के होई !

सेठाणी -
जाये काट्यो मालियो आज रिपियै का मो पीसा ल्यायो
गिण कै देरया, पाथा पिच्याणवे, पाच कठे ही गेर्‌यायो
ल्याकर नानडियै कै आगै ही मेल दिया आडू वोरो
मूठी भर भरकर खेलै हो, सो चाणचकै गिटगो छोरो
बच्या चुगणवें, बै लेकर भी वैद न मेट सक्यो मोई
रामार्‌यो देखो के होई !

जोतगग -

मेरै घर हाळो सनीवार नै, माठ घरा मे फिर फिरकै
कर लेतो रिपियो एक चित वहैया–जैंया वो फिर घिरक
इत्र कद तो सो देळी लागै, कद रिपिये का पीमा ग्राव
दुनिया मगळी स्याणी होगी सैं वो ही पीमो खुडकाव
भखरी डाकोतण खडी खडी मन्जी म्हाराज करी खोई
रामार्‌यो देखो के होई ।

ग्रटळारू -

पीमैं पीसैं मे तुलरयो रे ऐया को हलो सुणतांई
मोटी सी एक बीरवानी वी काटै पै तुम्बा ग्राई
मुगदर सा पगल्या ठाग चाणचक बिनां कह्या ही चढ बैठी
चढता ही सूई गरणाफेरी खाकर टूटी, बा ऐंठी
झट दियो नयो पीसो निकाळ ग्रर चाल पडी सामट लोई
रामार्‌यो देखो के होई ।

सकलाई

गोर मिट तेरी सकळाई, मेरे से वरणी नहिं जाई
धरती पै पटडिया विछाकै
इ जन नैं वोग्यां मे न्याकै
दो प्हाडां कै बीच अधेरी गुफा खोदकै रेल चलाई
इम्या इस्या कळ पुरजा आया
असमाना मे मिनख उडाया
विना पाख को मिनख, कागलै को काको तीतर की ताई।
विना तार रेडिया किता नैं ?
धन है तेरै मात पिता नैं !
दिल्ली मे बैठ्या बोलै तो भोजासर में पडै सुणाई।
एक नयो राकट चाल्यो है
धरती नही चाद हाल्यो है
स्पूतनीक रूस को गीगलो, अमरीका है जीकी दाई।
दो मोटा लडवा हाळा हे
सैं विल मे वडवा हाळा ह
कुणसो चोखो कुणमो न्याव्, इन्नैं कूवो इ नै खाई

सूका बादल

फैल रह्या मारै अवर में—
घोळा-धोळा सूका बादळ छोटा छोटा
लागै जाणै कोई सीखतोड चेजारो—
लीलै थोथै के ढोल पै—
मार गयो हो अठेकळी को एक हाथ चलतै रस्तै ही
और अनाडीपण सै रग्गो हो—
ढावा ही ढावा सारै

के कोई वी चँदर लोक में सुरज लोक में
काळी पीळी आँदी आई
और उडाल्याई सूल्योडै लोगाँ और लुगायाँ का
चादरा पजामाँ कोट जाँगिया
लँगा धोती जफर ब्लाउज धोळा धोळा
जो इब ताणी उडता जारया
के कोई कागद कै खुदरै ब्योपारी का
बीस तीस का दस्ता उडग्या पाच सात जो-
फाट गया है, मुड मुडकर कै जघा जघा सै

अबर मे सारे उडर्या है सूका बादळ
लोग सोचर्या, ये के वहैनै न्हाल करैगा
बिना गाज का, बिनाँ बीज का
गूगा बै'रा, काणाँ खोडा, लूला लँगडा
नोसिखिया रँगरूट, फौज इदर की बिगडी
भरती होगा सूका बादळ–
छोटा छोटा बिन ट्रेनिंग कै
आसै कुण के न्हाल हुवैगो ?
आँमै कैको काम सरैगो ?

लोग भूलर्या है
ये छोटा सूका बादळ–
बडै बादळा कै जलूस को रस्तो देखण नै आया है
थ्यावस राखो

विरखा आगी विरखा आगी

जाग्या जद सैं ऊँन्याळो थो, क्यू बादळिया भी होर्‌या था
कीडीं नगरै सा, नाळै मा, कालिज का जार्‌या छोरा था
कै बजगा ओ वेरो कोनी, घटी न सुणै जायेकाटी
जाणू पडसी, चाये रस्तै मे ही छितज्या म्हारी माटी
रै कडक कडकक बादळिया, म्हानै तू के धमकार्‌यो है
आजे, ओ करडी छाती करकै बिना अडाणी जार्‌यो हे
इनगी सुणकै बादळ डरगो, भट भाग गयो जैपर कानी
पण बीकै तो ई डरण सैं सा म्हारी ही होई हानी
'ग्नी डे' री छुट्टी होती, इतणा म्हे था कद बडभागी
विरखा आगी विरखा आगी

सबनै कालिज में जार कह्यो-म्हे बादळ जीत'र आरया हा
आ सोळा आना साची है, थानै म्हे नही भुळारया हा
पण कूण सुणै हो, आप आपकै काम लागर्‌या था सारा
बारा बजता ही शुरु कर्‌या, मैं कानी कानी खखारा
नारडो निकळ्यायो इब थो, कैया-जैया नाको पायो
जाता ही गेट्या क मागै म्हे एक ओळमू भी सायो

देरयाक, आज भी भूल गया, मैं कै दी ही जाता जाता
म्हारी नथ को मोती टूट्यो, ये और घलाल्यायो आता
बारा म्हीना सें बैठी हूं, थारै घर में बूची—नागी
बिरखा आगी बिरखा आगी

दोपारा ओज्यू देखा हाँ, म्हाटो बादळियो भाग्योडो
जैंपर सें फोज बुला ल्यायो, इब बरा'र पुग्यो लबो चोटो
इ दर नैं जाकर कह्यो—भुन्भुनू हाळा मनैं डरावै है
मेरो न रोब मानै कोई बिन ,छत्ता आवै जावै है
मन्नैं इसपेसल हुकम होय तो टूट पडू बीजा जाकै
कितणान चित्त मुवायायो आ थू रिपोट थानैं आकै
इ दर धमकायो, म्हारो चाकर होवर क्यू भाग्यो डरकै
जा आज भेजर्यो हू तनैं म्हारा पुलपावर देकरकै
म भट पिछाण लीन्ह्यो बीनैं, म्हाटो वो को वो ही सागी
बिरखा आगी बिरखा आगी

वो पुग नजीक म्हारली छात पै गरज्यो बोल्यो, आर्यो हू
मैं भीतरणें सें बोल पड्यो, आज्या मैं कै घबरार्यो हू
वो हुक्म लियोडो इस्पेसल, ओ तानू म्हारो सह न सक्यो
मारचिंग बैंड बाज्यो बिजळी की ले तलवार चल्यो न थक्यो
पैल्या तो कुछ भुरिया छोड्या, पाछै चालण लाग्या नाळा
च्यारू कान्या सें घेर लियो, घरनैं बादळ काळा काळा

मिण्टा में नाळा खाळा हुया, बो गयो खाळ जोडै ताणी
गळिया में हाट मकानां मे, मारै भरगो पाणी पाणी
टैगा पै भडभड मुण'र चिमक, छोरो जाग्यो छोरी जागी
विरखा आगी विरखा आगी

ओजी छोरै का बापूजी, आकर ये भी क्यू न्हाल्योना ?
थारो हफतै को मैल, बैठ नाळै कै तळै धुपाल्यो ना ?
हक गिरम्या मे भी दीतवार स दीतवार ही न्हावोगा ?
बाळा मे भूठो तेल घाल, तडकै भी यू ही जावोगा ?
यामे बैठणिया मासटरा को डूब्योडो मारो स्हावो
के बिनां नहाया ही आवै है थारी कालिज को बावो
म छोरा की काप्या देखै हो जीसै बीनै क्यू न कहयो
पण दगदग नाळा छुट्या देख, बीस निचलो ना गयो रहयो
विरखा विरखा करती करती वा कमरै में आई भागी
विरखा आगी विरखा आगी

क्यू विरखा विरखा कररी है विरखा नै यू क्यूं तरसै है
ओ मरुथळ है बावळी क ई मे कदमी मोनू बरसै है
ओ खाड रल्योडो होतो तो म्ह विना कहया ही न्हालेता
भर भर कर कूटी घडा टोप, निकळ्या तावडो मुका देता
पण तू जाणै, म्ह जाणा, मैं जाणै ओ है मादो पाणी
ई मे रोडा रोडा होगा, न्हावा मे के आणी जाणी ?

कीडाँ की बाता जाणणिया डाकदर रोज समझावै है
छोटा कीडा ग्वाल कै मायकै रोज पादरा जावै है
तू भी मत न्हावै जणा आज, लागण दे विरखा कै आगी
विरखा आगी विरखा आगी

मैं कू हू ज्यादा पढणें सें भी होज्यावै मायो खराब
क्यू ये भी स्याणा वेमी होग्या पढ पढ अगरेजी किताब
कोई थानै जाण'र भोळा, वरदी होगी यू टकसोळी
कीडा भी कदे इया जावै ? पण मैं कोन्या इतणी भोळी
बो गयो जमानू आठ कोस, जद चाये जिया भुळा लेता
आलू को नाम बताकरकै अडा दो च्यार खुवा देता
मैं कू हू ई पढणं-लिखणै मे कदतो पिंड छुटैगो के
आ पां-पांनिरी पोथ्या सें थारो जी कदे हटैगो के
मैं कितणी वार क्ह्यो थानै पण थारै एक नही लागी
विरखा आगी विरखा आगी

तू साची कै है झूठ नही, पण इब ग्यारणनै क्यू आई
मैं तो आगै ही पिसर्यो टू तू भी क्यू अठै चली आई
तूं जाणै है, विन न्हाया खाया मैं कालिज में जाऊ हू
साडे बारा वजता वजता मैं भग्तो पडतो आऊ हू
आता ही नेठा नया मिलै, सारो सरीर ई मे जासी
आ गेजीना की विरखा तो म्हारो लोहीडो पीज्यासी

गोडा दे दीन्हा पैंद्या नें, प्राम्या दे दीन्हीं पोथा न
पाछै भी दुनिया म्यारै ट जम थे मिनतो म्हा मोया नैं
यू वच्यै मच्यै हाडा नें आ छोग की राप्या सागी
बावळी विगी निरम्या आगी

वाता वणा'र घर सें निवळ्या रस्तै में था ग्ाडा गोळा
देख्या, मारा साडा पाणी सें भरगा था पोळ–पोळा
कोई कहर्या था मोज हुई, स्यायद दम दस आगळ होगी
कोई भींसै था म्हांनें तो आ डबो दिया बाळ जोगी
मैं सोचू हू यू कैवा हाळा साळ साणिया ही होगा
म्हाटा लगाणिया स्याणा था वी पगडी हाळै नें वोगा
वो आस्या साळ चलार्यो थो म्हानें तो वठै दया आगी
विरसा आगी विरसा आगी



जरदै को पान

जाडो आयो जरा भायला मन्नै बोल्या—
तू इब तीस बरस को होगो
परा इबताणी मीठा पान जनाना खावै
क्या को कवि है ?
कदे कदे तो तू जरदै को भी सेवन करकै देख्या कर
बँगलो पान लगाकै, चुन्नू तेज गिराकै
जरदै की दो-च्यार पत्तिया—
अर किमाम की सीक भिडाकै
जाड तळै दाबकै पान नै
घूमरा नै निकळै जद सारी दुनिया चकरी होती दीखै
पीक एक दो थूक्या पीछै
इस्यो मजो आवै-म्हे तन्नै किया बतावां
कविता की भायल्यां प्रेररा और कल्पना
दोन्यू मागै सागै आवै
जद बेरो पट्टैगो आनै ही—
मरदाना पान लोगडा कियाँ बतावै !
मैं मोची—मीठै का लागै डेढा पीसा
तो बी कविता कोन्या उपजै

ओर अठीनै गाली च्यार पीसटाँ में ही
कविता की भायल्या प्रेरणा ओर कल्पना मागँ आव
के घाटो ह ?
इतणी वाता सोच-मान कँ
मैं बोल्यो 'भई थारी मरजी
पण मेरै तो इस्यो पान खाता ही भट उल्टी हो ज्याव
पण वै बोल्या–
ऐया की उल्टी होयोड़ी म्हारी बोळी देख्योड़ी ह
इवकै खा तू
म्हानै उल्टी की सुल्टी करणी आवै ह !
पण खाता ही चरमराट लागै जद तू पीर न थकिय
भलो, पान नै मना थकिये
मैं बोल्यो–भई थारी मरजी
जियाँ कहवोगा, वियाँ करू गा !

पनवाडीडो मेरै मूडै कानी देख्यो, मुळक्यो, हाम्यो
एक मिन्ट मे ही जरदै को पान बाँदकै, दियो हाथ मे
खाता ही चण्णाट उठ्यो चोटी मे जाणै–
फलकै कै गासिये विना ही–
खागो हो मिरच को फोलरो ।
सिर ऐया को चकरी होगो
ज्यू कूवै को भूण फिरै है
ओर भूण का डडा सा दो हाथ उठाकै, भोड पकड़क

वरी जनेवू की मीची—
तो ग्राग्या सैं पाणी निकळ्यायो !

मायो भण्णावण नैं लाग्यो
ऐंया लागो जाणें कोई
कविता की भायल्या प्रेरणा और कल्पना
माथै पै चपला की मारै
ग्ररै राम तू रिच्छ्या करिये
धायो म प्रेरणा-कल्पना मैं मन्नै तो कोन्या चायै
मैं तो मेरी ई तुकबदी सैं ही काम चला लेवू गा !

मैं बोल्यो-भइ जी घबरावै है इब मेरै उरटी होसी
वैं बोल्या-पीक नैं थूकदै
गिटज्यागो तो जी घबराकै–
साच्याणी उल्टी हो ज्यागी, मोच लिये तू
पण मैं वांका क्याका ये उपदेस सुणै थो
एक मिण्ट में उल्टी करकै
स्हारै बैठ्यै भडभू जै की धाणी ग्रर मू फळी भाटदी
ठडै ठडै पाणी का कुळ्ळा करकै–
ठडै पाणी की माथै पै दो मू ण गिराई
ग्रादी घटा पोछै चेत हुयो जद सोची–
देखो किसिक प्रेरणा ग्राई !
देखो किसिक कल्पना ग्राई !

पण चभै की बात बतावू
ऐया उल्टो करतो रतो ही—
जरदै का पान चाबणा सीख लिया मैं
और एक दिन डबल पान खाकै जरदै का—
म्हारे हाळै ही नोरै मे, बड्यो रामलीला देखण नै !
भीड-भडक्कै मे ही चिथतो, खिचतो, भिचतो
म आगै सी जाकै बैठ्यो ।
बै दिन कोई 'रावण वध' थो
राम राम ! या इतणी भीड कडै सैं होगी
भिडै टाट मैं टाट पगा सैं पग चिथर्या है
गोडा भी कोई क्याने सीदा करलेवै !
जुलम करलिया आपा ई भीड मे बैठकै
पण इबतो ऐया का काठा फँसगा आकै क
मुड करकै भी पाछो कोन्या देख्यो जावै
पाछा निकळा भी तो बोलो कैया निकळा
जुलम कर लिया !
तीन-च्यार पीक तो बारणै ही थूक'र आणू चाये थो
इब थूका तो कठे, नही थूका तो कयाँ चैन पडैगो !
जुलम कर लिया !

म्हारै बैठयो एक जणू बोल्यो क आज तो रावण मरसी
मैं मन मे सोची, रावण तो के नेरो कदमी मरसी

पण, आपाँ तो माच्याणी मरगा !
अरे राम तू लहाज राखिये
ओज्यू तो मैं जरदो खावू
तो तू तीन-तलाक भलाही मनैं क्ढादे !
अहो कृष्ण भगवान लाज तू राखी भी थी
द्रुपद-सुता की भरी सभा मे
बी सैं भी ज्यादा इब मेरी भरी सभा है !
लाज राखिये मेरा सिरजनहार सावरा !
गज की बिनती सुणता ही तू भाज्यो आयो
अर बीनै ग्राह सैं बचायो
नरसीजी का कारज सार्या
और भौतसा भगत उबार्या
मेरा सिरजनहार ! भगत पै बिपदा आई !
आव सावरा आव ! भगत पै किरपा करकै
च्यार आगळ की जगा दिखाकै
आज भगत कै एक पान को पीक थुकादे !
और डूबती न्याव बचादे !
आव सावरा !

इब मैं थानै किया बताबू
बिनती सुणता ही सावरियो
पगा उभाणे भाज्यो आयो

आगर थ वो एक मिपाहीडो म प्रगटयो !
जरगा मिपाही लवो लवो हरयो गट–
गोडा तागीको पंग्या मरे म्हारे सी आगर कै जैठ्यो
घरगो रोत मे !
और रोट की डेडफुटी वागळनी गोजी
मेरै गोडे कै ऊपर ही मने पडी दीमी म्याई मी
मैं तो भाया वी वंदे में आव न देम्यो ताव न देग्यो
थोडो मू डो नीचो थरकै
एक पीर की पिचकारी गोजी मे मारी
इतगी मे ही वी लीला मे रामचद्रजी धनम उठायो
और लोगडा ताळी पीटी
कानो कानी सैं वाजरण नै लागी सीटी
जरणा मिपाहीडो थोडो ऊचो होकर कै देखरण लाग्यो
मीको देख'र मैं औज्यू छोडी पिचकारी
जरणा मिपाही भी खुद ताळी पीट रह्यो थो
इब तो मन्न ल्हाद ल्हादगी
वारै मिरजनहार मावरा !

इतरण मे ही बठै स्टेज पै रावरण आयो
बीनै देख'र बठै पुलसियै की मू छा भी फडकरण लागी
जरणा जोस मे आकर कै वो
बीडी चासरण नै गोजी मे हाथ दे दियो

श्रौर हाथ की हाथ, हाथ नैं ऐंया काढ्यो
जाणे कोई गोजो मे बीछियो लड्यो हो !
काड्यो जद ताणी तो मन्नैं भी दीखै थो
पण वो उठर्क हाथ—
म्हारली तळै कनपटी कै ऐंया को पड्यो झनझनातो कै
मैं तो सुन्न होगो ! मुरछित होगो
कद रावणियू मर्‌यो
घरा में कदसी श्राया
मने श्राज ताणी भी कोई याद नही ह



बीनणी मे आज भूतणी आई रे

आज बीनणी दिनगे में ही घर बर राम्यो ऊपर नीचै
पटक पछाडा लात फटाका, आम्या नें खोलै अर मींचै
डाटी टटै न पाच जण्या सें, पकड पकड बावरिया खींचै
गिणै न कोई मारू दादम, दीगें जीपें जरडी भींचै
जद ये कोतिक देग्या, मासू भाजी गुवाड मे आई रे
भाजो भाजो ओपरी बलाय दवाई रे
बीनणी में आज भूतणी आई रे

मॉयस बोली टाबर है, ऊचो नीचो पग पडगो होसी
के रामारी राखूडै पै ठोड कुठोड बैठगी होसी
लाडेसर मैंदी कै हाथा, बखत कुवखत चलीगी होसी
बी गूदी मे सुखलै की भू खडो पुकारै वडगी होसी
म्हीनें पैली की बात, बठीसें निकळी एक लुगाई रे
तो बा वीनें भी तोड'र परै वगाई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे

गोळा सुणकै जगत भुवा भी आकर बोली सें मरज्यावो
खडी खडी के देग्यो हो, रामार्‌यो काजीजी ने ल्यावो

दादी बोली काजी मे कोन्याँ निकळै, देवी नै घ्यावो
मदर हाळै बाबाजी को मोरो खुळा खुळा कर प्यावो
आ होज्यासी घोडै सुवार बस दो मोरा प्याताई रे
जाणै मिस ही करती थी आ इबताँई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे

सुगनी बोली, सात कुवा मे मात ठेकरी तो पटकावो
काळी हाडी मे गुड धरकै, चौरावै पै इबी गडावो
मँमदण बोली, दीतवार नै भैरूँजी कै तेल ढळावो
मालासर हाळै बाबै पा जाकर थे वूजा उघडावो
वो खड्यो खड्यो परचा देवै, म्हेभी बीपा उघडाई रे
बो थारी भी उघाड देसी जाताई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे

चाणचकै ही एक लुगाई माचै पर मैं कूद'र बोली
म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ मैं म्हाराणी कोनी कोई बादी गोली
आ साजादण देख पालणू, हास हास बड बडकर बोली
जीमैं मैं घोट्या बैठी हूं, बोलो मेरी आगी—चोली
मैं ही उपरली वाजू म हीं वाजू म्हामाई रे
इब थे मेरी देखोगा सवळाई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे

यूं सुण मासू उछळी बोली, बींपा तेरा पग पकडास्यूं
हे म्हामाई माई ! तेरै जाया ब्याया सभी धुकास्यूं
बबई सै छोरो आता ही गँठजोडै की जात दिवास्यूं
ईं नै राजी करदे, तेरै मठ पर रातिजगो करवास्यूं
वा यूं कहकर भट धोती पर दो आगी रखकर ल्याई रे
अर वार बीनणी पर सुकळा कै ढाई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे

एक मोडियो भाडो देवा, बिना बुलाये घर मे आयो
मोरपाख की भारी बाध्या, आता ही वो हुकम उडायो
मैं इक्की काडू, थे पाच पतासा, ग्यारा पीसा ल्यायो
सवा सेर आखा कै सागै, पैनू सो चक्कू मगवायो
वो चक्कूमैं धरती पै आडी-टेडी लीक कढाई रे
छू म तर, चिडिया फुर, भूतणी भगाई रे
बीनणी मे आज भूतणी आई रे



वानै पूछो क्यू है ?

जो वीच सडक कै चालै है
तागाळ्हा नै दिन घालै है
वानै पूछो, सडका कै म्हारै—
ये फुटपाथ वण्या क्यू है

जो काटा सै फलका तोडै
जो चमच्या सै लाडू फोडै
वान पूछो आखिर थारै
ये दो दो हाथ वण्या क्यू है

जो 'पैसलीन' नै ढूढै है
जो 'सिवाजोल' ही ठूडै है
वानै पूछो ये वैद बावळा—
है के ? क्वाथ वण्या क्यू है

घरहाळी भीखै वार वार
टक्को कदे न ल्यावै कमा'र
साली टावरी वगैरा नै—
प्राणा का नाथ वण्या क्यूं है

आमद थोटी पण खरच घणू
भाड नै फोडर्यो गर चणू
उस्तार्यो जीसं जणू-जणू
तो चालै तण्या-तण्या क्यू है

धानी धानी ठीचा गारया
लीस्टी पीटता पण जार्या
यानै पूछो, वै जाण-बूझ–
कादै मे जाय मण्या क्यू है

भीतर सै मूक'र कुमळार्या
सूक होठा गाणा गार्या
वाकै बापा नै पूछो, थारा–
बेटा बण्या-ठण्या क्यू है

भुखमरी सतारी भाया नै
पूछो जा सबी लुगाया न
मै बेरुजगारी का सिकार–
दिन पै दिन जाय जण्या क्यू है

घणी खारी होई-

एकर मेरै घणै बडै माणीतै घर कै—
बडै आदमी को जीमण को न्यू तो आयो
मैं इतणू हरख्यो'र उमायो क
दिनगे मैं मज्या तक
मारो दिन मैं खाली—
रगट रगड डाडी करणै में
न्हाणा धोणा उजळ धोळिया करणै में ही
घणू बितायो
जाणै कोई छै छै टावर होया पीछै
ब्या-मुकलावै की सिलवर जुवली मनांणनै—
नोमिखिया सम्मेलन हाळा-
सभापती कै पद कै खातर मनै बुलायो !
मज्या होतां होतां थानै कियां बताऊँ
मेरै कितणू चाव चढ्यायो !

आठ बजे मी मोटर को सो—
खुडको मन्नै पड्यो सुणाई
जुग जुग जीवो, ये है ठाठ बडै लोगा का
एक आदमी ताणी भी मोटर भिजवाई

ग्राज दिखा द्यूंगा लोगां नें क
वडा ग्रादमी भी वडपण में—
मेरो कितणू मान करैं है !
ड्राइवर नें, पट्टैगो जद तो यू ही मौत मे पटाकै
ग्रौर नही तो रिपियो वेलो देकर कहूंगा
मोटर की मोरियां खोलकै—
धीरै धीरै बीच्यू बीच वजार काडने
जो भी देखैगा एवर तो—
मगळा सुन्ना सा हो ज्यागा'
पण जीनैं म्हे मोटर समज्या
वा म्हारी माल सैं लद्योडी ट्रक निकळ्याई !

ग्राखिर मोटर ग्रा ही पूची
ग्रर म्ह भी जीमण नें ग्राखिर जा ही पूंच्या
बोळा बाबू पैरया सैं भेळा होर्‌या था
सूट बूट नकटाई ध्यार्‌या
च्यार जणा रम्मी खेलै था
च्यार-पाच खोलकै पाचसौ पिचपन का डिब्बा—
ग्रमलीडा पड्या पड्या सिगरेट म्हारता
धुंग्रा उडा रेडियो सुणै था
वां बाबू लोगां मे म्हारा गोनी-कुडता
न्यारा ही चोटै चिनकै था !

म जाकर कै बैठ्यो ही थो
इतणे मे ही नौकर आकै म्हानै बोल्यो
'चालो बाबू जीमण चालो !'
यू सुणतां ही मगळै का सगळा बावूडा
नौकरियै कै गैल होलिया
बड्या एक कमरै में जाकै
हाथ धोयकै हाथ पूछकै
वी कमरै मे टबल अर कुर्सिया पडी थी
जद मैं सोची—
या तो अठै रसोई कोनी, कठै जीमस्या ?

पण वै सगळा बापै बैठ्या—
जद म भी बस बठै बैठगो
अर साच्याणी बठै परोस्योडी थाळी आवण नै लागी
मैं दो पाटा आमें-सामे रखकै चोकै मे जीमणियू
आज बिनां ही पग धोयां कुडसी पै बैठ'र जीमण लाग्यो
जीमण के लाग्यो थाळी नै निरखण लाग्यो !
म्हे मीठै मे इवताणी बस लाड्डू पेडा खायोडा था
कदे कदे ठाई बिद बैठी हो कनागतां में जीम्या अर—
घणू जोर मार्यो तो बस खाई जलेबिया
ई सैं आगै भी कोई मीठो होवै हू
म्हांनै बेरो ही कोन्यां थो !

पण थाळी नै देख ग्राज ग्राख्या चकरागी
भाँत भाँत की बिरं गिरं की बीस मिठाई ग्रौर मळाई
तीस चटपटी, पूरी साग कचोरी ऊपर सं न्यारा था
दही वडां की प्लेट समोसा कै स्हारै थी
न्यारी न्यारी चीजा की मैं न्यारी प्लेटां
जांकै सागै मेंमें न्यारी न्यारी चमची !

मैं सोची-इव कुणमी खावू , कुणसी छोडू
जे इनगी चीजा को ग्राज परोसो ग्रातो
तो धीरं धीरं सैको सुवाद ले लेकै
पूरै ग्रादै दिन मे खाता
पण इव ग्रादी घटा मे ही कुणसी कुणसी नै सलटावू ?
कुणसी चाखू ? कुणसी खावू ?
ग्रर कुगसी का चाव चाव कै भरख उडावू ?
मै सोचै ही थो इतणे मे नौकर ग्राकै-
बीस पचीस छुर्‌या कै सागै
छोटी छोटी पीतळ का सी जेळो धरगो ।
मैं बानै देखी तो डरगो !
मै सोची भोजन करतां ही कोई को ग्रपरेसन होसी
पण सावरियो ल्हाज राखली
मरी या ध्यारणा एक्दम भूठी निकळी
वां जेळ्‌या नै वै बावुडा 'काटा' कै क
रोप मिठायां मे वांमें ही खावरण लाग्या

म्हे ग्रँगरेजा का काका हा
मन्नै इयाँ दिखावण लाग्या !
मैं भी वाँकी देरयाँ देखी रसगुल्लै मे—
काँटो रोप'र ऊपर ठायो !
पण उठणे कै पैल्या ही बीको रस उछळ्यो
ग्रर मेरी ग्रारया मे ग्रायो !
रसगुल्लो नीचै ही रंगो, खाली काँटो मू में ग्रायो
पण यो ग्रकरम होताँ बस मै ही में देख्यो
मै ग्रोज्यूँ मे ग्रादी फाड उठाकै बीकी
काँटै सै मू मे सरकाई
जणा लाळ सागै लटक्याई !
ग्रर काँटो जाकरकै कागलियै में गडगो

मै काँटै नै पटक परै सी, लगा वास्ते
चमची ठार्न तोड कचोरी खाणे की सोची इवकाळै
पण चमची कै नही पकड में ग्राइ कचोरी
इब ग्रागै तो हुई कचोरी, पीछे पीछे चमची भागै
ऐयाँ कोई पाँच मिंट तक दोन्यूँ रेस करी थाळी में
ग्राखिर बा नीचै पडकर ही पीडो छोड्यो !
मैं सोची ग्रापाँ भी कैया का मोथा हाँ
कचोरिया कै झूठ्याणी बाँथेडा पडगा
पैल्या मीठो मीठो तो सारो खालेता
इया सोचकै मैं चमची नैं

खीर मलाई की पलेट के कानी लेगो
भरकै चमची खाई तो खाता ही मेरो
बठे चरडदेसी मारो मूंडो उपडग्यायो
वा वाळ जोगी पलेट तो सार्टे चरड दही की निकली
पण मैं जाड भीचके रैगो !

इतणै मे ही नौकर ओज्यू घालण आया
और चीमटां मैं लोगां नै परसण लाग्या
पण जद बाबू नटगा तो वै पाछा मुडगा !
इबकै मेरो हियो पसीज्यो, भाव उठयाया !
ल्हैर कल्पना की आई, मैं सोचण लाग्यो--
देखो देखो, मोट्यारां नै कियां आज मोट्यार जिमावै
ये बिच्यापडा के जाणै के हुवै सातरी !
ल्हैर कल्पना की उठ सीदी घर मे आई
खणक खणक चूडी बजतै गोरै हाथां मैं
मोड्योडै दो फलकां नै ओज्यूं से मोड'र, एक दिखाकै
चुपकै सी थाळी मे धरकै
और दाळ को चमचो भरकै
नटता नटता कैयां घालै
तिसळ तिसळ चूड्या चमचै के मागै चालै
और मुळकती सामैं बैठी--
धोती को पल्लो सु वारती
मीठो सरबूजो बैंदारती

ऊपर में यू न्यारी बोलै–
थानै खाणो पीणो री भी सोदी कोनी
ऐं या थारा गोडा ये क्यासै चालैगा
दाळ नहीं भावै तो ठैरो पणू बणावूं थारै खातर
ऐं या मुगना ही म्हे थानै किया बतावा
कैया अणभाता भी दूणा भाज्यावै है
पण ये गैला मरद पैरकै धोळा गाबा
लिया चीमटा घालण आगा !
अर नटता ही मोथा सा पाछा मुड चाल्या
डोळ बिनाँ का–स्हूर बिनाँ का !
ये भोदूडा के जाणै के हुवै खातरी !

पण म सोचण मे ही रैगो
सामैं देख्यो तो बाबूडा पापड खा था
अर मेरी थाळी ज्यूं की त्यूं भरी पडी थी
मोल्याराँ कै हाथा सै सेक्योडो पापड
आदो काचो, आदो काळो
मेरी भी थाळी में कुण कदसी आ धरगो
मन्न बेरो ही कोन्या थो !
म सोची आपाँ तो क्यूंई कोनी खायो
पण खावो चाये मत खावो
आ बाबूडाँ कै सागै ही उठणूं पडसी !

इया सोचकै मैं भी पापड खावण लाग्यो
इतणै में ही नोकरियो कमरै मे आयो
खटण दाबकै बिजळी को पखो चला दियो
च्यार आंगल कै पापड को टुकडो भी म्हारो
पुरब जलम कै बी वैरी नै नही सुहायो !
फरण फरण पखो फिरता ही
फरड फरड करतो मेरो पापड भी उड र पधा मे आयो
वारै सिरजनहार आज तो भलो फँसायो !
भलो जिमायो !

लोग सुपारी खाई अर इळायची खाई
पण मै काड जनेवू ऐया सोगन खाई
जठै जिमावै नही लुगाई
बी घर मे जीमण जावू तो राम दुहाई !

●

सेकिंड की सूयो

उछळ उछळ कूदतो फुदकतो—
एक टांग को नाच दिखातो
तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक्
सेकिंड को सूयो भागे है
एक टांग को नाच दिखातो
तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक्
ओ सेकिंड को सुयो चोरटो
चोरी करके भाग्यो जार्‌यो
पाछे पाछे थाणेदार सिपाई चाले
जाके हाथ नही ओ आर्‌यो
ठिगणू थाणेदार सरावी मतवाळो हो—
होळ्या होळ्या एक घडी में एक पैंड हळवासी मेलै
अर बूडळो सिपाई जीके
हाडां मे है कडक आज भी
एक घडी मे बारा कोस भाग ज्यावे है
पीछे भी चोर नै नही वै पकड सके है
क्यू ? ओ म्हाटो जबरजग है
एक घडी में साठ कोस मारै फलांका
आभी कोनी, चोर न निजरा में आवै है

मिट मिट में, मिण्ट मिण्ट मे
वो वा दोन्या की आग्या मे रूल रेग्तो—
दोन्या की छाती कै उपर से जावै ?
ज्यू ही वै वीनै पकडणनै हाथ उठावै
इतणै में वो आगै जा गोलो खाज्यावै
लुक-मिचणी को खेल दिखावै
हाथ न आवै घणू वणावै
पण, लोगा कै एक भैम ओ भी होर्यो है—
थाणेदार सिपाई सै ईं म मिलरया है
रिपिया की चाबी सै चालै चोर पकडवा मै दिखावटी
और पकडणै को मिस भी झूठो वणावटी
ये दोनू भी घणा घाघ है
जाँणबूझ कै कोन्या पकडै चोरटियै नै
क्यू भी हो मिण्टा घडिया म दिन दिन करता
म्हीना वरस हुया, हज्जारा जुग जुग बीत्या
लाखा कोडा कळप वीतगा
पण सैकिड को मुयो आजतक हाथ न आयो
कितणा ही जुग का जुग मू कै आगै आसी
पण सैकिड को सुयो जणा भी हाथ न आसी
ओ मुडकर ही कोन्या देखै, भाग्यो जासी
तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक
एक टाग को नाच दिखानो

प्रार्थना

हे ईस्वर, हे गोट, रमुल्ला
तुरत भेज सोळा रसगुल्ला
जीमें भगती जागे पक्की
पाछे भेज कळयूँ की चक्की
मनैं न चाये पौड–ग्रमरफी
भिजवादे बिदाम की बरफी
मिलज्या पेट भराऊ–पेडा
तो दुनिया का मिटै बखेडा
जे मिलज्या मावै का लाडू
तो भौसागर तिरकै काडूँ
जे घर मे ठडाई घुटज्या
जलम मरण को चक्कर छुटज्या
वैकुंठा को वासो वोई
जठे खीर की बणै रसोई
जीणूँ वा भगता को जीणूँ
मिलै जिनानै ग्रमरस पीणूँ
जीपर भगवन राजी होवै
बो ग्रमरस से गाबा धोवै

जीपर किरपा नाथ करावै
वो अमरस मे डुबकी खावै
अमरस की म बात बताऊ
जाणै दोन्यूं भखता खाऊ
स्वामी इतणी सी तो करद्यो
अमरस मै दो कोठा भरद्यो



उत्तर–पडूत्तर

"ह्यूमिनिटीज को प्रोफेसर छोरै ने पूछ्यो
गृहस्थी करै विराम, उदाहरण दे समझारै"
"मरी मा, या मे रम एक पिलंग ल्याई थी
पाच पिलग अर तीन खटोला घल्लै म्हारै"



राणी आई–राणी आई

हाको सो फूट्यो–
भारत को दूर करणनै
धणी ड्यूक कै सागै सागै
आज नई दिल्ली मे आवैगी–ब्रिटानिया की म्हाराणी
हाको सो फूट्यो

आज हवाई ज्याजा के अड्डै पालम पर
नेतावा कै सागै सागै–
और हजारा लोग मोटरा ले ले भाज्या
और प्लेन उतर्यो, दरवाजो खुल्यो,
लगाई सीडी-अर आगै ही आगै लिया ड्यूक नै
उतरी यूँ म्हाराणी जाणे—
लेकर पुष्प-बिमाण इन्द्र कै सागै सागै
सीदी सुरगा मैं उतरी हो खुद इन्द्राणी !
भारत की भोमी मे विचरण करवा ताणी !
धन घडी ! धन भाग ! आज यो ओसर आयो
यो पच्छिम कानी सोनै को सुरज उग्यायो !
वारै सिरजनहार ! विनाणी !
तूँ कोनी आयो तो के ह ! तूँ ही भेजी है म्हाराणी !

या म्हारणी—
ग्राभै की सी पळक, भळर-नख-जोत-किरण सी
गूवै की मी नार, ग्राख जीकी क हिरण सी !
चाल हमणी सी, वुगलै मा धोळा गाता !
ऐ या ग्रागड नारड मे भी—
स्यान-मिकल की घणी लुभाणी
गुदसै मीठी जीकी वाणी
वडै भाग सै ग्राज नई दिल्ली मे उतरी
इन्द्राणी सी या ब्रिटानिया की म्हाराणी !

या जी रस्तै सै मोटर मे बैठ निकळसो
वी रस्तै की सडक ग्रापको भाग सरासी !
उमड उमड सरवर सरसासी
फूल फूल देवता फूल नभ सै बरसासी
सूका रु ख हरचा हो ज्यासी
या जी रस्तै सै मोटर मे बैठ निकळसी
बी रस्तै की सडक ग्रापको भाग सरासी
ग्रोर सडक कै दोन्यू कानी, फुटपाथा पै,
के छज्जा पै के बिरछा पै !
कोट-कोट कागरै-कागरै—
लाखू लाखू मिनख खड्यो जो दरसण खातर
वै वीनै उडती सी देख'र भी सगळा तिरपत होज्यासी

धरम अरथ अर काम मोक्स वैं
च्यारू सागै सागै पासी
या जी रस्तै सें मोटर मे बैठी आसी
बी रस्तै की सडक आपको भाग सरासी

बा आरी, बा आई, यल्ल्यो चली गई बा
रै, बा काळी सी मोटर है ना ? नई नई बा
कोई नै तो हाथ नाक कोई नै दीस्यो
अर कोई नै मुकुट फाक कोई नै दीस्यो
पर पूरी राणी कोई नै कोन्या दीखी !
उचक उचक बावना घणूँ ही जोर लगावै
पण बाकै राणी क्याकी निजरां मे आवै !
कठे एक छेकड कै मा सै—
मोटर कै हुड कै नीचै पयियो फिरतो दिखगो—
तो बस सतोप कर लियो
बा जावै, बा जावै राणी
बडै भाग सें, बडभाग्या नै दरसण देवा
आज नई दिल्ली मे आई
इन्द्राणी सी या ब्रिटानिया की म्हाराणी !

या म्हाराणी !
जीकै जैपर मे आण की बात सूणी तो—

पैलै दिन ही जैपर म्हाराजा की राणी
वणी सुततर
जा'र मिली मदरास देस कै, विना ताज कै राजाजी सै
ना पडत नै पूछ्यो ना पूछ्यो काजी सै
मिली भगत को सोदो दोन्या की राजी मैं
पण, या अचरज की वात इया ही लागै जाणै—
छोटी साळी करै मसकरी—
साठ वरस सै भी ऊपर कै जीजाजी मै !
जैपर की म्हाराणी मिलगी विना ताज कै राजाजी मैं !

और वठीनै वा ब्रिटानिया की म्हाराणी
जैपर म्हाराजा कै सागै–
जा'र सवाई–माधोपर कै वन खण्डा मे
खाता खाण न पीता पाणी
फिरी घाल्ती घाणी-माणी
और मारती नार-बघेरा हिरण-हिरणिया
और भौतमा जीव–जिनावर दो दिन ताणी
वारै वा ! भारत मे आछी आई राणी !

ठैर ! निरकुस कवि ! रै तू या के मे ऊळ्यो ?
ड्यूक और म्हाराणी दोन्यू —
ये मिराग करवा नहिं आय।
छोड आज तेरी नादानी

जरा देख तू ग्राकै कानी
ये हैं भैरव ग्रौर भवानी ।
ये प्रलयकर सकर रूपी गरवनार कै सकेता पै
जीवा को उद्धार ग्राज करबा ग्रायो है
ये जो राजा राणी सा लागै या तो खाली माया है ।

नमो नमो भगवती ! सक्ति ! चडी ! कल्याणी !
यू सिकार कै मिस मिस मे बदूख धारणी,
जीव तारणी, पाप हारणी
माफी चावू, माया कै पडदै मे लागी
तू ब्रिटानिया की म्हाराणी !
नमो नमो दुरगा कल्याणी ।

या राणी है– या सक्ती है– या लिछमी है
ई को स्वागत धूमधाम सै करणू चाये
जलम जलम की या भूखी है, ई को फाड्यो भरणू चाये
तो के खागी या ?
कानी कानी ग्राज सैकडी ब्याज भेज झटपट मगवावो
कासमीर सै सेव, नागपर सै नारगी
बिकानेर सै भुजिया, कलकत्तै सै कतली
बबई सै बरफी, रसगुल्ला रामपरै सै
ग्रडमान सै ग्रडा, मछली मछळीपट्टम सै'र
माम मदरास खास सै ।

खुर्जे सें खुरमरा और हापड में पापड
या जी टेवल पर जीमरा वैठैगो वीपै
कम सें कम हज़ारा रिपिया को कपडो होरणू ही चायै
जठे जठे भी या जावै है वठे वठे ही
कम सें कम भारा रिपिया को नो चपडो होरणू ही चायै ।

राणी तन्नै एक बात कू
बुरो मना मानिये, देस मेरो गरीब ह जी सें कू हूँ
ई को करम कमेडी को सो है अर मन राजा को मो है
घर मे सूखी-सूखी खाकर भी यो–
करतो रिह्यो बटाऊ की मिजमानी
पण जो गुड की एक डळी कै खातर तरसै
जणाँ जणाँ कै आगै जाकै पेट उघाडै, हाथ पसारै
बो कोई नैं क्यासैं घालै सतपकवानी
राणी । तन्नै एक बात कू
बुरो मना मानिये, देस मेरो गरीब है जी सें कू हूँ ।

तो राणी । तू भारत मे आकर भी
साचै भारत नैं कोनी देख्यो ? क्यू क–
दिल्ली बवई कलकत्तो भारत कोनी है ।
आकै अर लदन कै म्हला मे थोडो हो फरक हुवैगो
वैस्टपोल की अर नाट-सरकस की

सडका मे थोडो ही फरक हुवैगो ?
भारत ही जे तनै देखणू थो तो राणी
तूं भारत कै बीस तीस गावा मे जाती
लूखी रोटी लिया हाथ मे–
मिरच्या की चटणी कै सागै
भिडा भिडाकै खाती, सी - सी करती जाती !
बीच मे ले पाणी की घूंट–– मोद मनही मन पाती
हास हास गाव की गूजरी को तूं जद घूंघटो हटाती
तो, फाट भला ही ज्यावो लूगडी
पण बा तन्नै मूं न दिखाती
जे तूं मूह दिखाई को नेग भी चुकाती
तो तूं बीसं पगा लागणी का वदळै मे दूणा पाती
के घाटो थो ?
और हाथ ही तनै मिलाणूं थो तो तूं
गाडियै लुहारा की छोरी में हाथ मिलाती
भारत ही जे तनै देखणूं थो तो राणी
तूं भारत कै बीस-तीस गावा मे जाती !

पण जे तूं सांचै भारत का दरसण करती
तो पाछै ये म्हाणा बाणा किया चालता ?
क ये वैही राजा ह ! ये वैंही ह राणी
जो छाती पै मूंग दळचा करता इबताणी !
सारी दुनिया बदळी, पण ये वैया का वैया इबताणी

रु दळ रु दळ कर करी देस की-
सदा धूळधाणी'र राख छाणी, बरसा तक
नही बात या है बिसराणी
ओज्यू भी आकर कोडा रिपिया पै राणी
आज फेरकै चाली पाणी ?
भारत मे आकरकै के जं करगी राणी ?



प्यार की बात

"बेटा तू कुणसी छोरी सै प्रेम करै है
के बीको इतिहास नही तू सुण्यो पुराणू"
"नही नही इतिहास कदे भी मैं नी देख्यो
पण बीको भूगोल पिताजी सगळो जाणू"

"देखो थारा दांत टूटणां सुरु होयगा
इब थोडा ही दिन जा है क नाड हालैगी"
"मेरा टूट्या मो टूट्या पण तेरा टूट्यां
निधडक होकै जीव घणी ज्यादा चालैगी"



किरकिट की कामेण्ट्री

आज्या मेरी प्यारी किरकिट की कॉमण्ट्री
तेरै बिना अणमणू है मेरो ट्रांजिस्टर

तू आवै ज्यूं नई बीनणी घर में आवै
अर घर हाळा दिनगे सें चा'पाणी पीकै
कुरसी मुड्डा घाल, चाव सें दरी बिछाकै
बैठ्या बैठ्या छिण छिण तेरी बाट उडीकै

घर हाळा ही नही कबीलै का, पडोस का
सगळा भेळा होरघा मिस मिसेज अर मिस्टर

तेर आणै की कलोक मे टम देखकै
तीन हाथ एरियल उठै करवा अगवानी
बटण ऑन कर त्यार रेडियो होज्यावै है
जणा खलबली सी मचज्यावै कानी कानी

देखा तू आती ही के बोलै, मुणवानै—
कान लगा राख्या साळी कै सागै मिस्टर

या मेरे ट्रांजिस्टर की स्विच नही खुलै है
तू आती ही तुरत घूंघटो मो खोलै है

नई सभ्यता माय पळघोडी, घणी पढयोडी
तू ग्राती हिन्दी अग्रेजी मे बोलै है

म्होर लिखणनें मुन्नू भट चोपनियूं ठाव
तो मुन्नें की मां भी ठावै एक रजिस्टर

ऐया माजन किरकिट की कॉमेण्ट्री सुणसुण
सूत्या सूत्या सुपने मे भी बॉल उछाळै
सूत्या सूत्या सुपनै मे ही फिल्डिग करले
सूत्या सूत्या सुपने मे ही विकिट सम्हाळै

इया रात भर सुपनै मे भी चैन नही है
चपरासी मे लेकर देखो चीफ मनिस्टर

इसो रोग फैल्यो किरकिट को च्यारू कानी
टिकट खरीद'र आगै बैठ्यो नुयो नुयो है
ताळी बजता ही स्हारै हाळै नै पूछै--
मनै बताये इवकै कै कै गोल हुयो है !

ऐया का देखणिया तो वामे मिलज्यावै
जो समाज मे पढ्या लिख्या वाजै वालिस्टर

आमरण अनसन करूगा

एक दफा मैं नेरू जो ने नार दियो क
मेरे कमरे की खिडकी सें दिन उगताई
सूरज को सीदो पळको मेरी दोन्यू आख्या पैं आवै
जी स म न छक नीदा मे चाणचकैं चेतो होज्यावैं ।
ई प्रसग मे मैं थाने या याद दिवाद्यू क
भारत का परधान मतरी, बणनै सें पैल्या
ने या घोसणा करी थी
क जद भारत आजाद हुवैगो
जणा देस का सभी जणा सुख सैं खाकै सुख स सोवैगा
मरै सुख स सोणैं की तो थे सुण ही ली
इब सुख से खाणैं की सुणल्यो
मेरै घर मे एक बिलाई ऐंया की हीली हे
थानै किया बताऊ
मेरै नही समझ मे आवै बीकी घाली क्यामे जाऊ
व मरज्याणी मे मैं कैया पिड छुटाऊ ।
मैं थाळी मे घला रोटडी,
पैंड मे पाणी को लोटो भरवा जाऊ
पाछो आऊ तो थाळी मे थाळी पाऊ ।
बोलो इव मैं मेरो सिर सुख सैं खाऊ कैं बीको खाऊ ?

ऐंया मैं सुख सैं मोगैं सागैं की दोन्यू ही तालीका
तार भेजकै थानैं याद दियाणू चावू (क्यूं)
भारत का परधान मंतरी बणनें मैं पैरया
थे या घोषणा करी थी

(इब) के तो सूरजकै ग्रागै डोळी करवाकै
ग्रौर केन्द्र की पुलिस भेज, मेरै घर की बिल्ली मरवाबै
दस दिन कै भीतर भीतर परवद कर दियो
ग्रौर नही तो मैं ग्रनमन ग्रामरण करू गा !
के तो मेरी दोन्यू मागा
दस दिन कै भीतर भीतर मजूर कर लियो
ग्रौर नही तो मैं न डरू गा, सोच लियो थे
मैं कोई मदर मे जाकै इब ग्रनमन ग्रामरण करू गा

एक बात मै ग्रौर बताधूं
क मै कोई ऐरो गैरो नत्थू खैरो कोनी हूँ
मेरे पीछै हज्जारा ही फोलोवर है
जीसैं कूँ हू मैं न डरू गा
मैं ग्रनसन ग्रामरण करू गा !''

तार भेजकै मै मन मे यूँ सोचण लाग्यो
तार बाचता ही नेरू जी घबरा ज्यासी
जी दिन ग्रखबारा मे
मेरी मागा कै सागै मेरी फोटू छपज्यासी

वी दिन से ही गेज' मिलरिग्यें लोगा को तातो वधज्यासी
कोई वीच वचाव करण दिल्ली सें आसी ।
मन भुळा चुपळा ममजासी
राजाजी को मुबकामना तार सें आमी ।
प्रेस प्रतिनिधि मेरो भापण जा अखवारा मे छपवासी
नजन नेणनें आप डाकदर विना वुलाये घर मे आसी
और जिले का सगळा नेता सें ओफीसर मनें मनासी
(अर) मैं मन्दर मे सूत्यो सूत्यो सवनें कहूँगा—
"मैं कोन्या मानू भाया मैं कोन्या मानू
मैं मरै वचना में पाछो नही फिरू गा
मैं अनसन आमरण करू गा ।"

आखिर वै दस दिन भी बीत्या
पण दिल्ली में नेरुजी को
हा ना को जुबाव नही आयो
जद दसवें दिन मनें चौगणू गुस्सो आयो
पण अनसन कै खातर कोई—
मदर माग्यो नही मिल्यो जद मैं घवरायो
वहया जया नरसिंगजी कै मदर कै' म्हत नें पटायो[1]
वठे जा'र माचलो विछायो
और गाव मे दो रिपिया देकर सारै ढूँडी पिटवाकै
वडा वडा परचा वटवाकै
मैं वस आख मीचकै अनसन सूरू कर दियो

आठ वजे सी मेरी चा को टम हुई जद मनमे सोची
आज आज तो आपानें कुछ-घरा कनेवो करकै थोडा
चा'पाणी करकै पाछै आणूँ चाये थो
पण मदर कै चक्कर चक्कर मे—
ऐंया निरणावासी ही आकरकै जमगा
ऐंया कैया पार पड़ैगी ?
पण देखी जासी राम हुवालै !

बैठ्या बैठ्या ग्यारा वजगा
मगर एक भी जणूँ मिलणनै कोनी आयो
मदर का म्हतजो दाळ कै छूंक लगायो
मोटा मोटा रोट सेककै—
कूट ऊँखळी मे —'र मिलाकै खाड,
आरती कर भुगान कै भोग लगायो
जीम एकला जद ढकार न्ही
जद मेरो काळजो बठे कठा मे आयो !

सोचण लाग्यो
आपा भी जे आज घरा होता तो इब्बी
दैडा को चूरमूँ कुटाकै पँचमेळै की दाळ छुकाता
यो तो सूकट ही खार्यो है
पण आपा घी का भीज्या पीडिया बधाना
और बैठ पीडिया च्यार कम में कम खाना

ओर पट पै हाथ फेरता तुरत पान खावरण न जाना !
यो मूका रोटा चूर्या है जीमै यो मोटो ट्टोर्यो है !
आपानै तो आकर टोकार्या ही कोनी
ऐंयां मैं इजसै अनसन ना कर राख्यो है
कुण सो कै'ता हो मैं ई कै गळै पड्यो ?
पण कम मैं कम ई न तो केणू चाये थो
अनसन तोड्या पोछै आपा, मैं सै पैरया
दाळ-चूरमै की ही एक गोठ करवाम्या
पण देखो कैया के टूटै !'

ओज्यू मोची
ऐंया बैठ्या उठ्या तो दिन दोगो कटसी
थोडा आडा ही होज्यावा' इया सोचकै आडो होगो
आडो होता ही जम मेरी आंख लागगी
वंबत भी है भूखो बामण सोवै ज्यादा
जानो मज्या चेन हुयो जद बठे घडी मे च्यार बज्या था
मैं पसवाडो फेर्यो अर उठणै की सोची
पण लागी जाणै उठता ही चक्कर आसी
जणा खाटपै पड्यो पड्यो मैं बठे म्हन ने हेलो मारयो
"ओ बाबाजी, मेरै सै मिलबा खातर कुण कुण आया था ?"
बाबाजी चिजिया राणी कै
लोडी को सल्डको लगाता ही यूं बोल्या
"म्हान तो कोई भी कोनी आयो दीख्यो !"

म मोचै थो इवताएगी तो—
ग्रासपास कै गावा मे भी सवर फैलगी होगी मारै
ग्रौर मोटगा लिया लोगडा ग्रारया होमी
पग ग्रापणै गाव का भी कोई नही ग्राया

ग्रखबारा मे खबर निकाळचा छै दिन होगा
ग्रौर ग्राज डूँडी पिटवा, परचा वटवाया
पीछै भी इवताणो कोई नही मिलण नै ग्राया
ना ही कोई बीच बचाव करणिया ग्राया इव के होमी
पैल दिन ही इया काळजो
कटर कटर करर्‌यो है तो ग्रागै के होसी ?
मज्या होगी !
'लोग ताल मे बैठचा बैठचा खारया होसी वडा पकोडी
कदे चाट मे दही गिराकै, कदे दही मे चाट गिराकै !'
मै सोचै ही थो इतणै मे
एक जणूँ मदर कै स्हारै हाळी ही छातपै खड्यो यूँ
वठै लुटारयो थो चीला नै वडा-पकोडी (ग्रर)
"चील चील बडो ले काजी को कडो ले"
मन्नै पड्‌यो सुणाई
मै सोची ग्रापणै सै तो ये चीला भी बडभागण है।
(जो) बुला बुलाकै लोग लुटावै वडा पकोडी
चाणचकै ही मेरी निजर स्यामनै दौडी
एक वडो जो नही चील कै पज्यै मे ग्रायो थो-

वो आ मदर कै चौक मे पड्यो थो
जद मेरै मे चाणचकै ही अगद को सो उळ आयो
अर मे उठकरकै देखभाळ कै च्यारूं कानी
भटमी वडो उठा'र मावतो मूं मे घाल्यो
अर मुडकरकै पाछो मार्चं कानी चाल्यो ।

दिन छिपगो जद एक दोस्त पूछणन आयो
चुपकै सी बैठ्यो बोल्यो–क्यू कै सल्ला है ?
मै बोल्यो क्याकी सल्ला है ?
ऐंया तो दो दिनमे ही मेरा कडतू भेळा होज्यासी
तेरी काळी गाय वहैया तूं मनै जिवादे
कै तो तूं मन्नै चुपकै सी पेडा ल्यादे
कै तूं ल्याकर एक दूध को लोटो प्यादे ।
तेरी काळी गाय विहयाँ तू मनै जिवादे ।

यूं सुणता ही उठकै पाछी जूती पैरी
अर बाकी वा पगा तान मे जा चुपकै सी
एक दूध को लोटो ल्यायो
लोटो लेकर मै होठा कै जणा लगायो
इतणाँ मे ही दरवाजै पै–
पुरब जलम को वैरी जाणै कुण टपक्यायो
वो खोलो खोलो करतो ही सीदो छाती पै चढ आयो
जी पैरया ही म लोटैन मार्चं कै नीचै सरकायो ।

रा राई यू फट पार्टी रो मो थो–
राती रग्तो रग्ता म्हारा हाल्या ही रोनी
जागा राई जासूसी करवा आयो था !
म वीन यमम दम दम जर जोरया होमी
मह श्र जेगी रान होयगी
टाबर टीकर घगा एकला टग्ना होमी
तू जा क्यू ना ?
आजकलै तो चोर–चकोरा रो भी क्यू जोरो हो र्यो है
थे इन दोन्यू ही चालो मैं ठोर ठार हूं
दिन मे तो हालत विगडी थी
पए इवतो हिम्मत व घगी है !"

बडी मुसकिल्या सें मैं बा दो या नें काड्या
तो इतएं मे म्हत आ मर्यो !
बोल्यो "ठाकुर जी पोढै है
थे सारो दिन ई माचै पर ही काढ्यो है
इब सोता तो ठाकुरजी का दरसए करल्यो
उठो और आरती कराद्यो"
जाएं मेरै मे जद के खोटो दिन वडगो
मैं कैता ही सभामड के कानी होगो
कहैयाँ जैया करा आरती पाछो आयो
और म्हत कै सोया पाछै जएा चावसें लोटो ठायो
तो इतएगी जल्दी उठगो ज्यू कागज को हो

रीतो लोटो देख मने भू टरी आई
आख तिरमिराई अर मैं माथै म खाई
वारै राड विलाई अठे भी आगै पाई !
ठाकुरजी का दरसण करणें की मैं के परमादी पाई
अरे राम ! इन आस आस मे क्हैया जैया दिन तो रुडगो
पण या पाच प्हैर की कैया रात कटैगी ?"
मनै मेरै पै ही इतणू गुस्मो आयो क
भूख नही निकळै थी तो मैं
क्यू एंया को फैंदो ठायो ?
और आज दिनगे भी थोडो गळती करगा
कई लुगाया कबूतरा कै खातर–
मोठ घणा ही गेर्‌या था–
वामे सैं ही कुछ पाव- आदपा सोर-सार कै—
धरलेता तो अडी भिडो में आडा आता !
एक विचारी सिवजी पै भी
गुड की एक डळी धरगी थी
वा ही ठा लेता तो क्यू तो स्हारो होतो !

चाणचकै ही मेरै याद आई क म्हत जी–
ठाकुरजी कै भोग लगाकै
चुटकी और मखाणा को डब्बो ठाकुरजी–
कै म्हारै हाळै आळै मे ही मेल्यो है !
मैं उठकै धीरै सी मदर का पट खोल्या

और अंधेरै में ही अटक्ळ स टिटोळ कै, उण्डा टाम
दारू–मखाणा चुटकी ल्याकै
रीतो डब्यो ठाकुरजी की सेवामें पाछो मेल्यायो
मन्नै ठाकुरजी भूखा मारयो है तो मैं भी यूं —
ठाकुरजी नैं इव भूखा मारू गा
देखूं गा भूखै बामण को दूध दुळाकै
ठाकुरजी भी किसाक चुटकी दारू मखाणा भोग करैगा'
पण ई परसादी सै क्याको छुदा मिटै थी ।

कहैया जंया तडफ तडफकै तारा गिणकै पट पकडकै–
मैं बा एक रात तो काडी
दिन उगता ही छोरै नैं सागै लेकर
मदर मे मेरी घरहाळी भूखती आई
आता ही बोली–जो कुण बापनोम्हुगावणू
थान भूखा मरणै की या सीख सिखाई
के तो कोई नही कर सकै कदे कमाई
के घरहाळी सै राखै रोज की लडाई
वो मदर मे आकै बैठै क
घर गिरस्त हाळा मदर मे आकै बैठै ।
थानै थोडी लोक ल्हयाज भी कोनी आई ।
उठो खड्या होवो,र घरा चालो इव सागै सदगी थारी
मैं सुन्नूं होयोडो सो बोल्यो, 'चालू तो गा
पण दिन दिनमे ठैरकै आज रातनै आस्य ।

वा बोली–चोखो कोनी सदगी होमी
पण इव र नैं गत आवैगी ? मैं इव लेकै जास्यू ।''
यू मुण मैं मू डो लटकायो
धीरै सी चादरो समेट'र माचो ठायो
दाउ काप में मैं सीदो घ'रकानी आयो !
एक जणू फोटोग्राफर कै सागै आतो सामै मिलगो
बोल्यो ''ह ? मैं के देखू हू ग्रनसन यू ही तोड दियो के ?
मैं ता फोटू तारणनै ई नैं ल्यायो हू
पण इव्वी तो एक पोज लेणू ही चायें
मैं बोल्यो इव बाळ कैमरै न तू काल कठे मरगो थो
मेरी सूकेडी करवादी !
वडतू भेळा होगा मेरा रात रात में
इब मन्नै कोनी कोई फोटू उतराणी
मेरी तो उतर्योडी ही है ।''



बाइसिकल की चोरी

लड़का—

मेरी बाइसिकल कुण चोरी रे
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे
मेरी बाइसिकल—

तीन लोट सौ सो का लाग्या जद बा घर मे आई
पण कोई पुरब जलम की बैरण बीनै भी उचकाई
मेरी साड दुपहिया सोरी रे।
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे।

लड़की—

तीन टका की बाइसिकल को इतणूं रोव दिखाव
छोर्‌या कै चोरी करणैं को झूठो नाम लगावै
तेरी मती किया की होरी रे।
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे।

लडका—

तीन टका के मू में निकळे तीन टका री बात
और नही तो ऐया कँदे कीकी के औकात
चोरी करके सीना जोरी रे
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे।

लडकी—

चुपरै चुपरै चुप रैज्या तू मू सम्हाळ कै बोल
और नही तो पडज्यावैगा आज कमर मे धोल
तेरी धरी रहूँगी तोरी रे
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे।

दूसरी लडकी—

भाया, तेरी बाइसिक्ल मै लेगी खोल किंवाड
ये भूठ्याणी बात बढाकै क्यू कर राखी राड
बा गी ओज्यू प्रेम की डोरी रे
चोरी चोरी चोरी निकळी घरमे चोरी रे।

रूपाली कामण

ई दुनिया मे भात भात का रूप पड्या है वेपरमाण
पण देवीजी रूप आपको किण सबदा में करू वखाण
रंभा अर मेनका उवसी जे थारै कन्नै आज्या
तो साची कूं वैं तीन्यूं ही चकित हो पछाड खाज्या
दमयती ही नही रती भी थारै आगै सरमावै
कामदेव खाज्या गुरगडी जे थारै नीडै आवै
आब्र देश की माटी लेकर एक मुस्त छत्तीस घडी
घणै चाव सैं खुद वेमाता थारी या मूरती घडी
मावस की रात सैं रुप ले अम्मर बकरै सैं ले गद
सिडतै कादा को रस लेकर थामे पूर्‌यो गरदभ-छद
दो मोटी मोटी टागा पर काळी काळी सी काया
विना मूंड की आदी हथणी रची विधाता की माया
खाली दोन्यूं पग तोलै तो होज्यावै दो मण दस सेर
जापै गोडा चोडै चिलकै कमरवध का सा नाळेर
और चाल की अजब लचक मे तो वेमाता गजब कर्‌यो
थामूं मरमा मरतो ही तेमूरलग वेमोत मर्‌यो
मिर ऐंया को जिया घडूंची पर तारू को मूंणियूं
नाक इम्यो ज्यूं त्रिन तागा को एक वटोडो भूणियूं

ग्रौर नाक की हाडी जाणे माथे मे म्पगें गूटी
वो भी टप टप टपकै जाणे ढोले वामर की टूँटी
ग्रौर नाक का दोन्यूँ छिद्दर जाणें ऊला चूला हो
दोन्यू होठ इया ज्यू कोई भीज्योडा बडकूला हो
होठा की पापडी'र जिव्या ज्यूँ बिन घुपी रकाबिया
दाता की बत्तीसी जाणें गोडरेज की चाबिया
जद भी ये थारै श्रीमुख मैं कोई बैण उचारो हो
तो ऐया लागै ज्यू डी०डी०टी० को छुट्यो फुवारो हो
माथै की काळी सलेट भळकै ढाळयोडै सीसै सी
थी पर या बीदी मुहाग की एक पुराणे पीसै सी
ग्राग्या जाणें ढीवमियाँ पै कोई रगड्यो कोयलो
पळकाँ जाणे दावै मरती ग्रॉख्या मार्यो ग्वोयलो
भाफग जाणे भूठी कची म कतर्योडो भव्वो ह
गोळ गळो यू लागै जाणें कोलतार को डब्बो ह
नीक ऊपर गोळ गोळ काळी काळी थारी ठोडी
लागै जाणें चिपी पडी हो भाँग घोटणें की लोडी
उळझ्योडै वाळाँ को गुच्छो जिया घडै पै वेवडो
बा मे चुट्टो यू लागै ज्यू जेवडिया को जेवडो
ग्रर दोन्यूं हाथा सैं जद ये थारो भोड खुजावो हो
तो ग्रणगिण जू वा की जूणाँ धरती पर बरमावो हो
नही पदमणी ग्रौर चित्रणी, नही हस्तणी-सखणी
ऐया की पाचवी नायिका नाम गढायो डयणी

अम्टग्रह

ारा म्हीना पेल्या में सुणतो आर्‌यो थो
अठ्‌ठारा की माल और ओ मा' को म्हीनू
ऐ'यां को कल्डो आवंगो (क)
राम बचावेगो जीने वेंही बचेंगा
और नही तो, कोई लेर्‌या न रेंगो तो
खाली गल्डप्राण बचेंगा !
पट पट मिनख मरेंगा ऐंया
जिया कोई कमजोर खिलाडी की चोपड पे स्यार मरे है !
जिया जामना मे घुट घुट कर प्यार मरे ह !
पट पट मिनख मरेंगा ऐं'या–क्यूं ?
अस्टग्रही सजोग पडे है !
बामे भी तेरस से मावस तक ऐ'या का कल्डा आसी
क मोड्‌या मुडे न तोड्‌या टूटे

ताऊजी से ऐ'या बतळारी थी ताई
"हाजी सुणन मे आवे है दुनियां रेंज्यासी चौथाई
आपा घरमे दो ही हां कं को के रेंसी"

सुण सुण कर म्हारलो काळजो भी हाले थो
उछळ उछळ उपरने नीचे ने चाले थो

जाए यो काळजो नही मीडको कूदरयो ।
कदे कदे मन नै ऐ यां धीरज भी देतो क
अस्टग्रही मजोग आपणें घरमे लाग्या—
डेड बरस सें ऊपर होगो ।
कैयां ? ऊँ टावर दो लोग लुगाई
अस्टग्रहां मे कहो कसर कुणसै की होरी
पद्रा दिन सैं ज्यादा कोन्या चालै है गीवा की बोरी
आदा छोरा आदी छोरी । म्हे ईसर जी तो वा गोरी
अस्टग्रहा मे कहो कसर कुणसै की होरी ।
पण जद कातिक लाग्यो तो धीरै सी म्हारो—
धीरज भी चल दियो जियां आस्योज चल दियो ।

कानी कानी जग्य जाप अर भजन कीरतन होवण लाग्या
सतचडी सहस्र चडी, लखचडी तक जिग होवण लाग्या
रामायण की पोथ्या पै जो गरद पडी थी वा सा झड़की
अर घर घर मे, 'दीन दयाल बिरद सभारी
हरहु नाथ मम सकट भारी'
पडया सुणाई
अठे जिग्य होर्‌या बँचरी भागोत बठेसी
भजन कीरतन मे तो सारी दुनिया ही विंदराबन होगी
गळी गळी की मोड मोड पै-सदावरत खुलगा था सारै
जो धोळै दोपारा भी भोळै लोगा का

कठ काटता आगो पीछो कोनी देग्यो
वा लोगा मे आज चागचक–
मौत घणी अगती उमडी ना !
मौत घणू बैराग जग्यो ना !

मेरै मन मे भी यूँ सोळाना जचगी थी क
इबकाळै दोरा ही बचा
पण घर ह्ाळा मनै मेटरिक–
पास कराई है तो के मरणै कै खातर
नही नही मै नही मरू गा
परळै भी होज्यावैगी तो
मैं परळै सैं बचणै की कोसीस करू गा !
पैल्या देखो परळै होण की चानम कैया कैया ह

सोचण लाग्यो बिरखा होकै परळै हाव
तो आपान सैं सै पैल्या के उपाय काम मे ल्याणी ?
झट बुद्धी परकासी सीदो सो उपाय ह
छतै पैं छतो छत पैं ओज्यू छतो
इया तम्हेलै ताणी ताणागा-सावँठा पचासा छता
बीच बीच मे देकर मोटा मोटा गत्ता
रह्याई सैं चिपकाद्यागा मूळी का पत्ता
नीचै बैठ्या भजन कराणा एक बू द ही कोन्या लागै
मूरज नीचो उतर नावडो तेज करैगो

तो आइसक्रीम हाळे डब्बे मे टाबरिया नै बठा—
बरफ की सिल्ली सिरपै धरल्यागा म्हे लोग लुगाई
बा पिघळगी जदताणी तो परळै-पारळै सा होलेगी
धरती सै ही पाणी निकळावैगो तो सीदो उपाय है
उलट भूपड न बीकी ही न्याव बणाकै
एक कूचियै कै लाठी बाधकै
चरणा कै डाड—न्याव खेता निकळांगा !
मनू बण्या म्हे पूचागा कोई प्हाडी पै
कै बेगे आपणै खातर ही—
कोई श्रद्धा बैठी हो काजळ घाल्यां
पण यो उपाय दूसरो नही कोई कर बैठै
और नही तो गळी गळी मे
मनु ही मनु तिरता पावैगा !

आखिर बै बल्डा दिन आया
भजन कीरतन और जोर स जोर पकडगा
और झुड का झुड लुगाया का बैठ्या यू भजन करै था
कौसल्या के जलमे राम जै रघुनन्दन जैसियाराम'।
'हा ये रामारी जे परळै होज्यागी तो
तारी कै जाळ को ओग्णू कुण ओडेगो
मैं तो बा सै लड'र झगड कै
ढाईसौ रिपिया लगा'र इब्बी करवायो
"राम तिलक की भई तयारी

केकई नें सब बात विगाडी'
'मेरै ना बावळो टोपसा को नाको बाको होग्यो ?
पण बाईजी, थारो भाई ऐंया कै है–क
मा' कै म्हीनै पीछे ही सीदा करवास्या'

मैं भी मा' आता ही मेरी गऊमुखी मे हाथ घालक
सुरू करयो भगवान राम नै चकमू देणू
यहैया जेया तेरस चौदस तो बीती
पण मावस आई जणा सुणी (क)
अस्टग्रहा सै जो जो होणी है बै सै इब
पाच बजे कै पैल्या पैल्या आज हुवैगी

मैं दिन उगता ही न्हा-धोकै
चदन टीकी लगा बिछा कर आसण बैठ्यो
घरा कह दियो थो क आज मैं–
रोटी टुकडो नही खाऊ गा सारै दिन उपवास करू गा
भजन करू गा–रामायण बाचू गा
सज्या ताणी मन्नै कोई मना छेडियो !
अर सुण टाबरिया नै भी सै नै
छाती कै नीचै दाब्या रहिये
परळै की फेट मे नही कोई सो आज्या
क्यू ? मैं करर्यो हूँ पाठ
बीच मे मैं उठकै कोन्या देखू गा के होर्यो है

यूँ कह रामायण की पोथी मेल र्‌हेळ पै
डरतो डरतो रामायण बाचण नैं लाग्यो
'दीन-दयाल विरद सभारी मेरै मे मत करिये खारी
मगळ-भवन ग्रमगळहारी परळै की क्यूँ बात बिचारी
मैं नर हूँ मेरै है नारी दोन्यू काळी गाया थारी ।''
ऐंया मैं जद पाठ करै थो
तो चाणचकै ही मनै सुण्यो ज्यू
म्होलै में दो-तीन घरा का—
बरतण-भाँडा उछळ पड्‌या हो ।
इबकै म्होलै मे परळै ग्रागी दीखै है
तेरस चोदस का दो दिन तो
सिहया राम नैं चकमू देकर काड दिया था
ग्राज ग्राज भी ग्रौर रामजी जे चकमै में ग्राज्याता तो
तडकै तो ग्रापा ही बीकै स्हारै के था ।
पण इब कैया करा, कठे जावा परळै तो ग्रागी दीखै ।
ग्रौर नही तो म्होलै मे यो—
घमघमाट यो खडबडाट ये खुडका भुडका क्याका हो है ।'

मैं रामायण छोडी ग्रर सीदो ही भाज्यो
ग्ररै सुणै है ? क्यामे बडरी है ? परळै तो ग्रागी दीखै ।
धरती हाली थी के ? इब खुडका होर्‌या था ।'
बा बोली—
''थारै कानी को तो मोक्यूँ हाल्योडो ही है ।

गँया रा गुडरा तो रामजी गेजीना ही घर घर होतो।
आची थी चाची कँ, भादर री भाभी कै
दोन्या कै गोगला हुया है।
वाथी ही थाळ्या वाजी थी।"
मैं गुणता ही चित्तराम वो सो होगो अर मनमे मोची —
'परळै कै दिन भी गीगा जगानै री फुरसत कोनै मिलगी
जद होगी दीसै है परळै।
जलमावण सैं पिंड छुटैंगो जद ना मारैंगो।
ऐया ही कॅन मारैगो।
देखी तेरी परळै ल्या घालदे रोटडी
थयाको माग कर्यो है"



सुवाल–जुवाव

"एक गणित रो अध्यापक छोर नै पुछयो
एक एक मे जोडै तो कुल कितणाँ होवै ?"
"सर, पैल्या तो एक एक जुड दो ही होवै
पण दस बारा बरसा मे दस-बारा होवै।"

न्यारा न्यारा मजा

टोपी को मजो कुछ न्यारो ही है
पगडी को मजो कुछ न्यारो ही है
मच्छर माखी अर छिपकलिया
मकडी को मजो कुछ न्यारो ही है

रसगुल्ला बरफी कलाकंद
मावे का लाडू भी खाया
पण छा अर काच कादा मे
राबडी को मजो कुछ न्यारो ही है

दाड़ू केळा अमरूद आम
अंगूर घणा ही म्हा देख्या
पण काळी मिरच अर लूण पडी
काकडी को मजो कुछ न्यारो ही है

तबला सितार अर वायलीन
अर क्लारनेट सब बजा चुक्या
फागण की धमाळा कै आगै
डफडी को मजो कुछ न्यारो ही है

सिगरेट चिलम पीकै देखी
हुक्को भी गुडगुडाकै देख्यो
पण आनै कोई समजायो
बीडी रो मजो कुछ न्यारो ही है

खाटली पीडली

म्यागी तेरी गाइम्मियल भी आज थार को काम करैंगी
इमरजेंसी है तेरी चिठ्ठी आज तार को काम करैंगी
आज देस सेवा करणं को मौको घणू हाथ में आयो
तेरी जीब भेजदे नेफा या क्टार को काम करैंगी

के बोली भाई को क्या है, कुछ गैणा है बणवाणें का
अरै बावळी क्यू कररी है लक्खण मन्नें मरवाणें का
कदे राम सें डरी नही तू पण मुरारजी सें तो इब डर
बणवाणा तो दूर बात करता ही पक्डं है थाणें का

मान मत मेहमान मन में विनेक धडको
खोल मू सीदो कज्यू रस्तो बगडको
पूरियां नें छोड आमे के पड्यो है
ताणके सी खीर को तू ले सबडको

ढोवसो सी नाक मूंडो अणमणूं है
होंठ बडकूला र आंख्यां पर पणूं है
देखता ही बीन नें आज्याय मिरगी
बीनणी है या क कोई बीनणू है

बेटी हाळा भी कोई मूरख थोडी था
मुद्दो नेकर तीन आदमी पावस की रातनै पधार्या
आगां मेवा अर वाणच फळ सोवया का गोकडी रुपय्या !
एकेक कै लोटा की वदी
ग्यारा गड्डी मोटी मोटी नई चिलकती
वनडै कै हाथ मे दे'र पडत पचा नै म्हुरत पूछ
दो दिन कै भीतर व्याह माडकै
वै पाछा रातनै चल दिया

दिन उगताही छीतरियो तो फूल्यो फूल्यो
नगर न्यूंत रकै बरात कै तागी आयो
पेटी मे स लोट काडकै ओज्यूं देख्या
दिखता ही भूंटेरी आई, अरै कसाई यो के करगो
सारी की सारी गड्डी जैहिंद हाळै लोटा की भरगो
रै नरसिंगिया मैं तो मग्गो !"
पण नरसिंगियो लोटा को भूखो थोडी थो
वींकै तो दिमाग मे खाली एक बीनणी ही घूमै थी
हाथ पगा कै मेंदी माड्या
माथै पै टीको आख्या मे काजळ घाल्या
पैंजणिया की छमछम करती बीकी आख्या मे झूमै थी
वींकै तो दिमाग में खाली एक बीनणी ही घूमै थी
बोल्यो बापूजी इब क्यूं होगो सो होगो
इब तो बस दाबल्यो बात नै

ग्रौर त्यार करल्यो बरात नैं
क्यूं'क वठे पूं चरणूं जरूरी ग्राज रातनैं !

मोच समभकैं यूं माडी ऊटा पैं कूं ची
ग्रौर बरात टेम पैं पूं ची
छोरी हाळा त्यार खडघा था
बोल्या बस इब जल्दी ही भद्रा लागैगी
मोइ कुंवर सा' सैं सैं पैल्या फेरा लेल्यो
कंवर साव तो फेरा ही लेवरण ग्राया था
चा' पाणी ग्रर कलेवो धलेवो तो रोजीना ही होवै है
परण व्या की तो बात चालकैं ही रैज्या है–
निडसेक प्रभुजी ग्राज सुणी है
(विया कुंवरजी भोत गुणी है)
बीस कोम की मजल ऊंट सैं करकैं उतर्‌या
मीदा फेरा मे जा बैठ्‌या
जठै बीनणी धोळै सैं चादरियै को मारकैं दुमालो
पैल्या मैं बैठी ऊगै थी
होमकुंड मे पैल्या सैं ग्रागी बळरी थी
नरसिंगियो जाकरकैं बैठ्‌यो पडत फेरा सुरू कराया
सिरस्यूं कैं तेल को कचोळो ग्रोज होम मे
वो सिळोक बोलरण नैं लाग्यो
'ग्रोम श्री गरणेशाय नम
धरम छेतरे कुरु छेतरे मम वेटा यू यू सवै'

हाजी, देखो धरम श्रोर कूडै नैं छेनो
सै वेटा यू –यू सोज्यावो ।
श्री गुडचरण सरो रज'
मेरै चरणा मे सारो गुड ल्याकर मेलो
श्रजी कुवर मा' ऊगा मनना, चेतो राखो
काम मेळ मे श्राणवाळो ही इव ममजो
श्रोम स्याति स्याति स्याति ।
देखो चेतो करो कुवर मा' ऊगो मतना ।''

इरकै कुवर साव कै चसगी
श्राख मसळना बोल्या–रै थ
मन्नै ही मन्नै जद का खाया जार् या हो
थारी बनडी नैं तो बरजो
देखो कैया मेरै ऊपर लटकी श्रावै
ईनै थम क्यूँ नही जगावै
ल्याश्रो देखा बीडी को घोचो ही देद्यो
श्रागी ठाली वळरी है बीडी ही चासा
पडत बोल्या– होम कुड मे बीडी मतना चाम लियो ये

इब बम काम मेळ मे श्रागो
श्रमर रहूँगो थारो सागो, जैया सोनूँ श्रोर मुहागो
जिया खाट की वाई कै सागै रै पागो ।
इब थे दोन्यूँ बैठ्या बैठ्याही–श्रागी कै फेरी देल्यो

ओर कुवर सा' हाथ बीनणी को थारै हाथ मे लेल्यो !
बाई तेरो हाथ काड, पकडल्यो कुवर सा'
बोलो आगी कै आगै सोगन ख्या कू हूं
'मैं आगी कै आगै यूं सोगन खा कू हूँ'
पडूं नरक मे जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा
'पडूं नरक में जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा'
तनै छोड मैं इमरत नै भी नही चाखू गा
'तनै छोड मै इमरत न भी नही चाखू गा'
तनै जलम भर तारणी मैं सागै राखू गा
'तनै जलम भर तारणी मैं सागै राखू गा'
पडूं नरक मे जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा
'हा पैलौ पडलियो क
इन दो वर थोडी नरक मे पडूंगा !'
''बस इन काम मेळ मे आगो उठ ज्यावो थे !''

फेरा लेकर डेरे आया
जरणा लैर का लैर बीनरणी हाळा आया
तडकै दीतवार है परम्यू मावस है अर इन भद्रा लागैगी
सो थे चा पाणी तो करल्यो !
अर ऊटा पै कू ची धरल्यो !
छीतरियो मनमे सोची–
भद्रा इब लागैगी थे मनै लागगी दीसै

वा' मुरारजी आज थे देस–दुक्ख मे डूब
सोच समझकै रातदिन फिडको ल्याया खूब
फिडको ल्याया खूब विछायो सट्टो लाम्बो
ले जादू की छडी कर्यो सोनै को ताम्बो
कोई को उतरी कोई कै चढगी बुखारजी
आया ही है वैधराज बणकर मुरारजी

देसाईजी आपकी माया अपरपार
सोनू सट्टो सैमगा, सोगा सभी सुनार
सोगा सभी सुनार कर्यो गैणाँ को फदो
चौदा कैरट राख फेरकै दस पै रदो
"लेल्यो रिच्छया वोड राष्ट्र रिच्छया कैताई
जो देसाई नै देवै बीनै दे साई"

जैयाँ रोगी रोग भोगकर तन नै चावै
जैया भोगी भोग भोगकर धन नै चावै
जियाँ सीतळा माता चावै ठडी रोटी
बैयाँ ही श्री नेरूजी मेनन नै चावै !

कोई कहवै बापडो मेनन ठालो है के काम करैगो
कोई बोलै बूडो होगो इब बैठ्यो आराम करैगो
मै कू हूँ ऐंयाँ बतळावणिया नै ही सा चिन्त्या है के
बानै के पचोळ आगलो चूडी की दूकान करैगो

खरबूजो दिखज्यावै तो तू चाकू बणज्या
कूकडियो दिखज्यावै तो झट ताकू बणज्या
बडै भाग सें जे दिखज्या मेठां का टावर
तो नकली बदूख ले'र तू डाकू बणज्या

जीकर भी या जिन्दगी जीणी नही आवै
कोई प्याव भी तो म्हानै पीणी नही आवै
इच्छया तो है बीडो की जगाँ सरबत ही पिवा
पण टेम पै कट्रोल की चीणी नही आवै

जिन्दगी साँच्याणी हराम होती जारी है
आये दिन रिपिये की छदाम होती जारी ह
घणे चाव सें न्हाण नै ल्याया था मोती सोप
बा भी पडी पडी हमाम होती जारी है



म्हानै भी छोरो ब्याणू है

दस दिन पैल्या की ही थानै बताऊ
एक अजनबी सो अधेड मन्नै आ बोल्यो
म्हारै भी लडको व्यावण सावै होर्‌यो है
मैं अखबार बाचतो सोची होर्‌यो होसी
पण बीकै क्याको धीरज थो
ओज्यू बोल्यो-म्हानै भी बेटो ब्याणू है
मैं अखबार पटक कै बोल्यो ब्याद्यो तो, मैं बरजू हूं के ?
हक मेरै सै ही ब्याणू है ।
मन्नै यू नाराज देखकै
बो झट जोडया हाथ, पगा मे पगडी मेली
कह्यो गिडगिडाकै थे यू नाराज मना होवो
मैं तो थारै काना मे काडण आयो थो क
कोई छोरी हाळो थारै सै टकरावै
तो थे मेरै छोरै को भी घ्यान राखियो

मै बोल्यो बाबाजी, इब वै गया जमाना
चोदा कैरट सोने का गैणा घालणियें-
छोरा नै इब छोरी हाळा देखणनै कोनी आवैगा
इब रामा का भजन करो थे

इन तो छोरैं हाळा ही छोरी रै खातर
गांव गांव मे छोरी देखणनें जावगा
चौदा सैं चौबिस कैरट—
ताणी का गैणा जता बताक
गुप चुप भाव जचाकै मीठी बात बणार
बाप आपका बेटा यूँ ही परणावैंगा
जा बेटा का बाप नही यू कर पावैंगा
बा बापा का पूत लाडला–ठूठ कुवारा रैज्यावैंगा।

एक बात में और बताद्यूँ, छीतरियै नैं जाणो हो ना
बोकै भी बेटो ब्यावण सावैं होर्यो थो
पण छीतरियो ठोक-बजाकै सैनें कै थो
घालूगा तो चौदा कैरट मै भी पन्द्रा कोन्या घालू
चाये मेरो नरसिंगियो कुवारो रैज्या
पण बिच्यापडै की यू–फिरता फिरता चौदा जूती घमगी
जद कोई चौदा कैरट कै
गैणा मे छोरी को दादो राजी होयो
भिडताही छीतरियो–छोरी नें छल्लै की छाप प्हराई
पण चोथै दिन ही बीकी
ऊपर की सा पालीस उतर्याई
बो क्याको चौदा कैरट का बणवावै थो
आठाना की आठ छाप मेळै मे सैं लेकै आयो थो
नेग नेग पै न्यारी न्यारी छाप बरतणें की सोचै थो

पाच मिन्ट में छोरै हाळा
भैंसागाडी मे बठार वीनणी बिदाई
श्रोर लुगाया हास हासकै श्रोळ्यू गाई
क्यू भी हो जी
छोरी हाळा चाहे मिजमानी कोन्यां दी
(पण) वनडै कै बनडी तो श्राई
पण वरात जद पाछी श्राई
तो नरसिंगियो सही श्रथर मे
बनडी न 'श्रर्धांगिनि' पाई
वा सरमाती सी बोली "जल्दी जल्दी मे-
मैं तो मेरी एक टाग घर मे भूल्याई
इब मैं भैंसागाडी मे सै कैया उतरू ?'

म्होलै हाळा बोल्या
भाया श्रदलै को बदळो है यो तो
जितणै ही कैरट ना गैणा घाल्या जावै
उतण ही कैरट को बनडी धरमें श्रावै।'
पण नरसिंगियै के काना मे
पडतड का सबद गूजर्या था इबताणी
'पड़ नरक में जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा
तन जलम भर ताणी में सागै राखू गा'
बोल्यो-बापूजी एवर थारी टाग श्रठीनै भी पकडायो।'

आज की रादा

एक रात की वात, दस वजे
देख सिनेमां को सैकिंड सो जद रादाजी घर मे आई
पूच रूम मे वैग पटक, साडी वदळी
कर्यो मरकरी वल्व ऑफ ग्रीन नें ऑन कर
उछळ कॉट पै वैठी, थोडी आडी होई, सोवण लागी
पण सोणें को यो मतलव विलकुल कोनी थो
कै वींनें कोई नीद घेरली
पड्या पड्या डल्लो पिल्लो पै चाणचकै ही
दूर द्वारकापुरी गयोडै एक फ्रैंड की याद सताई
जीमें ई को वालापण सें लव होर्यो थो
भोत देर ताणी तो रादा
उळजी रही विचारा कै ही घणें जाळ मे

चाणचकै ही उठी, फोन को उठा रिसीवर
मथुरा पी सी ओ' सें नवर मिला वताई
सिटी द्वारका, फोर, टू, जीरो
पी पी मिस्टर कृष्ण
अवी या अरजेंट ट्रक काल वुक करणी''

इतणू कैंकर छोड रिसीवर
फिल्म इन्डिया की कापी ले वा श्रोज्यू मैं श्राडी होगी

थोडी ही देर मे फोन की घटी बाजी
सुणकर रादा होगी राजी
जैया हज को नम चार सुरा होवै काजी
कह्यो–'हलो रादा स्पीकिंग !
श्रोह,हो तो थे घर मे ही था ?
हा हा गुडनाइट, गुडनाइट
हलो हलो डीयर
पैल्याँ तो था थे कुछ नीयर
श्रब थे देयर श्रर मैं हीयर
बोलो मेरो कैया मन लागै बिन देख्या
मनै बिलखती छोड एकली जद सै थे द्वारका गया हो
भूख न लागै नीद न श्रावै
सारी सारी रात थारी याद सतावै !

बैया तो मन बैलावरानै दिनगे-सज्या
होटल मे क रेस्तरा मे मैं जाऊ तो हूँ
चा' कै सागै टोस्ट फोस्ट
या बिसकुट-फिसकुट खाऊ तो हूँ
पण डीयर मेरो तो मूड श्राफ ही रै है !
बटर टोस्ट टेबिल पै श्राता ही के जाणा

याद थारली माखन-चोरी क्यू आज्यावै !
जद मिटा मे सोक्यू अपसैट होज्यावै

कदे फ्रेंड्स आज्यावै ह तो
बिना मूडकै भी मैं क्लब मे वाकै मागै यूँ होलेवू
पण पिंगपाग मे इब बिलकुल भी मन नही लागै !
आज अठे रीगल टाकी मे 'मुगले आजम' सुरु हुयो है
'सैकिंड सो' मे चली गई थी
बीनै देख'र तबियत बिगडी नीद नही आई तो सोची
थासै ही दो मिनट बात कर जी राजी करल्यू
नही नही डीयर इतणी तो बात नही है
पण और दिना की सी तो आज की रात नही ह
ल्यो मैं साफ साफ ही कैयू
'जब प्यार किया तो डरणा क्या
छुप छुपकर आहे भरणा क्या'
डीयर थानै किया बताऊ
कितणू दरद भर, भर्योडो है बस ई गाणै मे
'लव' की नही मगर 'लाइफ' की
एक 'फिलासाफी' को 'ट्रू पिक्चर' दीखै है
आ गाणा मे 'लव' को पाठ सिनेमा हाळा
कितणू बडिया रीज पढावै
एक रप्यो दो आनां मे के नो आनां मे !
डीयर कदे वगइ-वबइ चालणै को प्रोग्राम वणावो

ता पैल्या काइ डली रिंग मी
मं भी सागै चालू गी, हैं हैं
नहीं नहीं डैडी ई मे ,इ टरफियर' बिलकुल न करैगा
मैं कैद्यूँगी कोई 'इ टरव्यू' को 'कॉल' बठै सै ग्रायो
जद तो मम्मी भी खुम होगी
खुसी खुसी मे 'टिफन,' 'ग्रटेची', 'हॉलडाल' खुद त्यार करैगी
हाँ तो या माइ ड मे राखियो
इब तो टाइम भी 'ग्रोवर' होणँ वाळो है
ग्रच्छया-'टाटा-बाइ-बाइ'



चीनी फौजाँ ग्रर चिलचट्टा

चिलचट्टा घबरा गया चीनी फौजाँ देख
इब ग्रापा दौराँ बचाँ ई मे मीन न मेख
ई मे मीन न मेख पकड ग्वाज्यासी बच्चा
सूग्रर नैं भी नहिं छोडै मूग्रर का बच्चा
पण भारत की फोज दाँत कर देसी खट्टा
राजी हो-हो दुग्रा मनार्या ह् चिलचट्टा

गोवा पाछो भारत आयो

बोळ वरसा पैंत्या की मैं बात वताऊ
राम ही जाणे कठे दास थो
पुर्तगाल कै टावर झोल्या होया करता
जद वो म्हारो देस भाळ कै च्यारू कानी
भारत मा कै रूनै आकै विरै विरै की बात बणावै
और भुळा चुपळा
गोवा नै गोद नै लियो
दमण दीव जो गोवा का छोटा भाई था
जाँ को गोवा मे बिमेस मो' पैंत्या सै थो
भाई नै जातो देख्यो तो ये भी म्हारा गैल होलिया
पुर्तगाल सोची क आपणे मैंना में ही मदगी चोखो
एक जगा न गोद लेगा आया' —
तीन मिलगा आपानै, के घाटो है ?
ऐंया वो तीन्यू बेटा न पाळै लागो
इया बरस पर बरस बीतता चल्या गया अर
पुर्तगाल कै मनमें ओज्यूं पाप उठ्यायो
जद वो कोई चाल सोचवै
अफरीका कै अगोला नै और गोद को बेटो मा यो

सोची कोनी ग्राजकलै का–
जायोडा ही किसाक न्हचाल करै है—
जद ये देस देसका, भात भात का, गोद मोल का
तन बुढापै मे कैयाँ के न्हाल करैगा !
क्यू भी हो जी बेटा कँ मन मे तो कोई कपट नही थो
पण जो सारो कपट वाप कँ मनमे भरगो
जद वो ग्रानै बिरै बिरै का दुख ही देणा सुरू कर दिया
ग्रा तीन्यू भाया नै बोल्यो
"बस इबसै ये तीन्यू भाई
जितणी भी हो करो कमाई
वा सारी मन्नै ही द्यो पाई की पाई"
तो भी ये तीन्यू भाई क्यू भी नही बोल्या
ग्रर वो ग्रानै घुरड घुरड कै सैनै लागो
खायो मो तो खायो पण ये
ज्यू ज्यू होया समभदार वो त्यू त्यू ग्रानै कसकर राग्या
'इतणू खावो, इतणू पैरो, ऐ या चालो'
तो भी ये तीन्यू भाई क्यू भी नही बोल्या
पुतगाल देखी कँ ये तो तीन्यू ही गोगली गाय है
इया सोचकै धीरै धीरै ग्रापै हाथ उठावण लाग्यो
जद भीतर ही भीतर ग्राको हियो पसीज्यो
रोता रोता मनडो भीज्यो
ग्रर किरोद को ज्वार धधक कर मनमे सीज्यो !
ई ग्ररसै तब भारत मा की भी जजीरा टूट चुकी थी

ग्रौर फ्रांस भी भारत मा कै जायोडा नैं
पाछा मूं प'र चल्यो गयो थो
पण पुर्तगाल गीगा को भूखो चिप्यो पड्यो थो
गोवा दामण दीव आपकै
असली मां बापा नैं दिल्ली चिठ्ठी भेजी
बापूजी, म्हे तीन्यूं भाई अठे भौत ही दुख पार्या हा
ये कैयाकै दुष्ट कसाई कनै म्हानै रख राख्या है
यो ऐया को जालिम नागो धुरट धुरड कै म्हानै लागो
डवयो म्हानै गिण गिण रोटी देवै गिण गिण गाबा देवै
बात करा तो बात बात मे टाग अडावै
अर ऊपर सैं बात बात म आख दिखावै
हामा तो हथकडी पहरावै ! ल्यास्या सूळी पर लटकावै !
इयां सास भी म्हारा बीनै नही सुहावै !!
बापूजी, इब पुर्तगाल के सामन मे म्हे उकताग्या हा
म्हान पाछा घरा बुलाल्यो
म्हे म्हारी मा की गोदी मैं आणू चावा
म्हान छाती मे चिपकाल्यो म्हान पाछा घरा बुलाल्यो !
चिठ्ठी बाच'र नेहरू यूं मन मे सोची
'डाक्टर है आरा मन कोनी लाग्यो होसी'
जद ई जापट थापड करणै की ही सोची
पण ई पुर्तगाल न भी कागज लिख भेज्यो
'इब ई म्हारा डाक्टर बठै रहन कोनी देणू चावै
सो भाया तू छिपा रहज

म्हारा तो यूँ टाबर म्हानें पाछा करदे
बुरो मनाँ मानिये वात को ।"
या चिठ्ठी जद पुत्तगाल कै कन्नैं पूगी
तो बैंकी मूछ्या फडकी हो ऊची ऊची
जाणं ग्रारयां पै फिरज्यामी काळी कूची
माथै कीं'र हियै की च्यारू सागै फूटी
ग्रौर ग्रकडकर ऐंया को ग्रमचूर होयगो
जाण कोई एडी सैं ले चोटी ताणी वळ ही वळ हो
ग्रकड ग्रकड मे पाछी चिठ्ठी लिखी क
"तेरा कुणसा टाबर ?
गोवा दामण दीव, सदा सैं मेरा है ग्रर मेरा रैगा"
चिठ्ठी बाच'र नेरुजी चक्कर मे पडगा
यै गोली का तीर काळजै कै माँ गडगा
पण बै धीरज सैं ही काम काडणू चायो
ग्रोज्यू चिठ्ठी लिखी क भाया ऐंया मत कर
म्हारा टाबर तेरै कन्नैं कोन्या रैणू चावै म्हारा पाछा देदे"
बो ग्रोज्यू कलडाई में ही लिखकै भेज्यो कुणसा थारा टाबर ?
ग्रोज्यू बात चलाई तो बस खबरदार है ।
नेरुजी ग्रोज्यू गम खागा
पण टाबरिया की पीडा उतणी ही वडगी
वाकै भी यै वाता गडगी
थोडा दिन पीछै नेरुजी पुत्तगाल नें ग्रोज्यू चिठ्ठी लिखकै भेजी
तू म्हारै टाबरिया नें इतणू क्यारै है

ई सं म्हारी भी आत्मा भोत दुख पावै
सो तू भाया म्हारा टावर म्हानै देदे
और नही तो मैं पचा नै भेळा करस्यू
पाछी चिठ्ठी आई 'मेरा सारा पच पजोस्योडा है
थानै जो करणू सो करल्यो'
'नेहरूजी ओज्यू लिख भेजी
'भाया ऐ या बात वढाणी चोखी कोनी
आ बाता मे सार नही है
तेरी-म्हारी यू कोई तकरार नही है
सो तू भाया म्हारा टावर म्हानै देदे !'
ऐ या चिट्ठी पत्री मे ही तेरा चौदा बरस बीतगा '
पण ऐ या रोणै सं कुण रावडी घालै

पचा को भी हुयो फैसलो "तीन्यू टाबर भारत का है
पुर्तगाल को बांपै हक-अधिकार नही है
पुत्तगाल बानै भी पाछो कागद भेज्यो
'पचा को कैणू तो मेरै सिर माथै पै
पण यो नाळो अठेई पडैगो !
मैं देखू गा मेरै सामै कुण आकर कै किया लडैगो'
जणा पच भी मूँडो छा सो करकै रैगा

जगा माडियो मेनन बीकै एक ताणकै झापट मारचो
आख तिरमिराई'र गाल पै पाचू उपडी
पड्यो लडखडाकै, च्यारू खाना चित होगो
भूल्यो मा हेकडी, सल्डदे सीदो होगो
गोलै को गुर जूतो होवै ।

⊙

पाडौसी

म्हे एक अच्छयै पडौसी की जियाँ रहर्या हाँ
वा की हर हरकत नै नादानी समझकै सहर्या हाँ
म्हारै सै के दुराव, के छिपाव ?
जणा ही तो बिनाँ पूछ्या बता ज्यावै
चीणी को भाव, गीवाँ को भाव ।
जद सैं बाकी घडी खोई है
दिन मे दस बार पूछणनै आवै
के टेम होई है ?
आपणें अर पराये को भेद तो वै सीख्यो ही कोनी
लेमनसैट जो माँगकै लेगा था
पाछो दीरयो ही कोनी ।

⊙

कढी–बिगाड

बण्यो बणायो काम बिगाडँ
यानँ जाणो कढी–बिगाड

सूरत मे जो दिखँ सूम सा
मूरत मे माटी की लोथ
ऊपर सँ तो भारी–भरकम
पण भीतर सँ जाकँ थोथ

जाका भाव–विचार निकरमा
जाकी बोली भी कठफाड

ये नहि जाणँ भाई चारो
ये नहि जाणँ के है प्यार
नीच करम करवाणू हो तो
ये हो सँ सँ पैल्या त्यार

ये अकरम मे आगँ पावँ
सुब कारज मे हालँ नाड

ये करदे राई को परबत
ये करदे ग्यारा का पाच
य साची नें भूँठी करदे
ग्रौर भूठ नें करदे साच

ग्रल्लम गल्लम लगा लफोसा
ये कर देवै तिल को ताड

गोविन्दो भी कोनी जाणें
ऐया कै नन्दां का फद
चाणचकै ही ये ग्रा टपकै
दाळ भात मे मूसळचद

ग्रौर बिनां बतळायां ही ये
तुरत उधारी ले ले राड

◎

पशु मेलै मे कवि-सम्मेलन

दिन उगतां ही एक डारियो एक्सप्रैस चिट्ठी ल्याकर दी
घणी खुसी सै खोल'र बांची
नगर भगतपुर जिला जगतपुर
भोत जोर को पसुग्रां को मळो भररयो है
बी मेळै मे भोत जोर कै कवियां को सम्मेलन होसी
बी कवि सम्मेलन मे थानै भी आणू है
गाडी भाडो तो चांगा ही
ग्रोर कोई दस्तूर हुवै मो ये लिख दीज्यो

चिट्ठी बांच'र कई तरै का भाव उठयाया
पसु मेळै मे कवि-सम्मेलन ! के मतवल है ?
के कवि-मम्मेलन सुणवानै पसु ही पसु भेळा होवैगा !
यानी मिनखा कै मेळै मे तो कविता बोळी ही होली
इब पसुग्रा मे भी तो जागृति करणी चायै !
पसुग्रा को मेळो भी तो जोर को लिखयो है
जे कोई जोर को पसू ग्रा कविता कैती बखत लेर स
कवि नै ढूढ मारज्यागो तो
कविजी गुरगडी खाता नीचै ग्रावैगा !
ग्रोर बीर रस की कविता नै नीचै पड्या पड्या गावैगा !

ग्रो ! ई खातर ही साफ लिखी है क
भौत जोर कै कविया को सम्मेलन होसी
पण आपणैं तो सरीर मे ज्यान ई कोनी
आपा ई कवि सम्मेलन मे किया निभांगा
(पण) देखी जासी, राम करैगो सो होवैगी
आपानै तो रिपिया चाये
पीछै आपा पसुआ कै मेळै मे ही क्यू
मुरदा कै मेळै मुसाण मे भी जाकै कविता बोल्यावा'
पाछी चिट्ठी लिखी– च्यारसौ रिपिया गाडी भाडो ल्यू गा
पसुआ को कवि-सम्मेलन है
मिनखा को होतो तो क्यू कम भी ले लेतो'
चौथै दिन ही फट बावडती चिट्ठी आई
फल्डाफाड जुबाब लिरयो थो
'ढाई सौ रिपिया लेणा हो तो आज्यायो
ग्रौर नही चुप्पी खाज्यायो !'
मैं फट तार दियो 'आरयो हूँ !'

दस बारा दिन पीछै ही वो सम्मेलन थो
बी दिन मैं गाडी सैं मोटर मे—मोटर सैं गाडी मे—
चडतो'र उतरतो नगर भरतपुर सज्या च्यार बजेसी पूच्यो
बेरो पाड्यो,
दिखणादी जोडी कै स्हारै पसुआ को मेळो भरर्यो थो
बीटो पेटी तार बठे मैं खड्यो खड्यो देखणनै लाग्यो–

क कद सयोजकजी फूला री माळा ल्याकर मनै पहराव
और जीप सें मनै गेस्ट हाऊस ले ज्यावै
तातो पाणी करा न्हुवावै, ताती ताती कॉफी प्याव
कद सयोजकजी फूला की माळा ल्यावै ।
(पण) वठै किसा सयोजकजी था ।
कानी कानी हरियाणै का नारा नाथ तुडाकै भाजै
जाकै लेरचा वाका मालिक
मोरी पकड्या लटक्या लटक्या चालै सागै
बूडी गाया-बाछा बाछी, काळी काळी भैंसा आछी
"तेरै सौ बर जच्चं तो लेज्या भाया—
पण दिया पिछै ल्यू गा नहिं पाछी ।"
ऊट खड्या अल्डाटा मारै
भेड बकरियाँ त्राहिमाम् त्राहिमाम् पुकारै
यू च्यारू कानी मेळै मे भात भात का पसू खड्या था
च्यारू मेर देखकै सोची-गल्जा कोनी बिकरणा आया
वै इत्र ताणी कोनी दीरया
पीछै मैं मेरै कानी ही देख्यो और जोर सै हास्यो
गधा बिना तो पसुआँ को मेळो पूरो ही कोनी होवै
च्यारु कानी आख फाडकै देखूँ टक टक
पण कोन्या दीरया सयोजक
एक भागतै बाछडियै की मेर बिस्तरबद क माँई टाग उळजगी
कैया जैया बा काडी, तो सूटकेस पै गोबर करगो
जणा करम नै रोतो रोतो

जद नौ बज कै साठ मिनट पै कवि सम्मेलन शुरू हुयो
तो–भीत घणी दरिया बिछगी थी
जा पै बैठ्या था हज्जारा लोग लाठियाँ ले ले करकै
जाकै पीछै लोग खड्या था–
श्राप श्राप कै ज्यानवरा की मोरी पकड्यां
बांकै भी लैर्या नैं–कोई चढ्या ऊट पै
श्रर कोई घोडे पै, भैंसे पै कोई चढ सम्मेलन सुणवा श्राया था
सभापतीजी श्रासण माड्या
सैं सैं पत्या कवि मूमळजी
एक वीर रस की कविता यूँ बोलण लाग्या
श्रर धरती नैं श्रासमान सैं तोलण लाग्या
भट भट फट फट-गोडरेज का सा ताळा यूँ खोलण लाग्या
"श्ररे चीन तूँ क्या करता है
तूँ मेरी भू पर तकता है !"
इतणी सुणना ही बस सुणवाळा भट टोक्यो !
श्ररं बेळ्ज्या भू का बचा !
भारत मा नैं भू कैर्यो है ! थोडी सी भी सरम नही है !
कवि मूमळजी श्रोज्यूँ बोल्या-थे भू को मतलब नहिं समज्या
देखो–
'बस चुप रैज्या
जायोडो काल को, श्राज भू को मतलब समभावण श्रायो
श्रठे भुरा कै पोता होगा !'
कविजी बोल्या—

अच्छा अब मैं एक नई रचना पढता हूँ–
"हम फौलादी वीर चीन का चूरा कर देंगे
कूरा, खूरा, गूरा, घूरा, ङूरा कर देंगे
हम फौलादी वीर चीन का चूरा कर देंगे !"
इतरा मे लैर्‌यासी आकै एक साड जोर सै टाड्‌यो
सुणता ही कविता को पान्नूं नीचै पडगो
कविजी नै जा है वै जा है !
इबकाळै कविता बोलण नै गीतकार नरसीजी आया–
"ओरे नरसी तन्नै गाया सरसी"
पबलिक मे से एक जणूं चुरकै सी बोल्यो
"भात भरण तन्नै आया नरसी"
इतणै मे नरसीजी विदक्या
"के तो भात भराल्यो अर के कविता सुणल्यो !"
इबकै मेरो लम्बर आयो
(मैं) एक टाग मे पैर पजामू
अर दूजी टाग मैं जागियो पैर्‌या
छत्तो ताण, हास्य रस की कविता यू बोलण लाग्यो
"इबकै छीको, इतणू ही छीरो छत्तै पै छीक पडैगी
इबकै छीरो–इबकै नेळा का छूतवा अठीनै फीको
कविता सुणना ही पबलिक 'सीरियस' होगी
सोची कुछ कंताही कविजी छत्तै की सिर मे धर देगा
जणा लोग गुमसुम भाठा सा
सुणबो कर्‌या न बोल्या बयू बी

मैं ओज्यू बोल्यो–"रै बेटी का बापो
हास्यरस की कविता पढग्यो हूँ क्यू तो हासो
हा हासो देखा"
पण कैरो से कुण हासै थो
सै सोचै था हास्या अर छत्त की लागी
ई हासी मे के काडागा !
मैं चुप चाप बैठगो पाछो
ऐंया कविता कैता सुणता बारा रजगा
मेरो लबर आवै अर सै गुम सुम होज्या
कई जणा बैठ्या ऊगै था और कई आडा होगा था
म्हाटा सूत्या सूत्या ही हेला मारै था–
'वा वा ! ऐंया की ही एक–दो और आणदे !
वा वा या भी आछी लागी एक इसासी और फीकदे !'
के बेरो सुपनै मे बोलै था क सापरत !
दो का डका लाग्या, सयोजकजी बोल्या–
इब सम्मेलन खतम हुवै है
सै कवियाँ नै भौत भौत धनवाद देऊ हूँ"
नही बात भी पूरी होई जी पैल्ला ही
आप आपका ले रमालिया चादर, गमछा, साफी, धोती
सत्तर अस्सी जणा मच कै कानी
ऐंया भाग्या जाणै कविया नै बाधकै मारसी
कवि–सम्मेलन खतम हुयो है
क या कोई फटियर मेल ठेसन पै आगी !

ग्रौर सीट रोकण नै जाणी
थड क्लास कै मुसाफरा की–भीड एक डब्बै मे भागी
मेरो पग चियता ही मैं जोर सैं पुकार्‌यो
"रै वारै देखो मनै तो दाब लियो रे"
सयोजकजी मेरो हाथ पकडकै खीच्यो
"थे इनै ग्राज्यावो, ग्रठे मच पै मेळो देखणिया सोवैगा।
थारै सोणै खातर न्यारो तबू ग्रागै बंधवायो है"
"मैं बाल्यो मन्नै थारै तबू कै माई कोन्या सोणू
मन मेरा रिपिया देदयो—मैं पली गाडी सैं जास्यू"
दो एक जणा ग्रौर भी मेरै सागै होगा
सयोजक जी हेलो मार्‌यो—"रामेसरिया।
सब कविया की फीस चुकादे लिया ग्रठे ही
पाच मिनट मे रामेसरियो
चूणै कै चूगै नै ही टिचकारी दे हाकतो लियायो
सयोजक जी बोल्या—
ढाई सौ हाळा नै तो ये ब्यावणसार भैंस पकडादे
ग्रौर डेडसो हाळा न ये गा सम्हळादे
ग्रासपास सै ग्रावणियाँ नै ये ठालड बकरी पकडादे।
लेज्यावो सा।" मैं बोल्यो मैं तो भरपाई
एक भैंस तो सग्रा वरसां पैल्या सैं ही खडी चरै है
ग्रौर दूसरा लेज्याकर कुण करै लडाई
मैं तो मेरी फीस फास सगळी भरपाई

⊙

बनड़े को गीत

मेरी धोतनी पुराणी
मेरी टोपली मरज्याणी
मेरै ब्या की वाता चालै
पण वा एक ग्रास सै काणी
बाप बूडियो पड्यो खाट मे खाली थूक उछाळै
मरणै सै पैल्या पैल्या ही बहू नहि काटा वाळै
मेरी सासू भी कटखाणी
जाणै बेटो कोन्या ब्याणी
बाबी ग्राकरकै बाकै सै
कोन्या बतळाई इबताणी
जोर नही कोई को चाल हूणी होकर रसी
ब्या होवो चाहे मत होवो बा तो रोकर रैसी
मेरी सूरत भी डराणी
बाबी जावै नही बखाणी
चालो ग्रां वातां मे मग्न
कोनी दीखै ग्राणी–जाणी



चाँद सै चिठ्ठी

एक दफा की वात वताऊ
च्यार जणा बैठ्या गट्टै पै वात करै था
एक जणू वोल्यो 'क सुणी है—
रस चाद पै ऐया को राकट भेजैगो
जीम वठ्या मिनख चाँद पै पूच भोम सै वात करैगा
दवो म्हाटा कै यां का जालिम जुलमी है
ठाला वठ्या क्य नै क्यूं उतपात करैगा
वाळा वाळा मिनख चाँद पै पूच अन्धेरी रात करैगा
कै व कोई मिनखाँ को अपघात करैगा
(पण) ठाला बैठ्या क्यू नै क्यू उतपात करैगा''
जणाँ दूसरो बोल्यो 'रै के सिर भेजैगा
दस दिन पैल्याँ ही राकट मे काळो कुत्ती एक बठाकै
बोल्या था प्यागी वेटी चडज्या सूळी पै
और चढी थी जणा चाद कानी सिर थो पण
चढताँ चढताँ वी विचापडी का चाद कानी पग होगा
जणा खेलणा आका खोगा
पण ये मोगा, कुत्ती कै सागै सागै ही
कुत्ती कै घुघरिया नै मझधार डवोगा

आज नही सुणनै मे आवै
काळी कुत्ती व्याई, राजा नै परणाई
राजा घाली रोटी, कुत्ती होगो मोटो
क्यू वा कुत्ती काळी काळी छोटी छोटी
न तो चाद पै पू ची नै वा आई ओटी"

पडतां ही तीसरो भभक कै यूं भणकार्यो
"मैं तो पैल्या ही जाणै थो
इया मौत सें कुचरणी कर रूस–रगिया
ये के काकडियो काडैगा ? अर
कुणसो ऊपर भजनदास बाबो बैठ्यो है
जो आनै प्यासी जातांई -धुटी धुटाई, छणी छणाई
(अर) कुणसी बठे चाद पै विरमपुरी होरी है
जो ये जाता ही जीमैगा बम का गोळा, कठ सोसणी !
कुणसा जाता ही मिलज्यासी नाबादेळी दिछणा पोळी
बैठ्या क्यू रै ना ये निचला
बस आनै ही सें सें ज्यादा धरती पै दुख होर्यो है के ?

एक बात और है क ये मोथा है समजै कोनी
क्यू क पून्यू कै दिन ये सज्यासी देस चाद न
रावट मे बैठ्या बैठ्या ही
सीद बाँध कै ये रात्यूं देगा फटकाग

मगर चांद पै जाणू कोई
तू वां हाळी नानी कै तो जाणू कोनी
जो ग्रादी घटा मे गाडी ठेठ घालदे
धर मजलां धर कू चां ग्राने
सारी रात लग ज्यावैगी रस्तै मे ही
दिन उगे सी पूं'चैगा जद बठे चांद तो छिप ज्यावैगो
ग्रर बदलै मे सूरज बावो त्यार मिलैगो
जद ग्राका भोगना बठे भरणा ज्यावैगा
बा किरणां की लपट देख ग्रांका माथा गरणा ज्यावैगा
कोई सीदा सोज्यावैगा ग्रर कोई सरणा ज्यावैगा
जद ही ये बळता बळता एं'या सोचैगा
देवो कीपै चडता चडता गळती सै कीपै ग्रा चडगा !
एंयां तो बस रात देख कै
चांद देख कै सूतू कोई ही चडज्यावै
पण लाखां कोसां को चडणू एंयां हांसी खेल नही है

चोथो बोल्यो 'कुण के कैसी ? हूंणी है सो होकै रैसी
मन्न तो लागै ये म्हांटा
बस एंयां ही पडता उठता, उठता पडता
कदे भोम पै पडसी तो ये कदे चांद पै भी जा पडसी
एंया ये ग्रांगळी पकडता कदे जा'र पूं चियो पक्डसी
कदे भोम पै पडसी तो ये कदे चांद पै भी जा पडसी
पण एक बात न्याऊ होज्यागी

म वरत चौथ का चरखो सुणायो
जणी चांद रै परग उग में छाती पै चढ़रै देखांगी
जणी चांद म थे म्हाटा म्गिया दिगेगा
पार दग'र थे छगरी पछाड़ गाज्यागी"

मैं चांदी में आता सुणतो इतणू तनमें होतो जाएं
लगा उत्पना की सीढ़ी पू चगो चांद पै
ओह हा ! या है चांद-जग में साता ई पै भाणू चावै
पैल्या बैरो हातो तो पैरया ही आता
मारै चक्कर वाट बूट कै, देर भाळकै च्यार वानी
मैं छहु करकै एक पहाड़ पै जाकर बैठ्यो
गोजी मे से तुरत फोटिनपेन काड र
फाड डायरी मे से पन्नू
मैं घरहाळी ने चिठ्ठी लिखणें की सोची—
'प्रिय ! मेरी फिकर मना करिये
तू आटो आमण्या मोचरी होगी मन मे
मैं लेकर क साग नही इजनाणी कै या कोनी पूछ्यो
मैं तन्नै वू , मैं बजार मे गयो नही हूँ
मैं तो आज चांद प आगो—घूमण खातर
इब मैं तन्नै ई चिठ्ठी मे चांद देस का
थोडा भौत हाल लिखरयो हूँ
सै मैं पैल्या तो मैं तन्नै साची वू हूँ
अठे पूचता ही इब तेरी याद मनै तो

भौत जोर सैं ग्रावण लागी
पण वारैं वा, चाद चाद है नही कल्पना है या कोरी
ग्रोर ग्रगर नाराज नही होवै तो लिखद्यू
गौरा गौरा मिनख लुगाया तेरै सै भी ज्यादा गौरी
रुई का सा धोळा-धोळा छोरा छोरी
(पण) ग्रठे नही चालै है चोरी-सीना जोरी
मैं सोचूं हूँ जणा ग्रठे तो मेरी पार पडैगी दोरी

मिनख ग्रठे का ढिल्लम पिल्लम किच-किच फुस फुस
कोन्या वै धाया सरीर का मोटा तगडा
होवै ही कोनी कोई मे रगडा-झगडा
जगा इया की मेरो मन दोरो ही लागै
क्यूक न तो कचेडी है न थाणू
लोग लुगाई सै मोथा है जाणै ही कोनी कोई-
कोई नै कैया वैकाणू 'र डराणू धमकाणू -उकसाणू
ग्रोर पवाही झूठी द्याणू
बिना चोट कै ग्रस्पताळ मे नित जाकै पट्टी बंधवाणू
जाणै ही कोनी कोई
नी तो जाणै ये खुद खाणू
ग्रोर नही जाणै ग्रौरा ने किया खुवाणू
मिनख ग्रठे को मदरासी बावै को जैयां फिरै उभाणू !

पण एक बात है ऐया कै देस मे झूठ,
चोरी, फरेब, तिकडमबाजी— को स्कोप भोत है

अठे कठे डालडा, कठे चीणी बलेक की ।
कठे गोल्ड कंट्रोल, कठे स्मगलिंग घड़िया की ।।
बै बेटी का बाप भर्या बोरा अफीम का
और परेंसी जाकर ढाळ्या
सौ-पचास रिपिया चौकी हाळैनें बाळ्या ।।
और हजारां आप सम्हाळ्या, कठे अठे ? ।
मनै अठे पूच्या दो घंटा सैं भी थोडी ज्यादा होगी
पण इबताणी नही समझ मे आई मेरै
मैं आनै कैया के चकमूं देकै आऊं ।
एक बात मै और बताऊं
जे तेरै धक्कै चढज्या तो नटवरियै नें अठे भेजदे
पीछै तो म्हे दोन्यूं मिलकै
ल्हुक छिप लंबी पाइप लाइन एक बिछाकै
चाद देस को सारो इमरत—
नरक कुंड मे कर सप्लाई
बठै ब्लैक से बेच एक का तीस करांगा
मोको लाग्या खड्या ब्यारसौ बीस करांगा ।
इमरत की ही बात करांगा इमरत का ही ढोल भरांगा
जिसा करांगा—बिसा भरांगा ।
हां तो नटवरियै नें जल्दी सैं जल्दी भिजवाये देखा

ले सबजी कै खातर जो थैलो ल्यायो थो
बैमें या चिट्ठी घालूं हूं

सीद बाद कै वो पाछो नीचै पटकू हू
बोच लिये छातपै खडी हो !"
यू लिखकै में थैलो नीचै फीकण चाल्यो
तो मेरा पग बठे तिसळगा
अर दडाच खातो मे भी धरती पै आयो
इतण मे ही आख खुली तो में के देख्यो
(क) में धूँसै मे लिपटचोडो ही माचै कै नीचै पडगो थो
चाद देस कै सुख को सुपनूँ
तकियै की जंया ही माचै पै छुटगो थो
बा कैरी थी—थे भी कोई टाबर हो के
जो सूत्या सूत्या ही नीचै का ऊपर—
अर ऊपर का नीचै हो ज्यावो !
जावो जी बस जावो जावो !



ढळी रातां, बीती बातां

दो चीजा विख्यात थी राकिट अर राडार
आज तीसरी चीज है कामराज नाडार
कामराज नाडार एक बम इसो बणायो
बारा मनख्या नै कुर्स्यां कै नीचै ल्यायो
कानी कानी सै ऐंया इस्तीफा आवै
ज्यूं पड़क्कर हाथता उठ'र गाबा झड़कावै

गांधीजी चावै था मिलज्या रामराज ही
सन्त विनोबा ले भाग्या पण ग्रामराज ही
चोखा चोखा राज इया जद बँटता देख्या
तो नेरूजी ले भाग्या बस कामराज ही

मंत्रीजी बोल्या मिनखां नै 'सूगर खाणी बंद करो सब
क्यूं ? पैल्यां सूगर मीठी थी, पण इब सूगर खारी होगी
सूगर खाकै गोरमिंट की थे मतना तकलीफ बढावो
थे जाणो हो ? गोरमिंट कै सूगर की बेमारी होगी

काई चा मे घोळ,र पीगो, भर भर कर प्याला'र रकाबी
देवर घेवर मे खागो तो गूँद सूँठ मे खागी भाबी
चीणी को केदोस ? रेट तो बीकी बढणी ही वाजिब थी
ज्यू ज्यू रेट वढी त्यू त्यू व्योपारी बीनें कसकँ दाबी

देख पुलिस को मारजेंट जे दवज्या मीणू
तो समजो घरमे वठी मीणो भी दवगी
जणा बोडर पँ भारत सें चीणा दवगा
तो भारत मे पडी पडी चीणी भी दवगी

कृष्णामाचारी उतर्‌यो देसाई आयो
देसाई उतर्‌यो आयो कृष्णामाचारी
टाबरिया ही नही मिनिस्टरिया भी देखो
खेल खेलर्‌या 'ऊतर भेसा मेरी बारी'

चीण आपकँ मनमे कूठ्याणी वणर्‌यो है आज बहादुर
पण बाकँ एक भी नही है मिनखा मे सिरताज बहादुर
बाकँ सिंगल मे भी घाटो, पण में भारत में साच्याणी
डवल टबल हा लिया वहादुर,लाल वहादुर,राजवहादुर

ठंडँ दिल में सें भी इवतो तेजी निकळी
राजाजी कँ भेजँ में सें भेजी निकळी
भेजँ सें तोतमिळनाड को नकसो निकळ्यो
भेजी में सें पाणचकँ अँगरेजी निकळी

डब्बै मे तो टाबरिया खातर गोळी विसकुट ल्यायो हूँ
थानै श्रामे कोई स्मर्गलिग की घडिया सी दीखै है के ?
ना-ना घडी-वडी ईमें कोनी है
,कुछ भी हो खोलके दिखावो
कैंता कैंता जाणं वै खुद रस्सी तोडी डब्वा खोल्या
डब्बै मे डब्बो, डब्बै मे घडिया निकळी
घडी देखता ही वामें सैं एक जणू भरकै किरोद मे
"झूठ बोलते हो" यू कैंतो कैंतो जाणं
मेरे सिर में ठाकरकै डडै की मारी
मैं मारी जोर सै चिलारी
हडवडा'र जद चेत हुयो तो के देखू हूँ (क)
सिरहाणै सै हाल हालकै सूटकेस ही
मेरै सिर पै श्रा पडगी थी
श्रौर एक ठेसन पै गाडी रुकी खडी थी
गाडी की छक् छक् तो बिलकुल नही सुणै थी
पण काळजो विया ही करयो धक् धक् धक् धक् २

सूटकेस न मैं श्रोज्यू सें लगा स्हिराणै
म्हारै ह्ाळी एक सीट पै एक जणू सूत्यो सूत्यो
अखवार वाचरयो, वीनै पूछ्यो–
क्यू भाईजी कुणसो ठेसन श्राई है या ?
मनै वडोदो श्रागो दीसै । वो झट वोल्यो–
"इवी वडोदो कठे ? वडोदो श्राणं में दो घडी पडी है

यूँ कहतो कहतो वो मेरै कानी देख्यो
'दो घडी पडी है ? के कहरयो है ? धक धक धक धक
इ नालायक नै बेरो है मेरै कन्नै दो घडिया है
डर, "भौत देर ठैरी ना गाडी
"यातो यू ही ठेरै कोई चेकिंग वेकिंग होरी होसी
"चेकिंग वेकिंग—? क्या की चेकिंग
म्हे तो देखो टिकट कटाकरकै वैठ्या हा !
"नही चेकिंग तो यूँ है, आजकलै कुछ लोग अठीनै
स्मगलिंग को धधो जोरा सै कर राख्यो है
ताज्जुब तो यो है क आज ई धधै कै मा
कई जणा तो पढ्या लिख्या, बिलकुल ही अपटूडेट बण्योडा
आज देस कै सागै कितणी कितणी गद्दारी कररया है ।"
ये ही है जो आज देस की अर्थ व्यवस्था नै बिगाडकै
लपट-वेईमान-स्वारथी वण्या
आपकी ही तिजूरिया नै भररया है
आज देस कै सागै कितणी कितणी गद्दारी कररया है ।"
वो ज्यूँ ज्यूँ भाषण झाडै, मेरै वैया ही छुटै पसीना
आपा भी की मूरख सै भिडगा इबकाळै
मैं छोरी छोरा कै खातर दो घडियाँ लेकर आयो हूँ
म नै आमै किसी तिजूरी भरणी है इब
पण नालायक, बाता बाता मे कितणी गाळी काडी है
पण काडो सा—आपा तो बोला ही कोनी
वो भाषण जारी ही राख्यो—

पण स्मगलिंग करवा हाळा को ही खाली
सासन और प्रसासन भी दोन्यू इतणा ढी
इवी इवी मैं या ही खबर वाचर्‌यो थो छ
क, एक जणैं पा दस हजार की घडिया प
जे मुरारजी देसाई की जगा आज मैं मन्नै
तो कहतो 'स्मगलर कै पैल्या गोळी काडो
ऐयाँ जे दस बीस जणा नै गोळी सै उडा
तो चोरी को यो धधो बिलकुल रुक ज्याग

यू सुणता ही मन्नै लागी, जाणैं तेरै गोठ
यो तो सुद्ध देस भगती मे—
सराबोर होयोडो ये भायण भाई थो
पण मन्नै लागै थो जाणैं वो मेरै गोळी र
सो मैं एँया सोचण लाग्यो, इबकाळै सै
सूटकेस कै मा मैं वो डब्बो निकाळकै
दोयू घडी समेत चालती गाडी कै बारै
के ईनै ही कहद्या भाया मेरै कन्नै दो घ
टाबरिया खातर ल्यायो हूँ
नही नही ई देस भगत न तो म्हणू वाजवी
अगर हाथ कै भी बाधा तो
एक घडी तो पैल्या सै ही एक हाथ कै र
दूजी नै दूसरै हाथ कै भी बाधा तो
एक और बच ज्यासी वीनै कठे बाधस्यां

मैं इब तक हड़मान चालीसो पूरो च्यार बार पढ़गो थो
हे बजरग बळी ! ये मेरी सूटकेस नै
ऊपर ऊपर सें टिटोळ कै ही चल ज्यावै
ईनैं भीतर सें न खुलावै !
ओज्यू सोची-आनैं पूछा
क्यूँ जी थे चा पीवोगा क नास्तो करोगा ?
या सीदो ही दस को पत्तो धरा हाथ में
पण ई सैं तो आकै ओर वैम हो ज्यागो
आपा तो कैता ही भट भट
एँया खोलागा जाणैं ई कै माई क्यू भी कोनी है'
फक् फक् फक् फक् २ धक् धक् धक् धक् २

इतणै मे ही वै आकरकै
म्हारै दडखीच्या सूल्योडै देस भगत नैं ही भकभोर्‌यो
"क्यो भाई साहब ये बैग आपका है क्या ?
'हाजी हाजी' करतो वो उठतो उठतो बैग नैं दबायो
खडयो हो'र बोल्यो—साहब कुछ इधर आइये
यो ही कुछ बातें करनी है-इधर आइये
'मुझसे बातें फिर करलेना, पहले अपना बैग दिखावो
एँया कहतो कहतो वो खुद खीच बैग नैं
भटक सैं खोल्यो तो बीमैं पाच-च्यारसौ घड़ियाँ दीखी
सूटकेस खुलवायो बीमैं
दस शराब की बोतल, पैंन नीनमो निकळ्या

सूटकेस की पॉकेट मे सोनै का विसकुट निकळ्या सोळा
विस्तर भडकायो तो वीमे
सव विलायती कपडा निकळ्या वोळा वोळा
जाकेट मे थी सोनै की छड पाकेट मे थी रुपै की लड
तकिय मे था दो ट्राजिस्टर पाच केमरा, साठ लाइटर !
वारै मनै देस भक्ति करतव्र पढाणिया
वार स्मगलिग करणै पै गोळी कढाणिया !
ग्रौर वडोदो दूर–कई ठेमन पैल्या ही
एक जगा गाडी रुकता ही
सव सामान वटोर सिपाही
देस भगत नै पकड–नारकै लेगा नीचै
ग्रर मैं जो इव ताणी थर थर काप रह्यो थो
सोचण लाग्यो-"ग्ररे यार तेरै कन्नै इतणी घडिया थी
तो तू ही दो–च्यार घडी मेरै विस्तर मे दवका ज्यातो
तो तेरै के घाटो ग्रातो
मैं तो कम सै कम दूणू राजो हो ज्यातो !"

⊙

लिछमीजी सैं अरदास

हे लिछमी चाची इतणी सी किरपा करिये
अन-धन सैं भण्डार भर्यो लोगां का भरिये
सुणी है क तेरी सुरसत सैं पटै कोनी
पण मेरै खातर वींसैं राजीपो करिये
(१६६१)

हलोहलो? विसणु पुर? कुण? हां लिछमी चाची
मैं सुरसत को बेटो बोलू हूं हाडी स
चाची, मन्नै तरै बिना श्रावडै कोनी
श्रा'र भतीजै नै सम्हाळ पैली गाडी स
श्रौर एकली फिरणै को श्रब बखत नहीं है
सो तू श्राती रिद सिद नै भी सागै ल्याये
सुरसत मा पूछे ना 'छोराणी सिद चाली ?'
तो तू वीनैं बात श्रापणी मना बताये
(१६६२)

जितणी जितणी लिछमी की महिमा मैं गाई
उतणी उतणी वढी देस कै मा मँगाई
घी चावळ, चीणी की तो के बात बताऊ
गींवा की वोरी भी सौ रिपिया मे श्राई

लिछमी चाची
घरा दिना सैं मैं भी तो ग्ररदास करूं हूं
तेरै दरसण खातर तो मैं खड्यो खड्यो 'क्यू' मे थकगो हू
ग्रौर पगा म बाई टा चालैं लागा है
मन्नै दरसण देणें की लवर कद ग्रासी ?
सुणी है क देवी'र देवता सीदा दरसण कोनी देवै
व कोई जग कै प्राणी में ही पिरगट होकै फळ देवै
तो ऐया की जुगत बठादे क
रिजव वैंक कै बडै गोरनर नैं मैं भी चाय पै बुलावूं
इस्णामाचारीजी सैं मैं जाकर सीदो हाथ मिलावूं
पीछै तो वस मैं ग्रर चाची।
सुपनै की सारी बाता होज्यावै साची

हां चाची एक वात सुणी है क
एक 'लोट की पीठ भूल सैं छपणी रैगी
ऐंया की ही एक भूल जे ग्रौर हो सकै तो करवादे
मैं मेरा दो दस्ता कागज का भेजू हूं
वापर भी ऐंया गळती सैं सौ सौ का सौ नोट छपादे
ग्रौर रही तो एक ग्रास कै गुड-सक्कर को कोटो ग्रादे
कोई परमट ही पटवादे !
कुछ तो हाथ दिखा भूठ्याणी चाची बणारी।

इवकै लागै है ई घर सै
रूस्योडी लिछमी चाची पाछी आगी है
यूँ तो रोज दिवाळी नैं दीवा चासा पण
मेरै घर मे जोत दिवाळी की सी इवकै ही जागी है
ई घर मे लिछमी चाची पाछी आगी है

वा भइ चाची, फूट्यँडै टँका का तवरा
फूट्यै हियै 'अयूब', भाग फूट्यै 'भुट्टो' नैं मॅमळा करकै
करमठोक 'चाऊ-माऊ' कै भेजै मे बस भेडाँ भरकै
'टरकी' नै टरका 'इरान' नै आँख दिखाकै
सठ 'मुकण' नैं सीख सिखाकै
'अमरीका' सै अड 'ब्रिटेन' नै बार घालतै नैं छोडघाई
अर तू मेरै घर मे आई
तो सारै बैर्‌या कै आगी सी लागी है
मेरै घर मे जोत दिवाळी की सी इवकै ही जागी है

चाची तू तो जाणै ही है
हज्जारा ही बरस बीतगा, रावण को पूतळो बाळता
'स्याति स्याति' कै नाम सदा जुद्ध नै टाळता
बरसा पीछै ही इवकै जुग कै रावण की मूँछ मरोडी
टागी देकै चित्त पटक पासळिया तोडी
माई मा हूदा देदेकै मिटा हेकडी
डुक्का ही डुक्का म बीकी स्याल उधेडी, हाडी फोडी
पाछै भी चाची तू कसर राखदी थोडी

सैंर इतरा म ही रांवरियें की
रांवरा कॅ हीमायतियां को सा करडू ठ निकळ भागी है
मेरॅ घर म, जोत दिवाळी की सी इबकॅ ही जागी है

चाची इब तूॅ आई तो है ही ई घर मे
लयॅ हाय ही अनधन भी भरदे पळ भर मे
सानॅ से भरदे सदूख
मैं भी इबकॅ एक खरीदूॅगा बदूख
मन्नॅ भी रांवरा को मूॅ काळो करणू है
मन्नॅ भी अन धन से मेरो घर भरणूॅ है ।

(१९६५)

'नर' नै कोई नी चावै है सै 'नारी' नैं चावैं है
नही 'दीवाळो' चावैं कोई सैं 'दीवाळी' चावैं है
मिटै देम को सो दीवाळो म्ह भी या ही चावा हा
म्हारॅ सागॅ सागॅ ही म्हे थारी खैर मनावा हां

परा—
लिछमी चाची का मन चगा
नदा नें ले डूब्या दगा

दिल्ली मे आदोलन होर्‌या
दुस्ट देस की लिछमी खोर्‌या

बढे मर्जे सै खूँटी ताण्यां
कामराज कमरे मे सोर्‌या
भागे हो, जद उडै पतगा
नदा नै ले डूब्या दगा

टिकतो छात्रा नै मरवाकै
सता पै गोळो चलवाकै
पण वो इब कैयां टिक्ज्यावै
कामराज को घर बळवाकै
झूठो हो झीजै है रफा ?
नदा नै ले डूब्या दगा

है चुनाव की ग्रोज्यूं त्यारी
उठो पार्टिया न्यारी-न्यारी
पण बीसा वरसा सै देखा
राज सुख्यारी, प्रजा दुख्यारी
स्वारथ साधै कई लफगा
नदा न ले डूब्या दगा

सै लिछमी नै ल्याणूं चावै
सै कुरसी अपणाणूं चावै
'घोसी-पत्र' लिखै नी कोई
सवी घोसणा-पत्र बँचावै
विना वात हो नया ग्रडगा
नदा नै ले डूब्या दगा

जगा जगा पै काळ पड्या है
मन्नी माइक पकड खड्या है
वडी मुसकिला सें विच्यापडा
कामराज का पग पकड्या है
पण पिरजाजन भूखा नगा
नदा नै ले डूब्या दगा

चीनी हो या पाकिस्तानी
नागालेंड करै मन मानी
देस राज की ढुमसुल नीती
करै उपद्रव कानी कानी
ढग हुया सारा वेढगा
नदा नै ले डूब्या दगा

देखो किसी क बिगडी भेजी
हिन्दी सें अकडै अँगरेजी
बा निरमळ सीतळ सुभाव पै
प्रिगटावै है खुद की तेजी
'टम्म' पुजावै, पूजै 'गगा'
नदा नै ले डूब्या दगा।

(१९६६)

लिछमी चाची आज रात सुपनै मे आई

भाई लोगो
आज रात मन्नै सुपनै मे साक्षात लिछमी जी दीखी
दिब दिग्गट करतो मूं अर वै च्यार हाथ
बो मुकुट अनोखो, और गळ मे कठो चोखो
एक बार मेरी भी आस्या लागी घोखो
एक हाथ मे कोइ रसीद की सी किताब थी
और दूसरै में थी चसती एक लालटण
खडयो डावर्योडो सो जद मैं कानी देख्यो
जणा हांसती ही वा बोली–
क्यूं मनै पिछाण्यो कोनी के तूं ?
बोली सुणता ही मैं बोल्यो–'लिछमी चाची ?
हां हां बेटा सागी ही हूं
मैं आरी थी जणा जिठाणी जी बोल्या था
बिस्सू से भी मिलकै आये
तो तू ऐया सुस्त सुस्त कैया होर्यो है, राजी है ना ?
'हां हां बैया तो बिलकुल राजी हूं चाची
सुस्ती तो यूं है क आजकल
एक चाय कै प्यालै सें चुस्ती आज्यावै
पण 'ब्लैक' की खरीद्योडी चीणी जदबी चा' मे पडज्याव

जद सारी चुस्ती ग्रोज्यूं सुस्ती होज्यावै ।
चाचा मुळकी बोली–मैं तो पैल्या ही जाणै थी
तेरै चाणी की ही तुम्मत होरी होगी
मातर ही मैं चीणी की 'परमिट बुक' सागै ल्याई हूँ
ोल तन किसणै कीलो को परमिट चायें'
[कहती वा 'परमिट बुक' खोलणनैं लागी
मैं भट टोक्यो
"नहीं नहीं चाची ये के परमिट ल्याई है मरवा देगी
काई थाणै थूणै मे तूं पकडा देगी
यो भी कोई देवलोक है ?
मिनख-लोक मे तेरै दसकत का परमिट कैया सिकरैगा
प्रठे देवतावा का नी–
परमिट पै खाली चोरां का दसकत चालै है
भूठा, लपट, दगाबाज, मक्कार चोर सै मौज मनावै
नक ग्रोर साहूकारा का काळजिया धक् धक् हालै है
प्रठे देवतावा का नी,
परमिट पै खाली चोरा का दसक्त चालै है ।

चाची बोली मैं जाणू हूँ मेरै सै भी ध्यानी है के ?
मेरे तो ज्यादा ग्रासै ही काम पडै है ।
धारो के है ? के तो बेटा
श्राज्यावूं तो ठीक, नहीं आवै तो कोई बात नही है
बुरो मना मानिये, बता पण

विना वात की वात

"देख म्हारलो भिंडियो इवकै जीत्यो ही है
गाव गाव मे गळी गळी की मोड मोड पै कुवा खुदाकै
वो घर घर मे खेत खड्या करवा देवैगो ।"

"देख्यो रै तेरै भिंडियै नै
म्हानै तो जीतणियां सारा भिंडिया ही भिंडिया लागै है
कुवा खुदाकै कुणसी जै जैकार करैगो
कई जणा की जिंदगानी को वेडो वैया पार करैगो
कूवा ही खुदवावैगो ना ?
पाच सात दस बीस लाख खा ज्यावैगो ना ?"

"तन्नै तो म्हारली पार्टी हाळा सगळा चोर दिखै है
मगर बात साची तो या है क
चोर ग्रोर वेईमाना नै सगळी दुनिया चोर दिखै है
तेरी पार्टी हाळा मे कुण सो चोखो है
खुशीराम खोखो है, धन्नामल देतो ग्रायो धोखो है ।"

"देख ग्रगर यूं व्यक्तीगत नावा पै ग्रावै
तो मैं थारा दस हजार सै ऊपर नाव गिणा देवूं गा

थारै तो सब चोर लफगा, बेइमान ही बेइमान है
खाली सभी आपको ही घर भरणू जाणै
न तो त्याग करणू जाणै
नी आजादी कै खातर कोई मरणू जाणै"

"हम्म रै थारै ही लोगां कै कारण टिकरी है इवताणी आजादी
किया कियां का सत्यानामी धरती पै है
जान यो भी बेरो नी है आजादी कद आई अर ईनै कुण ल्यायो"

"तेरो बाप ल्यायो आजादी अर कुण ल्यायो
जाण बौनै या रस्ते मे बैठी मिलगी
लाखा लाखां लोगा का बलिदान हुया है
आजादी का मालिक बणर्या है ये घोव"

"देख अगर जे गाळ भेळ पै आयो ना तू
ठीक नही रैवैगी मैं पैल्या से कैद्यूं
इनकै पयू भी बोल्यो ना तो तेरी जीब कटा देवूंगा
तेरी आख फुडा देवूंगा तेरी टाग तुडा देवूंगा !"

"हम्मै पैल्यां का भी तेरा
सौ पचास तो कतल कर्योडा टंगर्या है ना ?
सरम नही आवै साळै नै !"

"ओज्यू वै ही गाळ, देख तन्नै ओज्यू कू
क्यू तू तेरी मौत बुलावै

इबकै दिल्ली सें भिडियै नै श्रावणदे तू
बीच बजारा तेरो टाट नही कुटवाई
तो बस समजो मेरी मा अजवाण न खाई !"

"ले भिडियो तो के तेरो फदमी श्रावैगो
तन्नै तो मैं पैल्या ही सो मजो चखाद्यू !"

कहतो कहतो–एक ताणकै भापट मारी
पैल्या तो भापट पडताही
भिडियै को साथी मारी जोर सें चिलारी
पण बो भी हिम्मत नी हारी
एक कौल मे मार्‌यो डुक्को,
इतणें मे ही पड्‌यो एक गुद्दी मे मुक्को
दो‧यू होगा गुत्थम गुत्थी
पटकी मार पछाडयो नीच, पडयो पडयो बो जरडी भींचै
पाच-च्यार रस्तै चलता जद श्राकरनै छुटवाया
अर बानै लडण को कारण पूछ्यो, तो वै बोल्या
"नही नही रै-म्हे साच्याणी थोडो लडर्‌या हां
म्हे तो दोन्यू सागे सागे चाचो और भतीजो ही हा
म्हे भी इबकै राजनीत मे श्राण खातर
भेंतर कै चुनाव मे खड्‌या होएन दोन्यू
भासण देणें की लडणें की पैल्या सें प्राटिस करर्‌या हां
साच्याणी थोडी लडर्‌या हा !

२-४-७१

बिल्ली और कागलो

एक विरछ पै एक कागलो
जोरा सै चाच मे पन्ड कै रोटी को टुकडो खार्यो थो
और विरछ के नीचे बिल्ली बैठी बैठी
ललचाई निजरा सै ऊपर नै देखै थी ।
"कौवा ताऊ, थारो गाणू सुण्यां भोत ही दिन होगा है
थे भी कितणू सुन्दर गावो, सुर मे गावो"
चतुर कागलो बिल्लो की ये बाता सुणकै
काड चाँच सै रोटी पज्यै मे दुबकाई
पाछै बोल्यो-रै मरज्याणी ।
घणा घणा भोदू बणाचुकी तू म्हानै इतणा दिन ताणी
इब मैं भी तेरो हूँ ताऊ, मैं कोनी बाता मे आवूं
मैं ईसप की सब कहाणिया बांच बूंच कै
रोटी खावणनै बैठ्यो हूँ

●

पाती बवई सै–

पिरिये !
मेरो फिकर मना करिये
अँया मैं बिलकुल राजी हूँ !
पण के राजी हूं, हां समझो बस राजो सो हूँ
बिना तेलकं मिरच मसाला की छूँवयोडो
फीकी फीकी बेसुवादमी भाजी सो हूँ
जागूँ जद सैं सोवूँ जदतक फिर वो करू सरणाट होयो
ज्यूँ कुम्हार को चाक फिरै, तेली की घाणी
ना रोटी खाणूँ सूजै, ना पीणूँ पाणी
दिनगे पैंल्यां उठ लाइन सैं नित्त करम सैं निवरत होवूँ
लाइन मैं न्हाऊ, लाइन सैं गावा धोवूँ
खाणूँ पीणूँ वस मे चढणूँ सब लाइन सैं
ये बाता पढकै तू भी राजी होवैगी क
मैं लाइन पै ही चालूँ हूँ, वेलाइन कोनी होयो हूँ
रही बात खाणै पीणै की, मैं जाणूँ हू के खाऊँ हूँ
जणै जणै को माथो खातो और खुवातो
झूठो साचो मोगन खातो, बस मे चढकै धक्का खातो
आफिस मे पूँचूँ जी पैंल्यां डांट डपट का लाडू-भुजिया
मनें मालिक लोग खुवावै !

घणा ओळमां खाता खाता मेगो घणूं पेट भर ज्यावै ।
बडो मुमकिला सें मे ये मव खातो खातो और पचातो
जद गद्दी पैं पाछो आऊं
तो कमरै को कूणूं कूणूं मनैं खाणनैं पाछो आवै
और रसोई तो यूं लागै जाणैं बा बटका भरती हो
सोगन खाकै तनैं साची वात लिखूं हूं क
मन तो ये चौकै मे--चूल्हे कै आगै
घमघूला सा मस्टडा सा उकडू बैठ्या
महाराज फूटी आख्या भी नही सुहावै
फलको बेलै जणां चूडियां की खनखन की जगां—
भटडभट चकळो बाजै
कठे एकतूं ? मैं जाणूं हूं फूल्योडै फलकै नै खीगपैसै ठाता
फलकै मे मैं भाप निकळकै एक आगळी कै भिडज्याती
तो बीकै सागै ही यूं सी सी की सी सिसकारी आती
अर ये वळना खीग ही नी
वळती लकडी नै हाथा सैं चूल्हे मे आगै सरकादे
तोड्यो, वेल्यो, पटक्यो, सेक्यो और चोपड्यो
खट खट फट फट करता-करता
पाच मिट मे ये पद्रा आदमी जिमादे
अगर वीच मे दाळ-साग कोई मागै तो चमचो ठाता ऐंयां लागै
जाणैं कोई चमचैं, की सिर मे मारैगा ।
वा हाथा सैं रोटी खाणैं को धरम है ? पण जोर के करां ?

नई बीमारियाँ

भाई लोगो !
ई जुग मे भी कितणी कितणी नई-नई
ग्रर घणी भयकर सी बीमारियाँ चाल पडी है
जॉ बीमारियाँ को इत्र ताणी
डाक्दरां न भी बेरो कोनी पट्यो है !
वा मे सै कुछ का इलाज है, ग्रर कुछ का इलाज ही कोनी
नई किसम की ये बीमारिया मैं जाणू हूँ
स्यो थानै दो-च्यार गिणाऊँ—
एक भयकर रोग नयो निकळ्यो 'लवोरिया'
ई कै रोगी मे गाडी मे बस मे चाहे जठे सडक पै
सुद-साबळ चालता-चालता चाणचकै ही लव होज्यावै
ग्रोर देखता ही कोई नै यो लवोरिया ले भाज्यावै
पैल्या पहल्या ई को रोगी सजधज रोज सिनेमा जावै
तिरछी निजरा सै देखै, हासै मुस्कावै
रोग बढ्या पाछै यो खुद ही बिलकुल घुघ्घू सो हो ज्यावै
ग्रोर दूसरै को बोल्योडो भी ईनै दर नही सुहावै
दस दस दिन सैं न्हावै डाडी बाळ बढावै
कमरै मे चुपचाप बठकै लवलैटर लिखणै कै खातर
नया-नया मजमून बणावै, लिख लिख फाडै,

फाड फाडकै ओज्यू लिख लिख ओज्यू फाडै !
ओज्यू लिखै ओर बांच तिरपत हो ज्यावै
'इवनिंग इन पेरिस' सैं मुलिफाफो चिपकाकै
तपत-जून की मज दोपारी मे खुद पोस्ट करणनै जावै
ईकै रोगी नै रोजीना अखबारा मे आता-जाता
क्रीम लिपस्टिक नई नई कीमती साडियां ओर चोलियां-
का विज्ञापन बिलकुल ही पढणा नी चाये
अर ये रोगी कोई चूडिया की दुकान कै
स्हारै सै होकर कै भी बढणा नी चाये !
मा बापा को आको व्या' करणै को आस्वासन ही खाली
कुछ दिन तक रिलीफ दे सकै !

एक रोग कुछ बरमां पल्यां ही चाल्यो है
जीको नाम मण्यो होमी थे—"कुर्मीसिया"
बया तो यो रोग घणो 'कोमन' कोनी है
पण सारै का मारा नेता
कुर्सीसिया' रोग सैं ही पीडित पावैगा
ईकै रोगी नै तो खाणू पीणू सोणू हँसणू रोणू
क्यू भी चोखो नहि लागै है !
रात'र दिन बस कुर्मी की ही एक भरमना ल्यागी रै है
ई रोगी कै आगै चाहे बैंच घाल्द्यो
टेबिल रखद्यो, माचो धरद्यो
पण, ना ना, ईनै त्द तो खाली कुर्सी मिलै

मो- र- नियो जलमटो तुर पावै, रद ग्राणंद ग्राव
ई रै रागी न याळी में गाणूं—
पर पाणै प रोणूं नहीं सुहावै
गारै नि ई रै दिमाग में कुर्सी, कुर्सी, कुर्सी, कुर्सी
जाणै मिली नहीं ईं रोगी—
कुर्सी गालर घणा तापडा पीटै अणगिणा जाळ बिछाव !
अर जाणै मिलरी वै रोगी—
कुर्सी प रठया बैठ्या ही मरणूं चावै
ई पै रोगी न सच्चाई नेक नियत ईमान धरम
कर्त्तव्य-परायणता सेवा ग्रर देसभक्ति मैं
बिलकुल बिलकुल वचणूं चाये
दस तोळा तिकडम का बीज,
झूठ कै मत मे घोट पीस कै
ग्यारा मासा भासण-भसम मिला ऊपर सै
ग्राठ बद झूठा ग्रास्वासन की निचोड कै
छै तोळा दस मासा मक्कारी की पिस्टी मिला हाथ स-
ठीक च्यारसौ बीस गोळिया बाध
एक खादी कै कपडै मे लपेटकै
हाथ जोड कै बीस बार 'गाधी गाधी' जी करणूं चाये
ई सै वां गोळया मे कुछ पावर ग्रावैगो
पाँच पाँच मिंट कै फासलै दो-दो गोळी
श्रौसर कै दूध कै साथ मे खातो रैणै सै रोगी नै
जीवन-भर ग्राराम मिलैगो !

एक भयकर और रोग है
पण वो जानी बडै बडै स्हैरा मे ही है
गावा म यो रोग इत्ती फैल्यो भी कोनी
अर स्यायद फैलै भी कोनी
बड वड स्हैरा मे ही ई को उठाव है
नाम रोग को है 'रेसीटिस'
ई कै रोगी नै रात'र दिन
घोडा घोडी ही श्राख्या कै श्रागै रेस लगाता दीखै
लाख लाख रोगी बाडै मे भेळा होकै
घोडा घोडी पै ही लडत जडाता दीखै
श्रा रोग्या नै चाये खुद कै–
सागी मा-वापा ताणी का नाम भला ही याद मना हो
पण घोडा घोडी की दादी-दादा, नानी-नाना
पडनानी, सडनानी, लक्कड नानी तक की
सारी पीढी उथल सकै है।

'फेयर हैवन' को वाप 'रोज श्राफ जिब्राल्टर है।
अर वीकी मां 'टोफा'
डनमार्क कै शपू कै वेटै की वेटी की वेटी है
यो रोगी साथी सगळियां तक का नाम भूल ज्यावै है
पण हाइड्रोप्लेन, श्रमरफी, समाजमिच,
वक्पामर, मल्टीजंम, कदे ही कोनो भूलै
श्रा रोग्या की दीतवार से शुक्रवार तक

जनरल कहीणा' ओज्यू भी ठीक रवै है
पण थायर आता ही आपै मगजी को प्रकोप होज्यावै
वी दिन तो आनै घरवाळी भी बिलकुल घोडी सी लागै
छम छम करती चाय प्यावती,
लागै जाणें फस्ट मावती ।
छोटा छोटा टाबरिया सैं भळळ चडेरा लागै भागै
वी दिन तो आनै घरहाळी भी बिलकुल घोडी सी लागै
आ रोग्यां नै सब सैं पैल्या-
पांच-सात गद्दा-गद्दी बपराणां चायै
अर कुछ दिन वामैं ही मन बहलाणा चायै
अर ये रोगी कोई निवासी या कुराव मे
बिलकुल ही जाणा नी चायै, ईं सैं रोग 'रिलैप्स' हो सकै ।

पाछै भी आ सब रोगां का
पक्का पक्का नहीं सूजर्या है उपाय, क्यूँ ?
लागी नाहीं छूटै रामा चाहे जिया जाय ।

५-७-६९

⊙

रामायण मे म्हाभारत

कागरेस के घाट पे, भइ भँयन की भीर
इन्द्राजी चदन घिसे, तिलक करे गिरिवीर
निजलिंगप्पा से करे, श्री रेड्डी अरदास
मैं आया हरिभजन को, क्यो दी मुझे कपास
राष्ट्रपती ना बन सका छूटा ससद–काम
दुविधा मे दोन्यो गया, माया मिली न राम

निजलिंगप्पा तेहि पुचकारा
तू नहिं हारो मैं ही हारा
अब तुम धीरज धारहु भाई
सँमरथ को नहिं दोस गुँसाई
अनुमासन तोरेहु जिन लोगा
ताहि के वे अब भोगहुँ भोगा
तेहि अवसर पाटिल तहँ आवा
बळतो मे पूळा सरकावा–

दादा मोहे फक रूदीन खिजायो
मौसौं कहत जाहु रेड्डी सँग क्यो नहि वाहि जितायो
दादा मोहे फक्रू भौत खिजायो

निर्जलिंगप्पा जी करो इनका काम तमाम
दोयू हाथ उलीचिये यही सयानो काम

यू कहि पाटिल अति भरकावा
इधर इन्दिरा गुट हरखावा
सत-साधुओं की ले टोली
निर्भयता से ऐसे बोली—

मेरे तो जगजीवनराम दूसरा न कोई
जाके संग फखरुद्दीन रक्षक है सोई
अर्जुन लख राजी हुई, पाटिल लख रोई
कम्यूनिस्ट लिये संग लोक-लाज खोई
अब तो बात फैल गई जानत सब कोई
मेरे तो जगजीवनराम

जग जीवन कहे का कहु तो रा
अब, दास तू मानहुँ मोरो
मात, मान मन मे मत सरा
जारहुँ सिंडीकेटी लरा
तोरी विपदा जाय सही ना
क्यू भइ, फखर ठौर कही ना

फखर ने निज नाम सुनि झुका दियो तब माथ
मैं जैसो भी हूँ प्रभो, सदा तिहारे साथ

क्यूँ—

मैं निरगुनिया गुन नहीं जाना
एक धनी के हाथ विकाना
मैं निरगुनिया

तेहि अवसर चव्हाण चलि आये
बीच-बीचाव उपाय बताये
कुछ तुम झुक, कुछ उन्हे झुकावहु
ताहिते सब सकट टलि जावहु

दोनो तजौ उछालना आपस मे यह कीच
मैं भी क्या बच पाऊगा दो पाटन के बीच
मिलकर करनी अपन को अपनी पार्टि अजेय
बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय

महा-समिति प्रस्ताव सुनायो
इन्द्रा दल मन मे हरखायो
आगे मत करना कोइ रोळा
अब तक की सब घोळ मथोळा

पास हुयो प्रस्ताव यह हर्सित इन्द्रा ग्रुप
पाटिल पियरे परि गये, निजलिंगप्पा चुप्प
दुइ देसाई चल दिये, कामराज दिये रोय
निजलिंगप्पा झूरते, होनी हो सो होय

निजनिगणा मन्हु पुराग
मल लाग पुनि माजहुँ लारा

मेरो मव पुरुषारथ मानो
विपति बँटावन या अवसर बिन गर्हुँ भरोसो मानो
गुन देगाई, मोपर मोहि करेहुँ बदा बिधाना
महा गमिनिमि तज्यो माज मैं राम गुभग मो भाना
श्री गुनाढिया जपुर जे तुम जाहु अपने घर को
मैं अर्जुन को मोग मार अब बांधहुँ निज बिस्तर को

गिरी भरोसे बैठो मत ना मुजरा देय
जानो भूँगरो पालणूँ ता रो हो फल देय

इतिश्री रामायणमे महाभारत कांड सम्पूर्णम् '

२६-८-६६

©

होली को रग, मन की तरग

काव्य कला वरणन करू, ले होळी को रग
प्रथम मनाऊ इन्दिरा, जगजीवन कै सग
जगजीवन कै सग सग फकरू नै ध्याऊ
श्री दिनेससिंह अर चव्हाण की अस्तुति गाऊ
सुवरण औसर देख माखियाँ नै काढी ना
पच देवताओ ! थारी कीरत बाढो ना ?

राष्ट्रपती की दौड मे जीत चुकी जो रेस
गद्दी से पटक्यो पकड देसाई का केस
देसाई का केस, दूक कर कागरेस का
कई मतरी, उपमत्री पटक्या सुदेस का
नारो न्यारी बणी सिंघ दो होगा साथी
देख सिंघणी रूप भागगो डरकै 'हाथी'

तेरो पावर देखकै वदली सारी चाल
झुकगो तुरत सुखाडिया, रुकगो बसीलाल
रुकगो बसीलाल, सभा तू नई बणाई
कटगा, गुप्ता, लिंगप्पा, पाटिल, देसाई

सोसलिज्म को झण्डो लेकर देती फेरी
छोड अहमदाबाद बबई जाती ठेरी

यू० पी० नें पीके प्रथम चरण जमाया आय
आगै पूंच बिहार मे धरया दरोगाराय
धर्या दरोगाराय, भूल कै बहाणा बाणा
चेप काळजै कै रारया जम्मू-हरियाणा
तू बिरोधियां सं निधडक हो लडती आई
पण भगता की भीड सदा तू पडती आई

ग्यारा वरसा तक कर्यो थोडो भौन रिलैक्स
एक भगत थो भू नगो देणू इन-कम-टैक्स
देणू इन-कम-टैक्स बात जद चौड आई
हे इन्द्रा बाई, तू ही तो आडी आई
'काम काज मे भूल्या, कै कै ध्यान धरै ये
जग को पेट भरै क टैक्स का फाम भरै ये !'

निजलिंगप्पा अर अतुल, देसाई मिर ताज
कान्हो जी पाटिल सहित, कामराज म्हाराज
कामराज म्हाराज, नाम प्रभु को जपरया है
पचभूत होकर भी पचाग्नी तपर्या है
दल बदलू सब जीव रदै आवै अर जावै
तारकेश्वरी सिनहा माया सी भरमावै

बाई तेरै कारणै होळी उडी गुलाल,
लाल लाल रँग मे रँग्यो इब आखो बगाल
इब आखो बगाल रग की हाडी फूटी
काळा मूडा हुया और पिचकारी छूटी
गुडा है जमराज क निरदोसी नै फासी
बाई, तू हाँसरी समझ कै इब भी हाँसी

लूटमार हत्या घणी आगजनी हडताळ
बद और घेराव है वाह रे वाह बगाल
वाह रे वाह बगाल, गैस का गोळा छूटै
लाठी भाला बरछी चालै अर बम फूटै
कवि भी आया है ओ सब आया डर-डरकै
इश्योरेंस का एक्सीडेंटल फार्म भरकै

हवन हुयो बगाल जद धवन दिखाया हाथ
राष्ट्रपती सासन कर्‌यो इक झटकै कै साथ
इक झटकै कै साथ नया ही रँग खिलर्‌या है
साग-पात की ज्यू घर घर मे बम मिलर्‌या है
इब तो लागी दीखै है कुछ घाला मेली
गुडा वण कीडियाँ खायगा गुड की भेली

२०-३-७०

मैं भी जा'र चाँद पै आयो–

मैं सोचै थो, जे ई आमस्ट्राग कै सागै
वठे चाँद पै जाणै खातर
कैयाँ जैयाँ मेरो भी चानस आ ज्यावै
तो बस समझो घणूं घणूं आंणद आज्याव
सात पीढियाँ तक को दुख-दाळिद धुप ज्याव
इया सोच कै एप्लीकेशन एक ठोकदी
बस एप्लीकेशन जाणै की ही देरी थी
ऐंयाँ की पसनलिटी अमरीका मे भी बानै कठे मिलै थी ?
एप्लीकेशन ग्राट हो'र भट पाछी आई
अर डिटेल्स सब मागै ल्याई !
पण सै सै पैल्या तो वाइफ टाग अडाई !
थानै मेरी सोगन है जे—
ऍयाँ की बाताँ मूड मे भी घाली तो
अगर चाँद पै ही जावै तो जाश्रो कोई बैरी दुश्मन
थे क्यूं जावो ?
छोटै सै चाँद पै इया कोई पाँच-च्यार थे
सागै चड्डू होर्‌या हो के ?
थे कहर्‌या हो जाणै आणै मे सारा नौ दिन लागैगा
तो रस्तै मे यू अधर लटकता थानै कुणसा होटल मिलसी

नौ दिन ताणी के तो खावै अर के पीवै, कैयां जीवै ?
ऐंयां ही थे घाल उलारो त्यार होयगा
आगै पीछै की ये क्यूं तो सोची होती
अठे लैरनै जीवा मे के बाकी रवै ?''
मैं समझायो—
देख बावळी बाता नै तो छोड, चांद तो भौत बडो है
धरती सो है ।
तीन च्यार नी लाखा लाखा उतर सकै है, हिम्मत चाये
रस्तै मे खाणै पीणै को सोणै और सास लेणै को
भौत जोर को इन्तजाम अमरिका कर्यो है
स सें वडो बात तो या है (क)
अमरीका कै सागै सागै
मैं भी तो आपणै देस को नाम करू गा !
बठे पूंचता ही सोनै का बोरा अर गोजिया भरू गा !
फिकर मताकर सात पीढिया तक को दाळिद दूर करू गा !

बडी मुसकिला सें यूं वाइफ नै समझाकै
अमरीका की टिकट कटाकै
राकेट मे बैठकै ह्यूस्टन सें उड भाज्यो
उडता ही बोल्यो—रे भाईडो धीरै ल्यो ये
कठे भिडाकै मरवायोगा !
मैं तो भाया जोस जोस मे थारै सागै आगो
समजो मेरो राम निक्ळगो !

इब थे मन्नै पाछा ही धरती पै छोडो
धरती माता सै एंयाँ नातो मत तोडो
और नही तो मेरै पै ही दया-भाव प्रिगटावो थोडो
मन्न तो थे पाछा ही धरती पै छोडो
रै थे ई नै पाछो मोडो !

रै सुणर्या हो क नही थे सै ही बैरा होगा ?
रै मैं मेरी वाइफ को इक्लौतो पति हूँ
म्हारै भाया मर्याँ बाद मे बैया कोनी होवै
जया थारै होवै !
चाहे कोई कितणी ही 'जेक्विलीन कैनेडी' होवो
सब सीता-सावत्री होवै
म्हारै भाया बैया कोनी होवै जया थारै होवै

हे सतवती सीते देवो !
तेरै राम नै तीन-तीन रावण हडकै ऊपर लेज्या है
तेरै चौथ कै व्रता मे बळ हो तो तू पाछो बुलवाले
म कुछ जस कै स्वर्ण-मिरग कै पीछ पीछै
तनै एकली छोड ह्यूस्टन भाज्यो आयो
मन्नै के बेरो थो ये तीन्यू अन्याई
मेरै हडण खातर ही यो जाळ बिछायो
मेरै खातर ही राकेट मारीच बणायो
हे सतवती सीते देवी,
कहया जया मनै छुटाये, मन बचाये !

रैं थे ईं की मोरी खोलो
मैं मेरो चसमूं'र घड़ी नीचै पटकूं गा
टावरिया की वानर सेन्या नैं यूं पतो लगावण खातर
मेरा कुछ ता चिन्ह मिलेंगा !

घड़ी देर ताणी तो वैं मन सुणता रह्या ध्यान सैं वाता
पाछै वोल्या–ए मैन, कीप साइलैंस, चुप रहो
अदरवाइज हम तुमको नीचैं पटक जायेगा
इतणी कल्डी धमकी सुणता ही बस मैं तो मुरछित होगो
और तीन दिन वेहोसी मे पड्यो बिताया
पूंच चाद के कन्नै सी वैं मनै जगाया
धीरज ध्यावस घणूं बँधायो
और टैकनीकल बाता मे—
मन्नै के करणूं है ? वै बैठकै बतायो !
मैं वोल्यो–नहो यार
थे इतणूं के कमजोर समज राख्यो है मन्नै ?
पण आपणै राकेट का पुरजा सगळा ठीक काम कररया है ना
कोइ गड वड तो कोनी होईं ना ?
हाँ तो भाया टैकनीक थारी तो है ही
इब तो मेरो भी माथो कुछ काम करै है
सो आपा चाद पै उतरा, जीकै पैल्यां
मोरी मे सैं एक वास लटकाकै पैल्यां
देख लेवा क वल्डो है क गिजगिजो है वो

पण आपा वास तो वठे से ल्याया ही कोनी
कोई भाठो ढीढो ही पटक कै देखल्यो ।
'तुम अपना यह टेक्नोलोजी अपनी पाकिट मे ही रखो'
'जाण दे भाया, अगर गिजगिजो निकळ्यायो ना
थे तो मरोहिगा, मन्नं भी सागै मारोगा ।'
'क्या गिज गिज गिज गिज करता है
अपना 'ईगल' अभी मून पर लैंड करेगा'
अभी चाद पै उतर रह्यो है
मेरै सागै आर्मस्ट्राग ही थो इबकाळै
वैकी नाडी एक मिन्ट मे चाली सिरफ एक सौ छप्पन
मेरी अगर नापता गिणता
कम स कम मिलती तो तीन सौ बारा मिलती
अर दोन्यूं हाथा की गिणता
तो छै सौ चोवीस पावती

उतर चाद पै पैल्या तो देखियो नजारो
आमस्ट्राग खोलकै खिडकी
माटी को बोरो भर ल्यायो !
मन्नं बोल्यो उटरो, उटरो, तुम भी उटरो
मैं बोल्यो-रै के उटरो उटरो कररयो है
मेरै तो भीतर बैठ्यै कै सगळो सार समझ में आगो
मैं तो भाया तन्नं साची बात बता द्यू-
चादी-सोनै कै चक्कर मे नाम लिखायो थो आएँ मैं

चुनाव—मुक्तक

ा भाडा कर दि दिया ना आखिर तिरिया हठ पै आकै
पटकी कर ही दी ना वम आप्हाळा नै छिटकाकै''
ोको ही दोस देखर्या कुछ तो दोस बतावो वामे
ीनैं बदनामी थाई, फोरेन मे, सग्गै–सोया मे''

राष्ट्रपती कै ई चुनाव मे कुण के बोल्यो–
निजलिंगप्पा बोल्यो—रैड्डी रैडो रैडी
गिरि बोल्यो–क्यू गिरी गिरी के प्यारी वेटी
इंद्रा बोली—नही इबी उठरी हूँ डैडी

"क्यू जी सुणनै मे आई थी ई चुनाव मे
पंद्रा सोळा खड्या हुया के सबी गुणी है"
"भई गुणी और निगुणी अगुणी की बात नही है
सब आपापकी आतमा की आवाज सुणी है

जिया दादरा ठुमरी टप्पा
मोहिन जोदडो और हडप्पा
वैया ही मनै दिखर्या है
देसाई, पाटिल, लिंगप्पा

पण आपा बास तो वठे से ल्याया ही कोनी
कोई भाठो ढीढो ही पटक कै देखल्यो ।
'टुम अपना यह टेक्नोलोजी अपनी पाकिट मे ही रखो'
'जाण दे भाया, अगर गिजगिजो निकळ्यायो ना
थे तो मरोहिगा, मन्नै भी सागै मारोगा !'
'क्या गिज गिज गिज गिज करता है
अपना 'ईगल' अभी मून पर लैंड करेगा'
अभी चाद पै उतर रह्यो है
मेरै सागै आर्मस्ट्राग ही थो इबकाळै
वैकी नाडी एक मिन्ट मे चाली सिरफ एक सौ छप्पन
मेरी अगर नापता गिणता
कम स कम मिलती तो तीन सौ बारा मिलती
अर दोन्यूं हाथा की गिणता
तो छै सौ चोबीस पावती

उतर चाद पै पैल्या तो देखियो नजारो
आमस्ट्राग खोलकै खिडकी
माटी को बोरो भर ल्यायो !
मन्नै बोल्यो उटरो, उटरो, तुम भी उटरो
मैं बोल्यो-रै के उटरो उटरो कररयो है
मेरै तो भीतर बैठ्यै कै सगळो सार समझ मे आगो
मैं तो भाया तन्नै साची बात बता द्यू-
चादी-सोनै कै चक्कर मे नाम लिखायो थो आणै मे

मनै के वेरो थो ये ही धूळ काकरा माटी भाठा अठे मिलेगा
धूळ खाणनै तो दुनिया ही भौत बडी है
इब तो भाया पाछा चालो–
पाछा चालो !

१४-६-७०



भाषण

भाईजी, मैं दस दिन सै रोजीना थारा भाषण सुणर्यो
पिछल नौ दिन ताणी तो थे
बिना घडी कै एक एक घंटा ताणी पूरा ही बोल्या
मगर आज थानै पूँणी दो घंटा लागी, के कारण है ।''
''कारण यार अजीब भौत है
मैं भाषण देणें सै पैल्यां एक इयाँ की गोळी मूँडै मा ले लेतो
जीनै पूरी चूसण मे यूँ साठ मिंट लागती मन्नै
जद मूँडै मा गोळी बडे खतम होज्याती
मैं भी भाषण सामट लेतो
बी गोळी की जगाँ भूल सै
आज मनै वाइफ ब्लाउज की बटण देदो
जीनै चूस चूस उखतागो या तो क्यूँ ही पिंघळी कोनी
बोलो ऐया टाइम को के बेरो पटै ।''

छोरो देखण गयो साथ मे—

मेरो कोई एक दोस्त है
वो कोई आपकी लाडली छोरी खातर छोरो देखण
समझदार समझके मनै भी सागै लेगो
बो रस्तै मे मनै बतायो छोरो डाक्दरी पढर्‌यो है !
रूप रंग घर बार सभी बिलकुल चोखा है
बात चीत भी बैया सब फाइनल होगी
पण मैं सोचूं हूँ क
थारै सैं 'अप्रूव' कराकै फाइनल सम्बन्ध करांगा

बात दोस्त की सुणकै मै—मेरै दिमाग मे प्रश्न बणाया—
क समझदार होण कै नातै आपा के के प्रश्न करांगा
'कै भाई हो ? अर कोई भाणा तो कोनी
घर मे कोइ लूला-लंगडा काणा तो कोनी
थारी माताजी कै इब कोइ और नया आणा तो कोनी ?
डाक्दरी मे किती पढाई अब बाकी है ?
आटो चक्की सैं पिसकै आवै ? या घर मे ही चाकी है ?
पूज्य पिताजी के करर्‌या है ?
थारै घर मे इबकै कुण चुनाव लडर्‌या है ?

थारी माताजी को कँया को सुभाव है ?
स्याल प्रकृति है याकि ताव है ?

पढलिखकर नौकरी करोगा ? तो
अस्पताळ मे जीनैं सिस्टर बोलोगा—
बीनैं सिस्टर ही मानोगा ना ?
म्हारी बाई नैं थे घर मे होम मिनिस्टर मानोगा ना ?
ब्या होयाँ पीछै थे सागैं ही राखोगा ना छोरी नैं
या कोई पूँचकै विलायत घर मे घाल्लोगा गोरी नैं ?
डाकदरी मे चीराफाडी सीखो है क दवाई देणी ?
थानैं भी आज्यावैगी ना-अस्पताळ मे बैठ्या बैठ्या—
कुण सैं रोगो सैं यूँ फोस किर्यां कै लेणी ?
ठीक होवतैं रोगी नैं थानैं भी आज्यागो ना म्हीना तक उळजाणूँ
अर कुछ जाळी बिल वणा'र-झूठो साचो ही भत्तो ठाणूँ ।
अस्पताळ सैं ल्यार दवाई बेच सकोगा ना वजार मे ?
डबल डोज कोरामिन की दे द्योगा ना उतरी बुखार मे ?
कोरो निमक बताद्योगा ना हाइब्लड प्रैसर कै मरीज नैं ?
सरबत ही सरबत प्याद्योगा ना रोगी नैं डाइविटीज मे ?'
बस ये ही सैं प्रश्न पूछ कै आपा फाइनल करद्यागा ।

गाडी सैं उतर्या सीधा ही न्हा धोकैं कुछ खा पी करकैं
छोरो देखण चाल पड्या म्हैं
एक होस्टल कै कमरै मे छोरो एक किताब पढर्यो थो—
आदो सूत्यो—आदो वैठ्यो

उठ'र खड्यो हुयो अर बोल्यो-'आवो आवो बैठो बैठो !'
म्हाने बठै बैठणै की फुरसत थोडी थी ?
मैं तो खड्यो खड्यो ही बोल्यो—
'बैठण नै थोडी आया हा, बैठण नै तो ओज्यूँ आस्या'
म्हे थानै देखण आया हा
म्हानै तो म्हे पूछां मो-सो बात बताओ'
छोरो आख फाड कै कुछ गुस्सै सै मेरै कानी देख्यो
बीको गुस्सो देख्यो तो मेरो दिमाग भी चक्कर खागो
पूछ यो तो चावै थो–थे कितणा भाई हो
अर मूंडै मे सै यूँ निकळी–
थारै घर मे थारै कितणा पूज्य पिताजी है इबताणी ?

छोरो मन मे सोचण लाग्यो—
आछ्यो बजर लठ आयो है देखण खातर
मैं झट बोल्यो-माफी चावूं—
मूंडै मे सै अकचूक सी बात निरळगी—
'क्यूँजी आजकलै तो मिनखां का भी—
दिल-दिमाग का अपरेशन होवण लागा है
थे भी ये अपरेशन करणा सीख्या है के ?
थानै भी भीतर सैं कोईका दिल-दिमाग कुछ दीख्या है के ?
सुणी है क कोई अफ्रीका को एक डाक्दर
एक काळजो काढ दूसरै कै चेप्यायो
म्हाटो भौत सितम को ह्ी यो काम कर्यो सा

मन्नै तो ये वाता वाहियात सी लागी
दोन्यूँ कानी का काळजिया काढ्योडा जद फद फद कूदै
तो कुणसी कुणसी नाडी नै कंया कंया क्यासैं डाटै ?

'क्यूजी दाता को तो सैंगो ही वेडो लगाव है
ये सरीर में सै सै पीछै तो आवै अर पैल्या जावै
आको विलकुल गाडी हाळो सो हिसाव है ।'

दोस्त बीच मे ही टोक्यो आको तो माथो
मैं भट रोक्यो—हा हा इब तो काम करै है ।
ठैर बीच मे मतना वोलै
मन्नै सारी बात पूछ लेवण दे पैल्याँ
'क्यूँजी थे ये जो किताव पढर्या हो
आमे इबकाळ अदला-बदली होगी दीखै है बोळी
इब तो कुछ सस्ती होगी ना वई दवाया हाळी गोळी
भाव दवाया का आमें तो वै ही होगा भोत पुराणा

'क्यूँजी 'सारिडोन' हाळा को केस सलटगो दीखै
ले-देकै मामलो किहया भी पटगो दीखै ।
गोळ्या पैं कागद तो देखो म्हाटो किसो चिलकतो आवै
पण म्हाटा गोळी भीतर मैं कियाँ व्हैंचावै ।
सभी दवाया बण इंडिया मे ही है या
सै अमरीका सै ही आवै ?''

एक बात बस और बताद्यो
वैयां तो यो पेट सभी नै ही दिन घालै
पीछै भी मन्नै तो ज्यादा ही प्यारै है
सज्या रोटी खाता ही मेरै ई पै आफरो हुयावै
अर ढकार पै ढकार आवै
कई बार तो सूत्योड़ा टाबरिया भी बैठ्या हो ज्यावै !
कोइ जळ जीरै का इ जेवड़ान चाल्या है के थारी निगाह मैं
हिंगास्टक या लवण भास्कर का
कोई कैपसूल आया है के थारी निगाह मे
कोई नमूनै का ही आयोड़ा हो तो थे मन्नै देद्यो
'क्यूँजी गोडा कै दरद मे दवा के लेणी चाये
म्हारै तो घर सें उठ्यो ही कोनी जावै !''
ऐंया मेरे इतणें इतणें
प्रश्ना कै उत्तर में छोरो उठकै बोल्यो—
'थे मन्नै देखण आया हो
थे तो मन्न देख्यो है या नी देख्यो है वेरो कोनी
पण मैं थानै देख चुक्यो हूँ
मेरै भी एक ऐंया की ही गैली विधवा भूवाजी है
मैं सोचूं हूं मैं बीन थासैं परणाद्यूं
पाच मिट थे रुको अठे हो
मैं रिपियो-नाळेर लेर पाछो आर्यो हूँ !'

१८-६-७०

अभिनदन-याहियाँ खाँ नै

हे याहिया जी !
दुनिया मे अव्वल दर्जे का हे वेहयाजी !
लाख लाख वेईमानां का वेईमान मक्कार र पाजी
ताज्जुब थारी तीरदाजी
थे जुवान चौबीस बरस कै पाक वतन नै
बठा दियो पाणी कै पीदै बस खाली चौदा दिन मे ही !
कोई बात नही अजी वतन तो इयाँ ही डूबता-तिरता रै है
पण याहिया जी
एक छीक कै झटकै से ही ले डूब्या पनडुब्बी गाजी
और दूसरै ही भटकै मे, गळती से खुद कै दाता मे
थारी ही आगळी दबा बैठी इन्द्राजी
और तीसरै ही भटकै मे कर्‌यो सरेण्डर
फट फट फट फरमान नियाजी
ताज्जुब थारी तीरदाजी, वाह वाहवाहजी, हे याहिया जी !

अहो लपक झुन्नू !
थारी पोलिसी नै कोई जाण सक्यो नी
आप राजगद्दी रूपी थारी वेटी नै व्यावण खातर
पैल्या तो देखो चुनाव को फिडको ल्याया

परण जद देखी ओहो, ये तो दो-दो बीद त्यार हो आधा
इबके होसी ? सोच समझके थे भी माथो खूब लडायो
एक बीद नें पकड कैद कर थे रावळपिंडी ठाल्याया
अर बरात ढाका छोडयाया !
कतली आम खुवाणें कै बदलै थे कतले-आम मचायो
भारत कानी आदो पाकिस्तान भगाय।
थे भी स्याणा सोता होकै–
क्यूं भाठा की दीवारा सें सिर टकरायो
निधडक होकै मूंड फुडायो !

हे कुकडू कूं !
एक रात थे जोर जोर सें बाग मार कै
तडकाऊ कै पैल्या ही थे जगा दिया दुनिया का मुर्गा
और बठी नें कान वोचकै बठा दिया सें
चीन और अमरीकी मुर्गा
चोखो मौको देख लपक कै
थे निक्शन का पग पकड्या
अर तुरत धरम को बाप बणायो
और चीन कै चाऊ माऊ नें ताऊ कहकर बतळायो
बाप और ताऊ मे थे ही मेळ करायो
बै दोन्यू भाई मिलकर कै थारी पीठ थपथपाई
अर दोन्यू बोल्या-'तू चढज्या बेटा सूळी पै
अल्ला तेरी खैर करेगो !''

हे धमचक घू !
चाणचक ही थे भारत पै हमलो बोल्यो—
और लडाई को पूरो दरवाजो खोल्यो
भारत के कानी थे सैबर च्यार उडाया
बामे खाली तीन तुडाया, एक बचा पाछोही लिआया
बाके नैटा सैं थे जद जद जट भिडाया
कोई भी पाछा नी आया
सगळै का सगळा थे जन्नत में भिजवाया
बाका तो रणडका बाज्या, अर थारा रणडकी भाज्या
अजि, टैंक टाक कितणा ही टूटो, आंमें तो आपणू गयो के
बै तो सगळा माग मागके आप पराया ही तुडवाया
घर का तो बस हाड हाड ही फुडवाया
थारी करतूता जल्लादी
घटा सकी है आज वतन की लाखा लाखा की आबादी
आबादी नही घटी, वतन की छंटगी बादी !
हार्या पण एकला नही माटी छितवाई
थारै ताऊ माऊ की भी मूंछ मुंडाई
निक्शन की भी नाक कटाई !
एक वार तो खड्यो करायो नयो बखेडो
चलवा दियो सातवूं बेडो
पण बेडो ही तो थो बस मंझधार डूबगो
पार नही कर पायो खाडी
जी पैल्या ही फौज आपणी जगा जगा पै गई पछाडी

च्यारू कूँटां में शोर भयो, जैसोर गयो जैसोर गयो
बैं भाग पड्या बैं नहीं लड्या, बैं नहीं लड्या सो नहीं लड्या
पण जाता रोटी तो खाज्याता
साग'र फलका त्यार पड्या
ऐंया को युध तो हुयो नयो
जो अपणूँ गढ समज्यो जातो बो बिना लडे ही आज ढयो !
जैसोर गयो जैसोर गयो !"

रै बळ उठ्यो चिटगांव गजब की आगी लागी रे
प्राण बँचावण फौजा कानी कानी भागी रे
"रै खुलना नैं तो छोड बाळ तू
जाकै ढाका नैं सँभाळ तू"
"रै च्यारु कानी भारत की इब फौज धड़की
मेरै सैं नहिं सँभळैगा ये ढाका ढूकी !"
"नहिं सँभळै तो सुण,
सब हथियार आपणा बाँकै आगै धरद्यो
लगे हाथ मानिकशा नैं ही 'ओबलाइज' करद्यो
ऐंया का जद समचार आरया था तो बेडो के करतो
पाछो हि फिरगो सरमा मरतो

हे लपडक लू !
भारत हाळा तो बिलकुल ही झूठा निकळ्या
बैं तो कहर्‌या था ना साँची
बाळ दियो है सगळो बंदरगाह करांची

पण आपा तो जाणा ही हा कन्वा तो आग
लगाई थी आपा-खुद ही आपणें हाथ से
वा फौजी भायां नें च्यानणू दिखाण नें
जो अधारै मे भटकै था
एक बात और भी तो थी
लड़र्या था ठंडे प्हाडा मे जो-जो फौजी जोरा मरदी
मरर्या था विच्यापड़ा सर्दी
अगर आग बा नही लगाता तो बै क्यासै हाथ तपाता ?

अहो उडंकचुल्लू !
थारी हिम्मत की जितणी तारीफ करीजा उतणी थोडी !
सोवयूं चल्यो गयो पण थे हिम्मत नही छोडी
दो बोतल ठर्रो पीकर कै
पकड रेडियो को माइक ओज्यूं बुमकार्या
म्हे नहिं हार्या म्हें नहिं हार्या
एक बार तो म्हे भी सोची तो कुण हार्या ? खैर,
इब भुट्टो को झाँपट खाकै-थे जार्या सोव्यूं जार्यो है
म्हारो सारो वतन लैर थारै आर्यो है
बस खाली यूं रोतो रोतो पूछ रह्यो है क
"कैद कर्यो जाय या मार दियो जाय
बोल तेरै साथ के सलूक कर्यो जाय !"

६-१-७२

या के होगी

क्यूं भाईजी, थे भी कोई बात सुणी के ?
सुणी है क रेडियो बोलगो, और लडाई बंद होयगी ।
हे मेरा पिरभूजी देखो, चाणचकै ही यो के होगो ?
वाहरे वाह् ओ इन्द्रा बाई, तेरै या के मन मे आई ?
बारा छै म्हीना ताणी भी कोनी खीची गई लडाई
वाहरै वाह ओ इन्द्रा बाई ! तेरै या के मन मे आई ?

जगजीवणजी कहर्या था क
इबकै जुद्ध पराई भोमी पर होवैगो
बो तो सा वैया को वैया ही होर्यो थो
दुश्मन दिन पर दिन खुदकै बळ नै खोर्यो थो
बीको माथो भण्णार्यो थो
हाथ पाव धूजे लागा, चक्कर खारयो थो
आगै होकै खुद माणेकशा ललकार्यो थो
पीछै इन्द्राबाई नै के जोर आर्यो थो ?
मैं तो सोचै थो कम से कम बारा म्हीना जुद्ध चालसी
याहि सोचकै, जुद्ध सुरू होता ही मैं भी औरा की ज्यू
कुछ अटरम-पटरम चीजा लेवर दाबी थी
टार्च, बेटरी कै गट्टा की बीस पेटिया

मैं भीतरलै कमरै कै मा रखवादी थी
ग्रौर मोमबत्ती कै छोटै बडै पुडाँ की
च्यार ढाग मैं चिरावादी थी ।
ग्राखै भारत मे जद ब्लैक ग्राउट होर्‌यो थो
जद भी मेरो घर तो गट्टा कै करैंट सै परकासै थो
दुनियाँ रोरी थी ग्रौर मैं मन मे हासै थो
'वाहरे वाह ग्रो घोर ग्रँधेरा, ग्राछ्‌या भाग जगाया मेरा
ब्लक ग्राउट मे ब्लक मारकेट—
ब्लैक मारकेट मे ब्लैक ग्राउट
दोन्यू सागे भाई है ग्रोडला-जोडला
ब्लैक ग्राउट मे ग्रगर चाद भी दिखज्यातो तो
बो वियोगरणी नाईका की ज्यू तडफातो
मैं तो बीनै गाळ काडतो, हटज्या पाजी चाद भागज्या
तेरी किरणा नै धरती पै मत ग्रावरण दे
ग्रधकार न ग्रधकार ही फैलावरण दे
घोर ग्रँधेरै मे घर घर मे तू चोरा नै बडज्यावरण दे
जदी लोग गट्टा'र मोमबत्ती लेवरण भाज्या ग्रावैगा
ग्रर "कोनी कोनी भाया !
सुरगकै भी वै दाम चौगरणा देज्यावैगा ।

परण देखो के पासो पलट्यो
लडती भिडती फौजा देखो क्या मे ग्रडगी

वणती–वणती देखो कैंया बात विगडगी
चौदा दिन में ही देखो के पटको पडगो

ऐंया मैं विलाप करर्यो थो, तो छोरो आकर कै बोल्यो–
"बापूजी-नास्तो करल्यो" मैं बोल्यो-बोली तो सीखो
नास्तो नास्तो करता साळो मरयानास तो करादियो थो
इबी नास्तो बाकी है के ?
पिंगळ पिंगळ कै मोमबत्तिया चपडी होगी
चिपक चिपक नीचै मैं सगळा गट्टा पाणी छोड चुक्या हैं
बेरो भी है थाने के घाटो लाग्यो है ?"
सुणता ही बाचग सो छोरो
दिनगे को अखबार ल्यार छाती पै पटक्यो
बापूजी-थे तो थारै गट्टा कै घाटै नै रोर्या हो
और बठीनै बारा सौ जुवान मरगा खाली भारत का
चौदा दिन मे !"
मै बोल्यो-रै मरगा होसी, बै तो सा नौकरी करै था !
ब तो बारा सौ ही के बारा हज्जार भी—
मरज्याता तो के होज्यातो ?
पण मैं देखो बैठ्यो बैठ्यो कैंया मरगो
घरका नै तो देख बावळा
देस-भगत को बच्चो बणर्यो है भूठ्याणी !

मैं छोरै नै धमकार्यो थो
इतणै मे ही एक जणू मेरी दुकान कै आगै मैं होकर कै निकळ्यो

मैं बतळायो- क्यू भाया गट्टा चाये के ?
में तो वीने प्रेम-भाव से बतळायो थो
पण वो तो सुणता ही सीधो सिर नें ग्रायो
"काल्ह पूछगो थो जद क्या मे बळ्या पड्या था"

देखी ना थे, ग्राज भलै का भखत नहीं है
जी से मैं तो यू सोचू हूँ–
देस छोडकै ग्रोर कठे परदेसा जाल्यूँ
ई दुकान नैं वेगो ठाल्यूँ
ग्रोर जठे भी जा जा देसा मे दिन मे भी ग्रधेरो है
बठे जार ग्रा गट्टा की दूकान लगाल्यूँ ।

३०-४-७२



कविता को मोल

वी की हर कविता गम की है
कीमत मे दो पीसा सूँ भी कम की है
बैयाँ पाठका का ग्रासू हर कविता पैं पडै
ग्रोर हर कविता पैं बांको ध्यान टिकै
पण ग्रस्सी ग्रस्सी कवितावाँ का सग्रै
खाली डेड-डेड रुपियै मे बिकै !

१२-६-७१

समझौतो

सुणे है क नी ?
बड़े बड़े देसा का राष्ट्रा का भी समझौता होर्‌या है
वें भी आज छोड आपस की हाथापाई
सदा-सदा खातर स्यांती पूवक रहणे की बात चलाई
अर तू है जो ई छोटे सै घर कै माँ भी
बिना बात की बात-बात मे अडती जारी
मूँडो सुजा अकडती जारी
मैं जितणू गम खार्‌यो उतणी चडती जारी
मेरे सिर पै चडती जारी !

ई मे भी अचरज तो यो है (क)
तू औरत होकर के भुट्टो की जेंया हेकडी दिखावै
मैं होकर कै मरद इ दिरा गाधी की ज्यूं हँस हँस टाळूँ
मैं चावूँ तो तनैएकचुटकी मे होई धरती सैसोकोस उछाळूँ
पण मैं चावूँ समझौतो होज्या

तो करो फैसलो, बैठ स्यामनै
मैं मानूँ हूँ, माचो तो तू तेरै पीहर सै ल्याई थी

पण गिदरै मे रूई तो मैं भरवाई थी
माचो तेरो, गिदरो म्हारो
म्हे म्हारो वच पै बिछाकै सोज्यावांगा

चाल दूसरै मुद्दै पै इब
बैयां मैं घरकै खरचै मे हस्तक्षेप करू ही कोनी
बो तेरो आंतरिक मामलो है बिलकुल ही
पण मैं इतणी तो चावूं गा क
जद जद भी तू कोई बरत को मिस ले लेकै
देसी घी को सीरो कर करकै खावैगी
जणा तेल का गुलगुलिया मैं भी खावूंगा
जद जद भी तू च्यार साडिया लेगी—जद जद
मैं भी कम सें कम बनियान नई ल्याऊ गा !
जद जद भी तेरी महेलिया कै मागै तू
सरकस याकि सिनमा देखण नै जावैगी
टाबरिया नै नही राखू गा
मैं भी मेरो रामलीला देखण जाऊ गा !"

"देखोजी एक आपत्ती है
घर कै खरचै मे तो होड होगी नी चाये
अगर होड होवै तो, ई मुद्दै की धारा दो मैं लिखल्यो—
पांन बीडियां मे यूं थे भी खरच फालतू नही करोला
और नही तो दिनभर मे थे जितणी बीडी पीज्यावोगा
मैं उतणी ही पीज्यावूंगी—कोका कोला !

रही बात टाबरियाँ नैं घर मे खिलाण की
ई पै मेरी सहेलियाँ स सला मिशविरा करकै कू गी
यो मुद्दो सज्या हाळी मीटिंग मे राखो
क्यूं, टाबर चाये मेरा ही हो पण दोन्या ही का बाजै है !
ऐयाँ यो मामलो जरा 'कम्प्लीकेटेड' है ।

श्रौर दूसरी मीटिंग मे तो सब बातां क्लीयर होगी थी
कमरो बीकै ग्रर बगमदो मेरै हिस्सै मे ग्रागो थो
मगर रात नैं ही मे बरस्यो बादळ गरज्या,
बिजळी कडकी तो बा टरगो
कमरै का कीवाड खोलकै ग्रोज्यू सीमोल्लघन करगी !

१५-८-७२



चौवेजी

कुछ मूरख हेक्ड
ग्रकड ग्रकडकै ग्रापहाळां सैं ही लड्या
एक ही झटकै मे भूलगा चौकडी
निमाज छोडण जार्‌या था
रोजा ग्रौर गळै पड्या ।
१६-१२-७१

बेनजीर

बेनजीर मय सिनला जानी
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी

बेनजीर सिमला मे इन्द्रा बेनजीर थी आगै
बेनजीर को बाप लियायो बेनजीर नै सागै
बेनजीर नेना भेळा होगा था दोयूँ कानी
बेनजीर हिंदुस्तानी, बेनजीर पाकिस्तानी
बेनजीर खाणे मे होती बेनजीर ही बाता
बेनजीर ही दिन कटर्‌या था बेनजीर ही राता

बेनजीर घूमण को कोई भी प्रोग्राम बणाती
बेनजीर ही भीड भाजकै रस्तै मे घिरज्याती
बेनजीर ही प्रश्न पूछता बेनजीर ही उत्तर
बेनजीर की फोटू लेगा, बूडा फोटूग्राफर
बेनजीर को बाप पान भी बेनजीर ही खाया
बेनजीर नै पाच सिनेमा बेनजीर दिखवाया

बेनजीर पौशाक पैर कै, बेनजीर थी डोली
बेनजीर की इमरत नी थी बेनजीर थी बोली

वेनजीर की सोव्या सवनें वेनजीर जद दीखी
भट ग्राइ एस जौहर फिल्ममे आगे सातर लीखी
या भी दियो जुगाड, क तू पापा नें कोनी जाणें
वेनज़ीर याने भी सगळी दुनिया आज वखाणें

इयाँ पाँच दिन तक सिमलै की वेनजीर सडका पै
के बूडा पै, के वाळक, अर के लडकी-लडका पै !
रग एक ही वेनजीर को आर्या पै छार्यो थो
सोक्यूँ निजरा वेनजीर ही वेनजीर आर्यो थो
वेनज़ीर माथै में बडकै माथो करगी थोथो
जद सिमलै मे वेनजीर समभौतो क्यू नी होतो !

२५-८-७२



विरोध–पत्र

दुश्मन ओज्यूँ आपणी सीमावाँ को
उल्लघन कर्यो है, (वो इब भी नी डर्यो है)
मोटै कागद पर लिख्योडो
आपणूँ विरोध पत्र नहिं मान्यो !
अबकी बार ओर घणा कल्डा दिखो
एक ओर 'कल्डो' विरोध-पत्र इबकै गर्त पै लिखो !

३-६-७१

चेतावणी

लिछमी चाची, कर मन चाई ।
लाज छोड लपट पाडोसी, रोपी ग्राज लडाई ।
भूमभूम डालर कै मद मे घाल्यो चावै घाई ।
ले तेरे वाहन का पट्टा, अरणदक करी चढाई ।
सब अपरणेस भुला, भाया पै छळ सें छुरी चलाई ।
जोरा-तोरा दिखा सूरडा सूती गाय सताई ।
लाज गँवाई, कुवद कमाई, खुद की नाक कटाई ।
गरब नसै मे भूम सकैगा कद तारणी अन्याई ।
तू भी साथ सदा नी देगी, बानै दे समभाई ।
इब भी समभादे बानै, जे चावै राड मिटाई ।
ओर नही तो जन-मन-बळ ही मेटैगो अकडाई ।

दीपावळी १९७१

लिछमी चाची--

कई दिना सैं देखर्यो हूँ
त मेरै घर मे श्राणूँ तो चावै
पण झांक झांक कै छिपलो खावै
तेरो वाहन मेरै घर को नाम सुणता ही
चिमकै, उछळै, थोवडो सुजावै
श्रीर पगा पगा श्राणैं मे तनै लाज श्रावै
चाची तू भी के वाहन पकड्यो
जठे त, जाणूँ चाव, बठे नी ले ज्यावै
श्राप को ही मन मरजी चलावै
चाची, सवारी बदल ले
म्नै हुकम होवै
तो तेरो सारो बाडो
हसा ही हसा सैं भरद्यूँ
उल्लुवा की 'मोनोपोली' खतम करद्यूँ।

५-११-७२

उल्लुवो, सावदान

एक थो उल्लू,
उल्लू भी उडकचुल्लू
आपकै कुछ पट्ठा नें सागै लेकै
आगै होकै हमा सें रोपली राड
थोडा ही दिना मे खागो खुद पछाड !
दूसरो उल्लू बोल्यो—
तू उल्लू नही उल्लू को पट्ठो थो
मैं हूँ उल्लू को बाप,
सब कुछ सलट ल्यू गा अपणे आप"
आ उल्लुवा नें आज ताणी भी वेरो नी है क
हमा की सकती विद्या और बुद्धी है,
चित्त की सुद्धी हे !
या ही बुद्धी, सुद्धी उल्लुवा कै छळ, कपट, पाप
और अहकार नें धोनी जारी है
जी मालकिन पै उल्लू गरब करै है वा मालकिन
लक्ष्मी यानी इन्दिरा भी गरीब हसाँ की होती जारी है ।
नादान उल्लुवो ! सावधान !

५-११-७२

जिन्दगी की किताव

जिन्दगी की किताव कोरी है
च्यारुँ कानी हराम खोरी है

मेरा सब रूप-रंग विगड गया
बावळी क्याँ पँ मोदी होरी है

आज मौसम भी कोई खास नहीं
बाँह मेरी कियाँ मरोरी है

वापडो के तो ऐश-मौज करै
व्यावणी तीन-तीन छोरी है

छोडियो छोरो दो वरस को ही हुयो
देर चोखी है जो भी होरी है

माजणा तो इवी कामण ही पड्या
पूर पैल्या ही कैयाँ घोरी है

एक कूणै में बैठ्या ईसरजी
राज घर को चलारी गोरी है

भोर होता ही देस मो सोगो
जागरण गीत है कि लोरी है

⊙

गरीब्र श्रौर गरीबी

छन्नू की चाची सैं बोली धन्नू को बीबी
भन्नू कै तो घरां श्रागी खुशनसीबी
गरीब भन्नू मरगो
बीकी तो श्रापसै श्राप ही मिटगी गरीबी
छन्नू की चाची बोली–
ना-ना भए, या बात नही है
गरीब कै मरएं से गरीबी नही मरैगी
बा तो श्रापकं बेटां कै सागै ब्या करैगी !
५-२-७२



एक खिलाडी

श्रोलपिक मे एक खिलाडी
जूत मे मेडिल बांधकै सबनै दिखायो
श्रौर साफ साफ इयां समझायो—
म्हे खाली मेडिल ही नही ले ज्यावागा
जूता भी खावागा !
५-१०-७२

अफसरी

एक अफसर नै चाचै की मौत को समचार मिल्यो
वी को काळजो हाल्यो
रोतो रोतो वो समसान घाट तानी चाल्यो
पण पाछो आती वखत
एक टैक्सी लियायो
और टी ए और डी ए को बिल
आपकै चाचै कै बेटै नै दियायो !
५-१२-७२



गरजन-तरजन

रै बादळ ! तेरो गाजणूं चोखो लागै
तेरै डील नै चीरती—
सूरज की किरणा नै बरजणूं चोखो लागै
पण कान मे सुण, हियै मे गुण
इतणी बिजळी मना चिमका
तेरै घर को अँधारो मना दिखा !
१०-१२-७१

तडकाऊ की कविता

मैं तडकाऊ की कविता—
लिखरणनै गयो छात पर
स्यामनै सडक पै चुप हूँठ बिजळी को खभो
बीकै कन्नै ही दुरयारो एक बकरी को बचियो
रात कै मूंडै मे उडकै श्रायोडी छान
तीन्यूं उदास, निरास, हतास
कर दियो ना साळा
कविता को सत्यानास !



बोर-बोर

भीत देर ताणी कृषी-मन्त्रीजी को भासरण सुणता सुणता
लोग रोळा करणा सुरू कर्‌या-"बोर-बोर"
मन्त्रीजी सभी नै तसल्ली देता हुया बोल्या-
इतणां कुवा कै खातर एक साथ कर्ज नी दियो जा सकै
बारी बारी सैं प्रार्थना-पत्र देवो
नबर नबर सैं सब कुवां नैं 'बोर' कराद्यंगा !
२५-१०-७१

मँगाई अर बेईमानी

साच्याणी वढी तो है मँगाई अर बेईमानी
जद सूँ वीकैं दूसरी लुगाई आई है
पैली का ल्होडिया टाबरिया
बाप कै सिर का धोळा वाळ पाडणै को रेट
रिपियँ सैकडँ सूँ तीन रिपिया सैकडा कर दियो
ई पर भी तुर्रो यो क माईमा भिणभिणै
और एक झँपकी आता ही
नालायक निवासी कै वाद सीदा सौ गिरै !

२-६-७१

हाकी सघ

हाकी को तो म्हे एक अलग सघ वणावागा
कोई ईमे सामल होवैं तो होवैं
नी होवैं तो आपकी रादा नै याद करो
म्हे ही "अनकटैस्टेड" फस्ट आवागा !

६-१०-७२

मै नागपुर तो

मैं नागपुर तो न आ सकूं गो प्रिये तू मिलिये इटारसी में
मना टाळिये तू बात मेरी इया ही कोरी हँसी हँसी में

बिया तो तन्नै सदा सैं चोखी हो लागै सलवार और कुडती
मगर आज तो तू मन्नै मिलिये गुलाबी साडी बनारसी में

तू थोडी ज्यादा सिँगरकै आये बठै मनैं कोई यूँ न कहदे
यो भोदूँडो भी के बात देखो इयाँ की ई ऊत की घसी में

बठै मै भूखो ही रह न ज्यावूँ बणा कै ल्याये पुडी'र सबजी
मनैं न हलवो पुलाव चाये मैं काम काढू गा लापसी में

पद्रा मिनट तक ठहरैंगी गाडी इती देर ताणी तो हँसागा
छुटै जो गाडी तू मन्नै रोये मैं तन्नै रोवू गा वापसी में

★

परदेसा मै बालम आया

परदेसा सें बालम आया तो
हरखी हरखी उमँगी उमँगी
बलमी सौ सिणगार करै !

भागी भागी बाथरूम मे जावै
पाटै पै बैठकै न्हाणू चावै
पण नळ मे पाणी नी आवै
मारुजी बैठ्या सुँवार करै !

साडी बदली मूँडो धोयो
तावळ करतो भान बिगोयो
होठा की लाली आख्या में घाली
काजळ होठा पै भार करै !

तन की ताप हियै मे लागी—
भागी भागी मारुजी की सेजा पै आगी
चाणचकै ही छोरी जागी
प्यार करै कि दुलार करै !

इसाफ

एक जणू आत्म हत्या करणे की कोशिश करी
कितणू थो नादान
पुलिस वीनें पकड के कर दियो चालान
न्यायाधीश (हाकिम)
सब बाता सुणी, गवाही ली
फैसलो सुणाती दफा पैल्यां तो आई हांसी
पीछै आई खांसी
और आत्महत्या करणे के अभियोग में
अभियुक्त नें देदी फासी !

१५-११-७२



जॉच

खेला की प्रतिष्ठा पै आ न ज्यावै आंच
ई खातर ही झूंठ या सांच
करवाणी तो चाये हार के करणां की जांच !



सी आइ ए

आज चाणचक मेरै दैणं गोडै मे झटको सो आयो !
के कारण है ?'
वाइफ बोली-और आज ही टाबरियो आधी छुट्टी मे
इस्कूल से घरां भाग्यायो !
दोन्यू बाता आज चाणचक हुई साथ है
मन्नै लागै दोन्यूं घटनावां के पीछै
बस C I A को हाथ है !
१६-११-७२



साहित्यकार

सिर पै साहित्य को लबादो
पगा तळै कार
वाह यार
तन्नै कुण कह्‌र्‌यो है वेकार
तू सासार, सकार
साहित्य+कार !
८-२-७२

रै मन्नै लाठी पकडावो

रै मन्नै लाठी पकडावो !

देख हाथ में लाठी वैरी के बोलैगो ?
के तो मैं खप्पर खोलूं, के बो खोलैगो
सूनं हाथा मना भिडावो
रै मन्नै लाठी पकडावो

अगर स्यामलो बोलै नी, तो जाड काडल्यूं
पाछो हाथ उठावै नी, तो मूछ पाडल्यू
रै बीनं बांधकं लियावो
अर मन्नै लाठी पकडावो

खून वरसर्यो आख्या सं कुछ नही सूजर्यो
डरतं को नी, ई किरोध सं डील धूजर्यो
यो किरोद कुछ और दिखावो
रं मन्नै लाठी पकडावो

इवकालँ तो वो मरगो रे

इव काळैं तो वो मरगो रे
मरतो मरतो भी दस-बारा विधवा करगो रे।

घर हाळी मररी सो मररी
अस्पताळ की नरस सुबकरी
इ जैक्सन कै बिल पैं जाळी दसकत करगो रे।

बैंयाँ तो सागै के लेगो
सोन्यूँ आइ टी ओ नैं देगो
लाखा की बैलेंस बैंक को भी 'निल' करगो रे।

धरती तो रोवै सो रोवै
सागर रोवैं, अवर रोवैं
हुना कई गाया नैं वो वैतरणी तरगो रे।

पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

ओ पियाजी मन्नै थारी याद सतावै।
बारा घटा में वेसी अब मन्नै नींद न आवै।
पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

होटल में जिन कै गिलास में बो आँणद नही आवै
आमलेट कटलेट प्लेट मे सिगरेट भी सुलगावै
पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

न तो बिरज मे मन लागै ना रम्मी मनै लुभावै
सिरफ तीन पत्ती हाळो ही थारो खेल रमावै
पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

क्रीम लिपस्टिक पोडर लोसन ज्यादा नही सुहावै
घूमण नै निकळूँ तो ड्राइवर मुड मुड आख मिलावै
पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

इबतो आज्या परदेसी

इबतो आज्या परदेसी पावरणा

घर में थारै विन पियाजो, च्यारू कानी सून
कुण गिरवावै वाजरो जी, कुण पिसवावै चून—
पड्यो चाकी पै पीपो—
इबतो आज्या परदेसी

जिवा जूँ ए से जी पिया मेरो आकर पिंड छुटाय
दिन में खावै जूँ मन कोई रात्यूँ खटमल खाय
खाट कुँण देवै तावड़—
इबतो आज्या परदेसी

एक नपूतो पड गयो जी कोई, आज पियाजी गैल
पण वो पाछो ही मुड्यो जी देख डील पै मैल
बाँस से नाक चढाई
इब तो आज्या परदेसी

हितोपदेश

रै नर विरथा जनम गँवायो
पळ पळ छिरण छिरण उमर बीतरी कदै न पाप कमायो
कदै न चोरी–डाकै कै मा तन्नै पुलिस सतायो
हत्या लूट–खसोट गिरहकट तू सोक्यूँ बिसरायो
कदै नहीं हाजरी देरानै तूँ थाणं मे धायो
तिक्डम झूँठ फरेब छोड तू सत नै गळै लगायो
रै धरमी, करमी ! के करबा तू ई जग मे आयो

रै नर तूँ पच–पच मरज्यासी
एक नेक 'ब्लैक' की न्याव है बाही आडी आसी
रिस्वत की पतवार बाँधले भव-सागर तिरज्यासी
सगळा अफसर खेवटिया है तन्नै पार पूँचासी
और नही तो जारण बूझकै तू दुरगती करासी
विना घूँस कै कोई साथी-सगी काम न आसी
सारा धधा छोड घूँस नै तू कद गळै लगासी

झूंठ झूंठ की लूट है, लूट सकै तो लूट
ग्रोर नही तो सांच सें करम जायगा फूट

करो कमाई ब्लैक की ब्लैक बडो बलवान
दम की लोट दिखावता जम खुद पकड़ै कान

दगाबाज, मक्कार ग्रर तू बरण तिकड़म बाज
नी तो जम-दरबार मे बियां राखसी लाज

चोरी मे गुरण भोत है—या टाकै की भाए
माल परायो झापकै तू सो खूंटी ताए



रोजगारी या रेजगारी

दफ्तर कै बारएं भोत सारी भीड देखकै
एक मत्रालय को प्रवक्ता बोल्यो—
ये सब ग्रठे ही क्यूं रोर्‌या हो ?
सब एक ही एक जगा क्यूं भेळा होर्‌या हो ?
जो रोजगारो चावै वै ग्रठे रह्वै
ग्रर जो रेजगारी चावै वै ग्रागलै दफ्तर मे जावै
'तो के भीड ग्रादी ग्रादी बंटगी ?'
'नही वठे सें सारी हो भीड छंटगी !'
११-६-७१

चुनाव—मुक्तक

"फाडा झाडा कर हि दिया ना आखिर तिरिया हठ पै आकै
ठावा-पटकी कर ही दी ना बस आप्हाळा नै छिटकाकै"
"थे बीको ही दोस देखर्‌या कुछ तो दोस बतावो बामे
जो बीनै बदनामी ध्याई, फोरेन मे, सग्गै-सोया मे"

राष्ट्रपती कै ई चुनाव मे कुण के बोल्यो–
निर्जलिगप्पा बोल्यो—रैंडो रैंडो रैंडो
गिरि बोल्यो–क्यू ,गिरी गिरी के प्यारी बेटी
इन्द्रा बोली—नहीं इवी उठरी हूं डैंडो

"क्यूँजी सुणनै मे आई थी ई चुनाव मे
पन्द्रा सोळा खड्‌या हुया के सबो गुणी है"
"भई गुणी और निगुणी अगुणी की बात नहीं है
सब आपापकी आत्मा की आवाज सुणी है

जिया दादरा ठुमरी टप्पा
मोहिन जोदडो और ह्डप्पा
बैया हीं मन्नै दिखर्‌या है
देसाई, पाटिल, लिगप्पा

●

दो खबरदार कवितावाँ

(१)

ई काळै कानून को जावै सत्यानास
मना कर दियो खेलणू इब दफ्तर मे तास
इब दफ्तर मे तास टेम कैयाँ काटैंगा
झूठमूठ ही अफसर अक्सर सिर चाटैंगा
कोई बात नही है म्हे भी रुचि बदलागा
तास मना है तो इबसै चौपड खेलागा

(२)

एक रुप्यै मे बिक रह्या छप्या लिफाफा पांच
और अब छप्यै की हुई कीमत रुपिया पांच
कीमत रिपिया पांच, अरै पच्चीस गुणी है
टैक्साँ सै जनता पैल्या ही जळी-भुणी है
क्यूँ न केन्द्र-सरकार मुनाफो घणूँ कमावै
छप्या लिफाफा छोड, अब छप्या क्यूँ न छपावै

११-६-७१